रहस्य

Kailash Trail

पुस्तक एक

Bharat Bhushan

रहस्य

Kailash Trail

पुस्तक एक

Bharat Bhushan

प्रकाशन से पूर्व का मसौदा पांडुलिपि
यह कोई प्रकाशन नहीं है

इस मसौदे की प्रति आमंत्रित लोगों को वितरित की जा रही है।
टिप्पणियां और सुझाव

बिक्री या वितरण के लिए नहीं।

मार्गदर्शन के लिए अपलोड या वितरित किया जा रहा है और
कहानी के विकास में सुझाव
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशकों की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे इलेक्ट्रॉनिक हो या यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना संग्रहण एवं पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा पुनरुत्पादित या उपयोग नहीं किया जा सकता है।
यह कोई प्रकाशित सामग्री नहीं है। यह प्रस्तावित पुस्तक की प्रकाशन-पूर्व पांडुलिपि है, जिसे संपादन, टिप्पणियों, आलोचनाओं और सुझावों के लिए वितरित किया जा रहा है। इसका वितरण विशेषज्ञों, संसाधन व्यक्तियों, तिब्बत के कैलाश क्षेत्र से परिचित व्यक्तियों, विभिन्न धर्मों में तीर्थयात्रा के पहलुओं से अवगत लोगों और कहानी के विकास के पहलुओं में रुचि रखने वालों के एक सीमित समूह के लिए किया जा रहा है।
जिन लोगों को यह प्रकाशन-पूर्व मसौदा पांडुलिपि प्राप्त होती है, वे इसे उन लोगों को अग्रेषित कर सकते हैं जो कहानी के संपादन और विकास में योगदान दे सकते हैं। इसमें कई त्रुटियाँ, गलतियाँ और संदर्भ संबंधी त्रुटियाँ होंगी। कृपया इन्हें इंगित करने में संकोच न करें और लेखक को bharatbhushan@yahoo.com पर सूचित करें।
किताब के बारे में

पूर्वी जगत का सबसे पुराना रहस्य। कहा जाता है कि कैलाश पर्वत पर चढ़ने का साहस कोई नहीं करता। और यह भी कहा जाता है कि जो लोग पर्वत पर चढ़े, वे कभी वापस नहीं लौटे। इन सभी सदियों में, वे अंतर्मन में विलीन हो गए, और कभी वापस नहीं लौटे।

लेखक के बारे में

Bharat Bhushan
पर्यावरण वैज्ञानिक, पक्षी विज्ञानी, पक्षी प्रेमी।
पक्षी प्रेमी, शिक्षक, प्रशिक्षक। बहुमुखी प्रतिभा के धनी।
संयोगवश मिला घुमंतू यात्री। ज़मीन पर, के माध्यम से
किताबों में, इंटरनेट के अंदर और मन की गहराई में।

मैं

रमेश कुलकर्णी अपने बेटे विजय के प्रति हमेशा धैर्यवान थे। उन्हें पता था कि उनका बेटा कभी उनकी सलाह नहीं सुनेगा। आखिर, उनके साहसी, पर्वतारोही, रॉक क्लाइम्बिंग के शौकीन और हिमालयी रोमांच के दीवाने बेटे के लिए रमेश हमेशा एक मध्यमवर्गीय, पुराने शहर के सेवानिवृत्त व्यक्ति ही रहेंगे, जो सेना में सक्रिय सेवा के बाद लौटकर अपने पैतृक घर पुणे में बस गए थे। "मेरे लिए पुणे हमेशा रहेगा," रमेश ने मन ही मन सोचा।

रमेश ने आदत के मुताबिक कर्कश आवाज में फोन पर चिल्लाते हुए कहा, "विजय, सावधान रहना। डीडी न्यूज टीवी चैनल कह रहा है कि कश्मीर और नेपाल में मौसम खराब हो रहा है। क्या तुम्हें कल ट्रेक पर जाना ही है? क्या तुम इसे टाल नहीं सकते?"

विजय फोन पर हंस पड़ा। रमेश को उसकी हंसी साफ सुनाई दी। विजय ने कहा, "शांत हो जाइए पापा, और कृपया फोन पर चिल्लाइए मत। यह आपकी रूटीन कॉल नहीं है। कितनी बार कहना पड़ेगा? ये आधुनिक फोन हैं। मैं आपको साफ-साफ सुन सकता हूं, जैसे आप मेरे मानसरोवर स्थित कैंप में मेरे तंबू के अंदर ही हों।"

रमेश मुस्कुराया और धीरे से बोला, "विजय, खबरों के अनुसार गढ़वाल हिमालय के ऊपर के पूरे इलाके में हालात बिगड़ने वाले हैं। और तुम कहते हो कि मैं तुम्हारे प्लास्टिक के तंबू में हूँ? बिलकुल नहीं। तुम्हें पता है कि तुम्हारी माँ मुझे यहाँ दक्कन जिमखाना के मैदान में सुबह की सैर तक नहीं करने देतीं अगर रात में हल्की बारिश हो रही हो। मानसरोवर पहुँचने का एकमात्र तरीका यही है कि मेरी सेना की रेजिमेंट मुझे जबरन अगवा करके हेलीकॉप्टर से वहाँ ले जाए।"

विजय को अपने पिता की दुर्दशा देखकर मज़ा आ रहा था। वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी माँ स्वास्थ्य को लेकर बहुत सतर्क और चिंतित रहती थी। वह हमेशा यही मानती थी कि सावधानी बरतने में ही पैसा

लगता है और वह परिवार की सारी बचत डॉक्टरों पर खर्च नहीं करेगी। विजय को लगा कि उसने कभी ऐसा किया भी नहीं था। उसकी माँ हमेशा अपने चचेरे भाइयों के पास जाती थी, जो चिकित्सक, होम्योपैथ, आयुर्वेद चिकित्सक थे और उनमें से एक गठिया के इलाज में विशेषज्ञ भी था।

रमेश ने फोन पर फिर दोहराया, "विजय, मुझे पता है कि तुम अपने पिता की बात सुनना पसंद नहीं करोगे। अगर तुम यहाँ होते, तो मैं तुम्हें डांट सकता था, और तुम्हारी माँ अपने आँसू बहाकर तुम्हें दोषी महसूस करा सकती थी। लेकिन हम पुणे में हैं। गीता, तुम्हारी माँ और मैं, और तुम मानसरोवर में बहुत दूर, एक ठंडे और गीले प्लास्टिक के तंबू में हो। इसलिए अपना ख्याल रखना, और जब भी हो सके हमें फोन करते रहना। एक मिनट रुको। तुम्हारी माँ तुमसे बात करना चाहती है। कृपया उनसे बात करो।"

गीता धीरे-धीरे उठी और अपने दर्द भरे गठियाग्रस्त पैरों से लंगड़ाते हुए आई। हालांकि, उसके हाथ तेज़ी से चल रहे थे और मानो उसकी धीमी गति की भरपाई कर रहे हों। उसने रमेश से फोन लिया और विजय से धैर्यपूर्वक कहा, "हैलो। तुम्हारे पिताजी फिर से तुम्हें डांट रहे हैं। इसका मतलब है कि तुम शायद ठीक हो।"

विजय ने जवाब दिया, "माँ, कृपया पापा से कहिए कि वे बार-बार यह न कहें कि मैं मानसरोवर में हिमालय की इस पहाड़ी पर प्लास्टिक के तंबू में हूँ। यह एक अल्पाइन तंबू है। इसे इस तरह बनाया गया है कि मैं इन भीषण परिस्थितियों में बिना कष्ट सहे यहाँ रह सकूँ।"

“जी हां। मुझे पता है। लेकिन बाहर सावधान रहना। कल वहां मौसम और खराब होने वाला है। तुम्हारा क्या इरादा है? क्या तुम तीर्थयात्रा मार्ग पर जाओगे और फिर शिविर लौट आओगे? मैंने सुना है कि मानसरोवर झील की पूरी परिक्रमा करने में चार से पांच दिन लगते हैं,” गीता ने कहा, “मुझे उम्मीद है कि तुम कल सावधान और समझदार रहोगे। क्या वहां से हमसे बात करना संभव होगा? तुम्हें पता है कि तुम्हारे माता-पिता दोनों बुज़ुर्ग हैं, अकेले रहते हैं और तुम्हारी भलाई को लेकर बहुत चिंतित हैं?”

उस पल विजय को अपनी माँ की याद दिलाते ही घर की बहुत याद सताने लगी। “माँ, चिंता मत करो। मैं कभी भी बेवकूफ़ ट्रेकर नहीं रहा। मैं हीरो बनने के लिए नहीं निकलता। हमारा पूरा समूह पुणे वापस लौटना चाहता है और हम सब ज़िंदा और स्वस्थ लौटना चाहते हैं। हम बहुत सावधान हैं। हमारे पास सभी ज़रूरी सामान हैं,” उसने अपनी माँ को आश्वस्त करते हुए बड़े भरोसे के साथ कहा, “और माँ, हम अपने टेंट से बाहर नहीं निकलेंगे, प्लास्टिक वाले टेंट नहीं, पापा को बता देना, अल्पाइन टेंट। अगर मौसम खराब हुआ तो हम बाहर नहीं निकलेंगे। मैं आपसे वादा करता हूँ। पापा को बता देना। उनसे कहना कि चिंता न करें। आपको भी चिंता नहीं करनी चाहिए।”

अपने बेटे का आश्वासन सुनकर गीता कुलकर्णी मुस्कुरा उठीं। उन्होंने रमेश की ओर मुड़कर कहा, “विजय के पिता, आपके बेटे ने वादा किया है कि खराब मौसम में वह अपने पर्वतीय तंबू से बाहर नहीं निकलेगा। चिंता मत कीजिए। वह आपसे कह रहा है कि चिंता न करें।” अपने बेटे से फोन पर बात करते हुए, प्रसन्न और संतुष्ट स्वर में उन्होंने कहा, “विजय, मैंने तुम्हारे पिता से कह दिया है कि चिंता न करें। तुम मुझे चिंता न करने

के लिए मत कहो। मैं चिंता करना बंद नहीं कर सकती। लेकिन फोन जरूर करना। मैं अब फोन रख रही हूँ। ठीक है?"

लंगड़ाते हुए बिस्तर पर लौटते हुए गीता खुश भी थी और चिंतित भी। वह अपने बेटे को अच्छी तरह जानती थी। उसे पता था कि उसका पति रमेश भी चिंतित रहेगा। उनके बेटे ने कभी अपने वादे पूरे नहीं किए थे और वह कभी भी किसी साहसिक कार्य या चुनौती से पीछे नहीं हटा था। उसे लग रहा था कि खराब मौसम में भी वह अपने तम्बू से बाहर निकलने की हिम्मत सिर्फ इसलिए करेगा क्योंकि उसके माता-पिता ने उसे सावधान रहने को कहा था। विजय को सावधान रहना नहीं आता था। वह समझदार, सुनियोजित, मेहनती और एक अच्छा टीम लीडर था। लेकिन सावधान तो वह बिल्कुल नहीं था।

उसने रमेश की ओर देखा और जान गई कि वह भी उन्हीं बातों को लेकर चिंतित है। रमेश ने उसकी ओर देखा, अनकहे संदेश, छिपी हुई चिंता और स्पष्ट फिक्र को समझ गया और सहमति में सिर हिलाया। उसने झुंझलाहट में हाथ ऊपर उठाए, मानो भगवान से प्रार्थना कर रहा हो, और अपनी दवाइयाँ लेने के लिए खड़ा हो गया। भोजन कक्ष में रखी दवाइयों की पेटी की ओर जाते हुए, वह प्रार्थना कक्ष की ओर मुड़ा और माथे पर हाथ जोड़कर प्रणाम किया और प्रार्थना की, "हे शिव, हे महादेव, हे महेश्वर, आप इस समय विजय के सबसे निकट हैं। वह आपके क्षेत्र में है। वह आपकी शरण में है। कृपया उसकी देखभाल कीजिए। हमारे पास मदद मांगने के लिए कोई और नहीं है। केवल आप ही विजय और हमारी मदद कर सकते हैं। ॐ नमः शिवाय। ॐ नमः शिवाय। ॐ नमः शिवाय।"

रमेश इस स्थिति को लेकर हैरान था। उसने मौसम का पूर्वानुमान डीडी न्यूज़ वेदर चैनल पर सुना था। यह एक सरकारी समाचार चैनल था और उन्हें मौसम विज्ञान विभागों और संस्थानों से सीधे जानकारी मिलती थी। वे अन्य सभी निजी समाचार चैनलों से कहीं अधिक विश्वसनीय थे। ऊपरी हिमालय के बारे में किसी को कोई चिंता नहीं थी। अन्य 'समाचार' चैनल नई दिल्ली में बारिश, मुंबई में बाढ़ग्रस्त सड़कों और चेन्नई में बढ़ते ज्वार जैसी जलवायु संबंधी खबरें दिखाने में ही लगे रहते थे। आधुनिक भारत का यह एक और पहलू था जो रमेश को पूरी तरह से परेशान करता था। वह शहरों और कस्बों के नामों में होने वाले बदलावों को कभी समझ नहीं पाता था। वह जोर देकर कहता और अपने दोस्तों से बहस करता रहता कि लोगों को दोनों नामों का इस्तेमाल करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

वह खाने की मेज के सामने रुक गया, यह याद करने की कोशिश कर रहा था कि वह यहाँ कुछ लेने क्यों आया था। आजकल वह बहुत सी चीजें भूलने लगा था। क्या वह यहाँ पानी पीने आया था? मेज पर एक खाली पानी का जग रखा था। उसे नल से पानी लेना पड़ेगा। उसे फ्रिज का ठंडा पानी पीना पसंद नहीं था। वह खाने की मेज पर क्यों आया था? उसने अभी एक घंटा पहले ही दोपहर का खाना खाया था। अखबार? वे नाश्ते के समय से ही करीने से तह करके रखे हुए थे, उनकी सिलवटें अभी भी वैसी ही थीं। वह उन्हें शाम की चाय के बाद ही उठाएगा। तो फिर वह खाने की मेज पर क्यों आया था, वह सोचने लगा।

गीता उसे देखती रही। वह चिंतित होती जा रही थी। रमेश के साथ ऐसा बार-बार हो रहा था। वह उसकी मदद तो नहीं करना चाहती थी, लेकिन उसे उसकी चिंता सता रही थी। उसने दूसरा सबसे अच्छा उपाय आजमाया। उसने पुकारा, "हे विजय के पिता, क्या आप मेरी दवाइयाँ और मलहम ला सकते हैं? और जब आप खाने की मेज पर हों, तो क्या आप दवाइयाँ लेने के बाद मेरे लिए थोड़ा पानी ला सकते हैं?" रमेश उसकी बात अच्छी तरह समझ गया। वह अपनी पत्नी को जानता था और जानता था कि वह चिंतित है। उसने जवाब दिया, "इस विजय ने तो मुझे घबराया हुआ और भूलने वाला बना दिया है। मुझे हमारे होम्योपैथ डॉक्टर अतुल कुलकर्णी से बात करनी होगी। उन्हें पता होगा कि मेरी इस भूलने की आदत का क्या इलाज है। मैं मनोभ्रंश नहीं चाहता। अतुल समझेंगे। वह आपके खानदान से तो नहीं हैं, है ना? वह तो समझदार खानदान से हैं। हा हा हा हा।"
गीता ने नाराज़गी का नाटक किया। रमेश के क्लिनिक जाने से पहले उसे डॉक्टर अतुल कुलकर्णी से बात करनी होगी। वह अतुल को रमेश को कुछ असरदार दवाइयाँ देने के लिए मना सकती थी। उसे अपने गठिया के दर्द के लिए भी उनसे दवाइयाँ लेनी होंगी, जो अचानक उसके घुटनों से शुरू हो जाता था। मलहम से कोई फ़ायदा नहीं हो रहा था। बिलकुल भी नहीं।

***

कभी-कभी नोर्बू को लगता था कि वह अपने माता-पिता के साथ दारचेन में अपने घर पर रहकर, उनकी छोटी सी दुकान में तीर्थयात्रियों को सामान बेचकर ज़्यादा बेहतर स्थिति में होता। लेकिन शाम ढलते ही, कांग रेनपोचे पर्वत पर छाए काले तूफ़ानी बादलों को देखकर, नोर्बू सोचने लगा कि क्या दारचेन से दूर अपने पैतृक गाँव में जौ के छोटे से खेत की देखभाल करना उसके लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद होता। नोर्बू खुद को बार-बार याद दिलाता रहा कि वह दारचेन में नहीं है। वह दिरापुक गोम्पा में एक छोटे से पथरीले गड्ढे में लगे इस छोटे से तंबू में रात गुज़ार रहा है।
नोर्बू ने मन ही मन सोचा कि वह अकेला नहीं है और मुस्कुराया। उसके साथ अच्छे साथी थे, और वे उसके कई सालों के बहुत अच्छे दोस्त थे। वह उन दोनों को बचपन से जानता था और उन्हें उस पर बहुत भरोसा था। इस छोटे से तंबू में चौथा साथी एक नया दोस्त था, फिर भी बाकी दोनों ने उसे अपना लिया था, भले ही वह उनसे अलग था। वैसे भी, नोर्बू भी उन दो याकों से अलग था जो इस छोटे से तंबू में एक-दूसरे से लिपटे हुए थे। तंबू में चौथा साथी दो साल से कम उम्र का तिब्बती मास्टिफ़ का पिल्ला था। देखने में तो मास्टिफ़ याकों से ज़्यादा खतरनाक लग रहा था।
नोरबू तंबू के अंदर रात का खाना पकाने की तैयारी करने लगा। उसने यह सुनिश्चित किया था कि तीर्थयात्रियों के अपने पहाड़ी तंबुओं में विश्राम करने जाने के बाद याक दिरापुक गोम्पा के नीचे के घास के मैदानों में चर लें। याक और मास्टिफ़ दोनों संतुष्ट थे, क्योंकि उन्हें गोम्पा के पास बने कई तंबुओं में मौजूद भोजनालयों से

कुछ मांस मिल गया था। नोरबू ने तंबू के अंदर ज़मीन में एक गड्ढा खोदा और उसमें मुट्ठी के आकार के पत्थर रखे। गड्ढा लगभग दस इंच गहरा था और उसने उसे जल्द ही झाड़ियों और टहनियों से भर दिया, जिनमें उसने आग लगा दी। एक गंदे कपड़े के थैले में हाथ डालकर उसने याक के गोबर के कुछ सूखे उपले निकाले और उन्हें आग में डाल दिया।

तंबू के अंदर जलती आग की गर्माहट अच्छी लग रही थी, और छेद के चारों ओर लगे पत्थरों ने इसे और भी बेहतर बना दिया। नोर्बू ने सोचा कि याक अब आराम से सांस ले रहा है, और उसने मास्टिफ़ कुत्ते को आग से दूर धकेल दिया। उसका खाना हमेशा तीर्थयात्रियों के समूह और उसके मालिक से छीन लिया जाता था, जो पहाड़ी तंबुओं में रहते थे। नोर्बू और उसके जैसे दूसरे याक चराने वाले लड़के अपने जानवरों के साथ रात भर अस्थायी तंबुओं और झोपड़ियों में रहते थे। यह अजीबोगरीब जीवों का समूह था जो यह सुनिश्चित करता था कि वे रात गुजार सकें। याक, खच्चर, टट्टू, मास्टिफ़ कुत्ते और याक चराने वाले लड़के इस छोटे से गाँव में एक साथ रहते थे जो गोम्पा, सरकारी अतिथि गृहों, निजी तंबू क्षेत्रों और भोजनालयों के आसपास बसा हुआ था।

नोरबू, अन्य याक चराने वाले लड़कों की तरह, रात भर अपने जानवरों के साथ ही रहा। उसके तंबू में मौजूद दो याक उसके परिवार के थे, जिन्हें दारचेन से दूर घाटियों में स्थित उनके पैतृक गाँव से लाया गया था। उसके माता-पिता दारचेन के पास शिकुआनहे में याक का एक छोटा झुंड रखते थे, और उसकी छोटी बहनें उनकी देखभाल और चराई करती थीं। उसने इन दो याकों को तीर्थयात्रा मार्गदर्शकों को पूरे मौसम के लिए किराए पर दिया था, ताकि तीर्थयात्रियों को कांग रेनपोचे के महान पर्वत की परिक्रमा करने वाली तीर्थयात्रा, कोरा में मदद मिल सके। भारत से आए तीर्थयात्री इसे कैलाश पर्वत कहते थे, जबकि उसके अपने तिब्बती गाँव वाले इसे तिसे कहते थे।

हर रात अकेले खाना बनाते हुए, नोर्बू को हमेशा घर की याद सताती रहती थी। उसे उस गरमागरम खाने की बहुत याद आती थी जो उसकी माँ इस समय दारचेन में बना रही होती। वह जानता था कि उसकी माँ कांग रेनपोचे के चारों ओर कोरा (धार्मिक साधना) पर गए अपने बेटे के बारे में सोच रही होगी और सोच रही होगी कि क्या चमत्कार से वह परिवार के साथ रात का खाना खा पाएगा। नोर्बू के लिए, रात का खाना त्सम्पा (एक प्रकार का दलिया), एक कटोरी गर्म चाय और भुने हुए जौ के आटे का एक कामचलाऊ मिश्रण होता था। इसमें वह प्लास्टिक की थैली से थोड़ा सा मक्खन मिलाता था और एक चुटकी नमक छिड़कता था। उसने आग पर थोड़ा पानी गर्म करने के लिए रखा था, और गर्म त्सम्पा पीने के बाद वह उसे पी जाता था।

उन्हें हवा के तेज़ होने की आहट सुनाई दे रही थी और कांग रेनपोचे के चारों ओर मंडराते बारिश के बादलों की गंध भी आ रही थी। आज रात तो बुरा हाल होगा, और अगर कल पूरे दिन बारिश होती रही तो क्या होगा? वे खुशकिस्मत थे कि ऊँची ज़मीन पर चट्टानों के इस समूह के अंदर उन्होंने अपने तंबू और झोपड़ियाँ लगा ली थीं। वे आंधी और तेज़ हवाओं से सुरक्षित रहेंगे। पिछले चार सालों से वे इसी रास्ते पर चल रहे थे, जब से उनके पिता ने उन्हें तीर्थयात्रा का यह नया और अनोखा हुनर सिखाने का उचित समझा था। जौ की फसलें खराब हो

रही थीं और उनके परिवार ने उन कुछ पत्थर के गोदामों का मालिकाना हक खो दिया था, जिन्हें उनके दादा ने गाँव की फसल को भंडारित करने के लिए बनवाया था। स्थानीय सरकार द्वारा नियुक्त ग्राम प्रधान ने गाँव के खाते में अधिक आय के वादे पर काशघर के एक निवासी को मालिकाना हक सौंप दिया था।

याक चराने वाले लड़के हवाओं और कोरा पर बने शिविर स्थलों से अच्छी तरह वाकिफ थे। यह तीर्थयात्री समूह धीमी गति से चलता था और इससे याक, टट्टू और खच्चर मुहैया कराने वाले परिवारों को अच्छी आमदनी होती थी। वे आमतौर पर डोलमा दर्रे से लगभग तीन किलोमीटर दूर स्थित दिरापुक गोम्पा और तारबोचे के पास के घास के मैदानों में ठहरते थे। तिरपाल, कैनवास, प्लास्टिक शीट और मजबूत किनारों वाले कपड़े से बने अपने तंबू में बैठे नोर्बू पिछले चार वर्षों के अपने जीवन पर विचार कर रहे थे। उन्होंने तंबू बनाने का अधिकांश सामान तीर्थयात्री शिविरों से, छूटे हुए सामान से और शिकुआनहे के पुलिसकर्मियों द्वारा अवैध रूप से आने वाले लोगों से जब्त या बरामद किए गए सामान से इकट्ठा किया था। अगर उन्हें तंबू खरीदना पड़ता, तो दो याक और एक याक चराने वाले लड़के के लिए इतना बड़ा तंबू खरीदना उनके बस की बात नहीं होती।

अपने तंबू से नोर्बू को कांग रेनपोचे की ऊँची चोटियाँ दिखाई दे रही थीं, जिन्हें तीर्थयात्री कैलाश पर्वत कहते थे। हवाएँ ऊँची चोटियों के चारों ओर हल्के सफेद बादलों को उड़ा रही थीं। दिरापुक गोम्पा की इस घोर अंधेरी रात में कांग रेनपोचे की बर्फ से ढकी चोटी चमक रही थी। वह इस पथरीले आश्रय स्थल के नीचे घास के मैदान में स्थित तीर्थयात्री शिविर को भी नहीं देख पा रहा था, लेकिन कांग रेनपोचे की बर्फ से ढकी चोटी बेहद चमकदार थी। चाँद अपने साये से बाहर निकलकर चोटी के सामने आ गया था, एक पतला सा अर्धचंद्राकार चाँद, जिसे बादल मानो दूर भगाने की कोशिश कर रहे थे। बादलों की लहरें लगातार चाँदनी को छोटी चोटियों पर इधर-उधर फेंक रही थीं।

नीचे की चोटियाँ कांग रेनपोचे के चारों ओर एक विशाल साँप की तरह मुड़ती-घुमती हुई प्रतीत हो रही थीं। चोटी पर हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी, जिससे बर्फ से ढकी चोटी और भी चमकदार लग रही थी। दिरापुक गोम्पा के नीचे के मैदानों में भारी बारिश हो रही थी। नोर्बू आने वाले दिन के बारे में सोच रहा था। क्या वे तीर्थयात्रियों को कोरा (यात्रा) पर ले जा पाएँगे? यदि यहाँ, इन ऊँचे मैदानों में बारिश हुई, तो इसका मतलब होगा सड़कें खराब और डोलमा दर्रे और फिर ज़ुतुलपुक या ज़ुथरुल फुग गोम्पा तक का उनका रास्ता मुश्किल भरा होगा। यदि तीर्थयात्री उनकी अपेक्षित गति को बनाए नहीं रख पाए, तो उन्हें रास्ते में कहीं रुकना पड़ सकता है। डोलमा दर्रे से होकर पैदल जाने का जोखिम उठाने के बजाय दिरापुक गोम्पा के ऊँचे स्थानों पर रुकना उनके लिए शायद अधिक समझदारी भरा होगा।

नोर्बू ने मन ही मन सोचा कि ऐसी रातों में उसके माता-पिता उसकी सेहत को लेकर चिंतित तो होते, लेकिन उसके लिए डरे नहीं होते। वह इतने सारे नेयखोरों का दौरा कर रहा था, और ये पवित्र स्थान उसके और उसके याकों के लिए खतरे की जगह नहीं होंगे। उसके परिवार को उस तिब्बती मास्टिफ़ कुत्ते के बच्चे के बारे में पता था जो दारचेन से उसके साथ आने लगा था। वह दुबला-पतला और भूखा-प्यासा दारचेन में नेयखोर के

पास स्थित उसके माता-पिता की दुकान पर आया था, और नोर्बू ने उसे अपनी माँ द्वारा नमक लगाकर रखे गए मांस के बचे हुए टुकड़ों से खिलाया था। मास्टिफ़ को नमकीन स्वाद इतना पसंद आया कि मानो उसने नोर्बू के प्रति अपनी जान ही दे दी हो। उसने कभी नोर्बू का साथ नहीं छोड़ा और हमेशा प्यार भरी निगाहों से देखता रहा, हालाँकि शांति से चलते समय भी वह बहुत खूंखार और खतरनाक दिखता था।

नोरबू भिक्षु बनना चाहता था, लेकिन उसके माता-पिता ने उसे अनुमति नहीं दी थी। स्थानीय मठ ने उसके माता-पिता की बात मान ली थी। वह अब यहाँ, रात के समय, दिरापुक गोम्पा में एक अस्थायी तंबू में अपने याक और मास्टिफ़ कुत्ते के साथ बारिश रुकने का इंतज़ार कर रहा था। वह कांग रेनपोचे और उस पर्वत के बारे में सुनी गई विभिन्न कहानियों के बारे में सोच रहा था, जो उसने अपने माता-पिता, तीर्थयात्रा मार्गदर्शकों, तीर्थयात्रियों और शिकुआनहे के पुलिसकर्मियों से सुनी थीं। किसी की भी हिम्मत नहीं थी उस पर्वत पर चढ़ने की। यहाँ तक कि उसकी तलहटी तक जाने की भी। स्थानीय पुलिसकर्मी, भिक्षु और ग्रामीण किसी भी ऐसे व्यक्ति पर नज़र रखते थे जो ऐसा करने की कोशिश करे। उन्होंने कहा कि आज तक कोई भी वापस नहीं लौटा है।

उनके माता-पिता स्थानीय पवित्र स्थलों की मार्गदर्शिकाएँ, जिन्हें नेयिग कहते थे, बेचते थे। वे इनमें से कुछ पुस्तकें पढ़ सकते थे और दूसरों से भी, जो ठीक से पढ़ सकते थे, इसके बारे में सुनते थे। इन पुस्तकों में सभी धर्मों के लोगों द्वारा कांग रेनपोचे के प्रति श्रद्धा का वर्णन था। वे हर प्रकार के तीर्थयात्रियों से मिल चुके थे। हिंदू, जैन, बौद्ध और बोन पो। वे यहाँ कोरा करने आते थे। कुछ लोग दारचेन से तारबोचे, फिर दिरापुक गोम्पा, फिर डोलमा दर्रा, फिर ज़ुतुलपुक और अंत में दारचेन तक कोरा करते थे, जबकि कुछ तीर्थयात्री इसके विपरीत दिशा में चलते थे। कुछ महीनों तक चलने वाले इस काम के बदले अच्छी कमाई होती थी। उनके परिवार को सर्दियों में गुजारा करने के लिए इस पैसे की ज़रूरत थी, क्योंकि उस समय कोई काम नहीं होता था। यह सब कांग रेनपोचे के पवित्र शिखर के कारण था। आज रात, जब तेज़ बारिश हो रही थी, नोर्बू अपने तम्बू से उस शिखर को देख सकते थे और उन्होंने सुरक्षित कोरा के लिए प्रार्थना में अपना सिर झुकाया और उसका आशीर्वाद मांगा।

***

दारचेन के बाहर सड़क किनारे एक ढाबे पर तूफानी रात में अकेला चीनी पुलिसकर्मी लकड़ी की आग से दूर एक मेज पर अकेले बैठे उस जोड़े के बारे में सोच रहा था। पश्चिमी तिब्बत के इस इलाके में एक बौद्ध भिक्षु और एक सिख का साथ में बैठना वाकई संदिग्ध लग रहा था। मानो हाल के दंगे मुसीबतों का अंत न हों, वह सोच रहा था कि ये दो अजीब और बेमेल साथी किस बारे में बात कर रहे होंगे। उसने सोचा, बेहतर होगा कि पहले पता कर लिया जाए, और उसने ढाबे के मालिक को इशारा किया।

यह एक भोजनालय, एक दुकान और तीर्थयात्रियों के यात्रा और शिविर के सामान के लिए एक सुरक्षित स्थान था, वाहनों के लिए किराए पर पार्किंग की जगह थी और इसके साथ ही एक जर्जर झोपड़ी भी थी जो याक, टट्टू, घोड़े और खच्चरों के अस्तबल के रूप में काम करती थी। चीनी पुलिसकर्मी ने सोचा कि इस भोजनालय की हर गतिविधि अवैध थी। लेकिन, मानसरोवर झील और कैलाश पर्वत के प्रवेश द्वार, दारचेन की इन शत्रुतापूर्ण भूमि में, इस भोजनालय द्वारा प्रदान की जाने वाली हर सेवा जीवन रक्षक प्रणाली थी, जैसा कि भारत से आने वाले हिंदू तीर्थयात्रियों की लहरें उसे लगातार याद दिलाती रहती थीं।

भोजनालय का मालिक पुलिसकर्मी के पास आया और मुस्कुराया, क्योंकि उसे मुस्कुराना ही था, और पूछा, “ओ शेनशे, क्या आप थोड़ा और गरमा गरम सूप और भुना हुआ बेकन लेंगे? हमने अभी-अभी एक नया कटोरा बनाया है।” पुलिसकर्मी ने सिर हिलाया, क्योंकि इस रात में गरमा गरम सूप बहुत राहत देगा, क्योंकि कल तेज़ आंधी और ओलावृष्टि की आशंका थी। सूप से उसे रात गुजारने में मदद मिलेगी। वह इस बारिश में दारचेन शहर नहीं जा सकता था। उसने अपनी साइकिल को भोजनालय के अंदर रख दिया था ताकि वह उड़ न जाए। या चोरी न हो जाए, उसने मुस्कुराते हुए कहा, पास की घाटियों से आए बेचारे तिब्बती तीर्थयात्री।

साइकिल को ल्हासा नंबर प्लेट वाली स्टील-ब्लैक हमर के सहारे टिकाया गया था। शानदार टर्बो इंजन वाली चार पहियों वाली इस गाड़ी को ओलों की बारिश से बचाने के लिए भोजनालय के अंदर लाया गया था। हमर के पास ही दो लैंड रोवर खड़ी थीं। खाने की मेजों को एक तरफ हटा दिया गया था ताकि गाड़ियों को अंदर लाकर सुरक्षित रखा जा सके। भोजनालय के मालिक को इस सेवा के लिए अच्छी खासी रकम दी जाएगी।

पुलिसवाले ने भोजन कक्ष में बाकी लोगों से अलग बैठे बौद्ध भिक्षु और सिख तीर्थयात्री की ओर इशारा किया। भोजनालय के मालिक ने पुलिसवाले के अनकहे सवाल को समझ लिया और बौद्ध भिक्षु को पुकारते हुए कहा, “हे गुरुदेव, इधर आइए, लकड़ी की आग की गर्माहट में बैठिए। मैं आपके लिए गरमा गरम सूप और आलू की करी वाला चावल लाता हूँ। यहाँ हमारे पुलिसवाले मित्र शेंशे सूप का एक नया कटोरा लेने वाले हैं, और उन्हें आपसे कुछ सलाह और मार्गदर्शन की आवश्यकता है। अपने भारत से आए मित्र को भी आग के पास बिठा दीजिए। हम उनके लिए भी कुछ और खाना लाते हैं।”

उन्हें आश्चर्य हुआ कि बौद्ध भिक्षु और सिख तीर्थयात्री बिना किसी विरोध के और बिना किसी देरी के उनके पास आ गए। वे शेंशे की भोजन मेज पर पहुँचे, अगर उसे मेज कहा जा सकता था। मेज वास्तव में मोटी लकड़ी का एक लंबा तख्ता था, जिस पर प्लास्टिक की चादर कार्डबोर्ड से कीलों से ठोकी गई थी। तख्ता दोनों सिरों पर पत्थर के ब्लॉकों पर टिका हुआ था। तख्ते के दोनों ओर नीचे पत्थर के ब्लॉक कुर्सियों का काम कर

रहे थे। शेंशे के लिए, भोजनालय के मालिक ने कुछ विलासिता का इंतजाम किया था। उन्होंने पत्थर के ब्लॉक को कपड़ों के ढेर से ढक दिया था, जो तकिये का काम करता था।

शेनशे को और भी आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि वह बौद्ध भिक्षु अजनबी था। वह इस क्षेत्र के अधिकांश भिक्षुओं को जानता था, और यह बौद्ध भिक्षु निश्चित रूप से दारचेन या शिकुआनहे क्षेत्र का नहीं था। उसके वस्त्र भी अलग थे। इसलिए वह किसी स्थानीय मठवासी संप्रदाय का नहीं था। सिख भिक्षु किसी पवित्र तीर्थयात्री जैसा प्रतीत हो रहा था। शेनशे ने सोचा, यह वाकई बहुत अजीब हो रहा है। उसने दोनों साधुओं से अपना परिचय देते हुए कहा, "हे गुरुजनों, आपका स्वागत है। मैं शेनशे हूँ, और मैं इस स्थान और दारचेन से इस सड़क के किनारे स्थित आस-पास की बस्तियों का पुलिस अधिकारी हूँ। आप दोनों यहाँ के निवासी नहीं लगते। क्या आप दोनों तीर्थयात्री हैं?"

बौद्ध भिक्षु ने प्रणाम करते हुए सिर झुकाया और मेज पर बैठ गए। सिख साधु ने भी हाथ जोड़कर सिर झुकाया और भिक्षु के बगल में बैठ गए। बौद्ध भिक्षु ने उत्तर दिया, "भाई, हम आपको अपने समुदाय की भावना और मित्रता के साथ प्रणाम करते हैं। गरमागरम भोजन का स्वागत है। मैं तिब्बती हूँ, लेकिन भारत में जन्मा हूँ। मेरे दादा-दादी बोधगया की पवित्र भूमि में बस गए थे और मैं नालंदा के मठ का भिक्षु हूँ, जहाँ सैकड़ों वर्ष पूर्व परम ज्ञानी गुरु ने शिक्षा दी थी। मेरे साथ मेरे सिख भाई सरदार अमरपाल सिंह जी हैं, जो अमृतसर से हैं और अपने समुदाय के पवित्र मंदिर से आए हैं। वे भविष्य में अपने धर्म के संत बनने की आशा रखते हैं, लेकिन फिलहाल अपने गुरु के बारे में जानकारी की तलाश में इस भूमि पर आए हैं।"

शेंशे ने सोचा, यह तो बिलकुल नई बात है। स्थानीय बौद्ध भिक्षुओं और उनकी गतिविधियों पर नज़र रखते हुए उसने कभी भी इस तरह का बहाना नहीं सुना था। उसने पूछा, "आप जैसे दो पवित्र पुरुषों की उपस्थिति में होना सचमुच सम्मान की बात है। सिख तीर्थयात्री क्या खोज रहे हैं? और आप उनके साथ क्यों हैं? क्या आप भी सिख धर्म के बारे में जवाब खोज रहे हैं? वे आपकी मदद क्यों मांग रहे हैं? और इतनी सारी जगहों में से, दारचेन या कांग रेनपोचे, कैलाश पर्वत (जैसा कि वे शायद इसे कहते होंगे) ही क्यों?"

तीर्थयात्री, स्थानीय तिब्बती विक्रेता और भोजनालय के मालिक और उनकी पत्नी तीनों व्यक्तियों के चारों ओर जमा हो गए, एक अच्छी कहानी सुनने की उम्मीद में और तूफानी रात को गुजारने के लिए बौद्ध भिक्षु की बातें सुनने के लिए, क्योंकि वे परम ज्ञानी की पवित्र भूमि से आए थे। भिक्षु जानते थे कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है, और उन्होंने उत्सुकता से उनका भाषण सुनने के लिए प्रतीक्षा कर रहे सभी लोगों के सामने खुद को समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा, "मैं अपने साथी के धर्म के बारे में अधिक नहीं जानता, लेकिन पिछले दस दिनों में मैंने उनसे जो सीखा है, उसकी तुलना मैं अपने जीवन में खोजी जाने वाली समानताओं, अपने पूर्वजों से प्राप्त संदेशों, और अपने मंदिरों, मठों और सभी पवित्र स्थानों में सभी के लिए बनाए गए मार्ग से किए बिना नहीं रह सकता।"

"अमृतसर से मेरे भाई, जैसा कि आप जानते हैं, कांग रेनपोचे की भूमि, सुमेरु पर्वत पर, जैसा कि वे खुद कहते हैं, गुरु रेनपोचे के मठ के दर्शन करने आए हैं। गुरु रेनपोचे, जिन्हें परम पूज्य, कमल से जन्मा, पद्मसंभव के

नाम से भी जाना जाता है, जो अमिताभ बुद्ध का एक अवतार हैं और इस महान पर्वत के नीचे निवास करते थे, उनके मठ में दर्शन करने आए हैं। मेरे भाई, सरदार अमरपाल सिंह जी, अमृतसर के एक संत हैं, या जल्द ही संत बन जाएंगे, वे अपने प्रथम गुरु, गुरु नानकजी के ज्ञान की खोज में आए हैं, जो सैकड़ों वर्ष पहले यहां आए थे। मैं उन्हें अपनी खोज के बारे में बताने की अनुमति देता हूं।"

सिख तीर्थयात्री ने हिंदी में बात की, फिर भी यहाँ उपस्थित सभी लोग उन्हें समझ गए, क्योंकि उनकी आँखों में जो खोज भाव था, उससे सभी को उनके शब्दों की पवित्रता का एहसास हुआ। उन्होंने कहा, "मेरे भाइयों, मैं आप सभी को प्रणाम करता हूँ, क्योंकि आप सभी भाग्यशाली हैं कि इस परम पवित्र भूमि में उपस्थित हैं। हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख, बोनपो और सभी तिब्बती, कैलाश की इस भूमि में, शक्तिशाली नदियों की इस जन्मभूमि में, मैं अमृतसर से, अपने लोगों के सबसे पवित्र मंदिर से, अपने प्रिय गुरु नानकजी के ज्ञान की खोज में आया हूँ। वे अपनी यात्राओं में यहाँ आए थे, कुछ कहते हैं कि वे लद्दाख से आए थे, और कुछ कहते हैं कि वे सिक्किम से आए थे। कोई कुछ भी कहे, वे यहाँ आए और ठहरे, और लोगों को अपने ज्ञान और समझ का मार्ग सिखाया।"

तिब्बती बौद्धों ने मेरे प्रिय गुरु को संत माना है। उस समय के बौद्ध अनुयायियों ने उनके उपदेशों से शिक्षा प्राप्त की। कहा जाता है कि वे पंजाब के रिम्पोचे नानक गुरु के नाम से प्रसिद्ध थे, और उनकी यात्राओं के इस भाग, उनकी तीसरी यात्रा जिसे उनकी तीसरी उदासी भी कहा जाता है, के बारे में अधिक जानकारी नहीं है, जब वे कांग रेनपोचे के निकट रहे थे। कहा जाता है कि इस क्षेत्र के मठों और गोम्पाओं में शिलालेख हैं जो मेरे प्रिय गुरु की यात्रा का वर्णन करते हैं। मैं ऐसी जानकारी की खोज में आया हूँ जो मुझे यहाँ उनकी यात्रा के बारे में बताने में सहायक हो। संभव है कि शिलालेख हिंदी या मेरी भाषा, गुरुमुखी में हों, और इसलिए यहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा समझे न गए हों।

सिख तीर्थयात्री ने आगे कहा, "हे भाइयों, मैं आपको फिर से प्रणाम करता हूँ। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हों जो मेरी सहायता या मार्गदर्शन कर सके, तो कृपया मुझे बताएं। मैं ज्ञान की खोज में आया हूँ। कहा जाता है कि मेरे प्रिय गुरु ने स्थानीय राजा को कुछ क्षतिग्रस्त मठों के पुनर्निर्माण में सहायता की थी। यहाँ दिए गए उनके सहयोग, मार्गदर्शन और शिक्षाओं के लिए उन्हें सम्मानित किया गया था। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मेरे प्रिय गुरु, पंजाब के रिम्पोचे नानक गुरु, गुरु नानकजी, स्वयं पद्मसंभव का अवतार थे। यह भी उल्लेख है कि शायद केवल गुरु नानकजी ही सुमेरु पर्वत पर गए और वापस लौटे। यह ज्ञान संभवतः गुरु रिम्पोचे के मठ में मिलेगा, जो तारबोचे से दिरापुक गोम्पा और डोलमा ला के मार्ग पर स्थित है।"

इतना कहकर सिख तीर्थयात्री प्रार्थना में बैठ गए और "एक ओंकार..." का जाप करने लगे।

***

जो भी उनकी तलाश में आता, उन्हें "महाराज" कहकर पुकारता। यही उनका असली नाम था। उनका नाम हरिराम महाराज था। उन्होंने एक बार अपने नाम का अर्थ समझाया था। ऐसा लगता है कि उनका दिया हुआ

नाम हरिराम था, जबकि उन्हें पश्चिमी भारत के स्वादिष्ट गुजराती-राजस्थानी शाकाहारी भोजन बनाने की कला के कारण 'महाराज' की उपाधि दी गई थी। उन्होंने बड़ी विनम्रता से बताया था कि उनके क्षेत्र के सभी अच्छे रसोइयों को 'महाराज' कहा जाता था। कुछ देर बाद उन्होंने यह भी कहा कि 'महाराज' शब्द का अर्थ 'राजाओं का राजा' होता है, जो वे वास्तव में नहीं थे।

और फिर उनके जीवन की कहानी और भी जटिल होने लगी। शिकुआनहे के भोजनालय के मालिक के लिए यह सब समझना मुश्किल था। वह जानते थे कि भारत एक बहुत बड़ा देश है और उस भूमि से आने वाले हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध तीर्थयात्री एक-दूसरे से भिन्न हैं। शिकुआनहे के बाहर इस तंबूनुमा भोजनालय को चलाते हुए कई वर्षों में उन्हें यह भी समझ में आने लगा था कि हिंदुओं या अन्य धर्मों के भीतर रहने वाले भारतीय भी एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं। वे स्वयं शिकुआनहे से कुछ दूरी पर स्थित किन्हाई कस्बे से आए थे। लेकिन वे अपने साथी तिब्बतियों और लगातार प्रवास करने वाले चीनी लोगों को अच्छी तरह जानते थे।

शुरुआती वर्षों में कुछ भारतीय उनकी दुकान पर आते और शाकाहारी भोजन मांगते, जिसके बारे में उन्हें पता नहीं था कि यह केवल उन्हीं की मांग होगी। उन्होंने उनके लिए शाकाहारी भोजन बनाना शुरू कर दिया। फिर कुछ अन्य भारतीय आने लगे जिन्होंने मांग की कि शाकाहारी भोजन उन बर्तनों से अलग पकाया जाए जिनमें वे मांस या मछली पकाते थे। उनकी पत्नी युशु की रहने वाली थीं और उन्हें अपने गांव के पास स्थित मठ से इस मांग का पता था। मठ के भिक्षु बहुत ही कट्टर शाकाहारी थे और उन्होंने मांग की थी कि आस-पास की सभी दुकानों में शाकाहारी भोजन अलग बर्तनों में पकाया जाए। उनकी पत्नी ने उन्हें बर्तन अलग रखने के लिए मना लिया। इससे ग्राहकों की संख्या बढ़ेगी और ये कट्टर शाकाहारी आमतौर पर बेहतर कीमत चुकाते थे। उनकी सलाह सही साबित हुई और बर्तनों को अलग रखने से उन्हें लाभ हुआ।

बाद में, काठमांडू के बड़े तीर्थयात्री समूहों और पर्यटन कंपनियों से यह मांग आई कि यदि वह एक ऐसे भारतीय रसोइए को नियुक्त करें जो उनकी ज़रूरतों और पसंद को समझता हो और 'शुद्ध शाकाहारी हिंदू' भोजन परोसने में कड़ी निगरानी रखने की आवश्यकता को जानता हो, तो वे विशेष आधार पर अपने ग्राहकों को लाएंगे। उन्होंने उनकी ज़रूरत को समझ लिया था और उन्होंने कोई आपत्ति नहीं जताई क्योंकि वेतन अच्छा और समय पर मिलता था। यहाँ कोई उधार का लेन-देन नहीं था और ज़रूरतें इतनी बढ़ रही थीं कि इसे स्वीकार करना और उसके अनुसार ढलना पर्याप्त रूप से लाभदायक होता। भारत से दस से अधिक विभिन्न रसोइयों को नियुक्त करने के बाद, जिनमें नेपाल और भूटान के रसोइए भी शामिल थे, जिन्होंने 'शुद्ध शाकाहारी हिंदू' भोजन बनाने का दावा किया था, उन्होंने महाराज को खोज निकाला।

बात बिल्कुल उलट थी, क्योंकि महाराज खुद क्विन्हाई के लूओ त्सेरिंग की तलाश में आए थे, जो एक तंबूनुमा भोजनालय के मालिक थे, जिसके बोर्ड पर बड़े ही चटख रंग से लिखा था, "पूरी तरह शाकाहारी हिंदू भोजन (अलग पकाया जाता है)"। उन्होंने नगारी के विभिन्न शहरों में रहते हुए जो तिब्बती+चीनी+हिंदी+अंग्रेजी भाषा सीखी थी, उसी में अपना परिचय दिया। उन्होंने बताया कि वे शिकुआनहे में ही रहना चाहते हैं और काम की

तलाश में हैं। उन्होंने कहा कि वे 'पूरी तरह शाकाहारी हिंदू भोजन' पका सकते हैं और उनका नाम ही सबसे बड़ा प्रमाण है जिसे वे कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील के सभी हिंदू तीर्थयात्रियों को बता सकते हैं।

लूओ त्सेरिंग और उनकी पत्नी ने शिकुआनहे से दारचेन तक जाने वाले तीर्थयात्रा मार्ग पर एक साधारण तंबू वाला भोजनालय खोलने की योजना बनाई थी। उन्होंने शुरुआत में चियांग के स्थानीय व्यंजनों से ही भोजन शुरू किया और रात के खाने में केवल गाय के खुर या पनीर जैसे स्वादिष्ट पकवान ही परोसे। मौसम और चीनी सैनिकों, पुलिसकर्मियों या तिब्बत के अन्य हिस्सों से आने वाले तीर्थयात्रियों की आवाजाही के अनुसार उन्होंने सिचुआन और शिनजियांग के व्यंजन भी परोसना शुरू कर दिया था। उनका व्यवसाय अच्छा चल रहा था, लेकिन उनकी अधिकांश आय तिब्बती हिमालय के बर्फीले रेगिस्तान की कठोर जलवायु में जीवन यापन करने में खर्च हो रही थी। भारत से आने वाले तीर्थयात्रियों की वजह से उनकी आय और लाभ में काफी बदलाव आया और भोजनालय एक पार्किंग क्षेत्र और तंबू लगाने की जगह में तब्दील हो गया।

बेहद खास शाकाहारी भोजन की मांग देखकर वह हैरान रह गया था, और उसने सोचा था कि यह मांग केवल कुछ ही तीर्थयात्रियों की होगी। उसे इस बात का एहसास नहीं था कि कैलाश पर्वत पर आने वाले अधिकांश तीर्थयात्री मांसाहारी भोजन के आस-पास होने से खुद को या अपनी तीर्थयात्रा को दूषित करने का जोखिम भी नहीं उठाएंगे। लूओ को लगा कि हरिराम महाराज ने उनकी बहुत मदद की है, क्योंकि उन्होंने भारत से आए हिंदू तीर्थयात्रियों के लिए खाना पकाने, व्यवस्था करने और मेहमाननवाज़ी का पूरा जिम्मा संभाल लिया था। महाराज ने नेपाल और भारत से बचे हुए तीन तीर्थयात्रियों को ढूंढकर उन्हें शाकाहारी भोजन के लिए प्रशिक्षित भी किया था।

कभी-कभी वे तीर्थयात्रियों के समूहों के बीच आराम करने के लिए बैठते और बातें करते। आमतौर पर यह कोई चर्चा नहीं होती थी, क्योंकि हरिराम महाराज बिना रुके बोलते रहते थे। महाराज अपने बारे में जो कुछ भी बताते, लूओ को समझना बहुत मुश्किल लगता था। महाराज इसके अलावा और किसी विषय पर बात नहीं करते थे। या तो वे अपने बारे में ही बात करते, या फिर कुछ नहीं। महाराज भूगोल, संस्कृति, धर्म और भारत की विविधता के बारे में बहुत ही विशिष्ट ढंग से समझाते थे, जो लूओ को कभी समझ में नहीं आता था। वह चुपचाप सुनता रहता था, क्योंकि उसे लगता था कि कुछ मुहावरे और शब्द सीख लेना और हिमालय के नीचे की भूमि से आए इन अजनबी तीर्थयात्रियों की विविधता को समझना और उसका सम्मान करना उपयोगी होगा।

महाराज ने समझाया कि उनके नाम का अर्थ 'राजाओं का राजा' है, लेकिन वे राजा नहीं थे। वे पश्चिमी भारत का गुजराती-राजस्थानी खाना बनाते थे, लेकिन वे न तो गुजराती थे और न ही राजस्थानी। उन्होंने एक बहुत अमीर व्यापारी के गुजराती परिवार में काम किया था, जहाँ वे एक ही घर में रहने वाले एक बहुत बड़े परिवार के चालीस से अधिक सदस्यों के लिए खाना बनाते थे। परिवार उन्हें 'महाराज' कहकर पुकारने लगा था और वे पड़ोस में इसी नाम से जाने जाने लगे थे। उनके गुरु, सेठ वालचंदभाई शाह, राजस्थान के एक संत के भक्त थे, जिनका आश्रम नर्मदा नामक एक बड़ी नदी के पास कहीं था। यह नदी राजस्थान में नहीं बहती थी, लेकिन

संत ने अपना आश्रम स्थापित किया था, जैसा कि महाराज ने लूओ को समझाया था, ताकि उन्हें समझ में आ सके। संत के अनुरोध पर, उनके गुरु ने उन्हें आश्रम में काम करने और राजस्थानी खाना बनाने के लिए कहा था। सेठ ने उनका वेतन देना जारी रखा और 'महाराज' की उपाधि उनके साथ वहीं जुड़ गई।

तीर्थयात्री नियमित रूप से आश्रम में कोरा करने आते थे, जो नर्मदा नदी की पूरी लंबाई की पैदल यात्रा होती है। वे आश्रम में रात बिताते थे और रसोई के बाहर की दुनिया के बारे में कहानियां सुनाते थे। महाराज ने हालांकि उस संत के उपदेशों और प्रवचनों में भाग लेना शुरू कर दिया था और योग का अभ्यास करने लगे थे, विशेष रूप से हठ योग का, जो यहां सिखाया जाता था। महाराज ने लूओ को समझाया कि यह कुछ चुनिंदा लोगों को सिखाया जाता था और यह एक दुर्लभ अभ्यास था। यह सांस के बारे में था, और सांस लेने के तरीके या सांस न लेने के तरीके के बारे में था - लूओ यहां भ्रमित हो रहा था और उसे सब कुछ बहुत अस्पष्ट और समझने में मुश्किल लग रहा था - और ध्यान और एकाग्रता और आंतरिक चेतना और आसनों के बारे में था, जैसा कि महाराज समझाते रहे।

आश्रम के हिंदू भिक्षुओं के एक समूह ने नर्मदा नदी की परिक्रमा करने का निश्चय किया और महाराज ने उनके साथ चलने के लिए उस संत से अनुमति मांगी। उन्होंने कहा कि अंततः उन्हें अपना उद्देश्य मिल गया था, क्योंकि साथी तीर्थयात्रियों के साथ पवित्र तीर्थस्थलों और धार्मिक स्थलों पर पैदल चलना परम आनंद का अनुभव था। नर्मदा नदी की पैदल तीर्थयात्रा में कई दिन या शायद दो महीने लग गए थे - लूओ को यह विवरण याद नहीं है - और महाराज को एहसास हुआ कि वे अब आश्रम की रसोई में नहीं रह सकते। नर्मदा की परिक्रमा कर रहे आश्रम के एक भिक्षु ने महाराज को कैलाश पर्वत और शाश्वत शिव के निवास स्थान के बारे में बताया।

आश्रम के साधु ने समझाया था कि कैलाश परिक्रमा भक्ति की पराकाष्ठा है और शिव के सबसे निकट पहुंचने का एकमात्र साधन है। यह सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण है। साधु को पूर्ण विश्वास था कि महाराज कैलाश पहुंचने या परिक्रमा करने का सपना भी नहीं देख सकते। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि महाराज की हथेली की रेखाओं में लिखा है कि वे कुछ भी नहीं बन पाएंगे और किसी भी प्रकार की महानता प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इस स्पष्ट अस्वीकृति ने उन्हें प्रेरित किया था और उन्होंने इस बारे में साधु से शिकायत की थी।

वह संत दयालु और समझदार थे। उन्होंने महाराज को बताया था कि कैलाश परिक्रमा अंतिम परीक्षा नहीं है। असली चुनौती कैलाश पर्वत के चारों ओर 108 कोरा (यानी पवित्र शिखर के चारों ओर 108 बार परिक्रमा) पूरी करना है। यदि कोई इसे पूरा कर ले और हठ योग के माध्यम से ध्यान और एकाग्रता का कड़ाई से पालन करे, तो उसे कैलाश पर्वत की छिपी हुई पहाड़ियों में स्थित नाथ योगियों के गुप्त संप्रदाय में प्रवेश मिल सकता है। उन्होंने अपने उद्देश्य को समझ लिया था और अपने समय की प्रतीक्षा में शिकुआनहे आ गए थे। उन्होंने कहा कि वे हर साल लगभग पाँच कोरा पूरी करते हैं, लेकिन अगले साल वे और अधिक करेंगे।

***

दर्रा देखते ही दादाजी ने "द्रोल्मा ला!" चिल्लाकर अपने पोते की ओर इशारा किया। दादाजी के उत्साह को देखकर युवक मुस्कुराया और सोचने लगा, "ऐसा हर बार होता है।" वे दारचेन से लौट रहे थे और कांग रेनपोचे पर्वत के नीचे पहाड़ी दर्रे पर बादल घिर रहे थे। येशे को आने वाली बारिश की चिंता सता रही थी। साल के इस समय में इतने घने बादलों का इकट्ठा होना असामान्य था। कोरा का क्या होगा? कोरा पर चलने वाले तीर्थयात्री बारिश से बचने के लिए क्या करेंगे? सबसे महत्वपूर्ण बात, दिरापुक में हर साल लगने वाली दुकान और शिविर स्थल का उनके माता-पिता क्या करेंगे?

येशे अपने दादा सांग्ये के साथ लौट रहे थे, जिन्हें "महान पुराने किन्हाई घुमंतू घुड़सवार" के नाम से भी जाना जाता था। अपने भरोसेमंद खच्चरों पर सवार होकर वे चार याक लाद रहे थे, जिन पर व्यापारिक सामान, खाने-पीने की चीजें, दवाइयों के डिब्बे, माचिस और नमक (सबसे ज़रूरी) लदे हुए थे। साथ ही, तीर्थयात्री कांग रेनपोचे के चारों ओर परिक्रमा करते समय उनसे खरीदी गई धार्मिक यादगार वस्तुओं से भरे बक्से भी थे। बज़ानबा और कांगरी, तिब्बती मास्टिफ़ नस्ल के कुत्ते, जो इस विशाल पर्वत के पथरीले रास्तों पर अपना काम बखूबी जानते थे, याकों को हांक रहे थे। सांग्ये परिवार के दिरापुक आने के बाद से ये कुत्ते कई वर्षों से कुशलतापूर्वक ये काम करते आ रहे थे।

बूढ़े व्यक्ति ने कुत्तों को स्नेह से देखा। वह उनके माता-पिता, दादा-दादी, परदादा-परदादी और परनाना-परनानी को जानता था। आखिर, क्या वह किन्हाई और नागरे प्रांतों में तिब्बती मास्टिफ़ की त्सांग खी नस्ल के पवित्र संरक्षक के रूप में प्रसिद्ध नहीं था? बज़ानबा और कांगरी, दोनों ही त्सांग खी नस्ल के असली वंशज थे, हालांकि वे किन्हाई प्रांतों और दारचेन-शिक्कानहे क्षेत्रों के नहीं थे। त्सांग खी नस्ल कुओमाई, जियाझा सानरू, कुओना और लोंगज़ी क्षेत्रों में पाई जाती थी। मास्टिफ़ के यूरोपीय प्रेमी, और कभी-कभार रूसी प्रेमी, आमतौर पर दिरापुक में अपने किराए के शिविर स्थलों पर कुछ और दिन रुक जाते थे, बूढ़े व्यक्ति से मास्टिफ़ के बारे में जानने की इच्छा रखते थे और यह उम्मीद करते थे कि क्या वह उनके पिल्लों को बेचने के लिए तैयार होगा। येशे और उनके माता-पिता के लिए, बज़ानबा, कांगरी और अन्य दो त्सांग ख्यी मास्टिफ़ कुत्ते बेहद वफ़ादार रखवाले और मददगार थे, जो उनके याक, खच्चर, टट्टू और किन्हाई घोड़ों की देखभाल करते थे, जिन्हें वे ज़ांडा के पास त्सापरंग से अपने साथ लाए थे। हर साल, सांग्ये अपने परिवार के साथ कांग रेनपोचे के पास जाते थे, ताकि दिरापुक में अपना व्यापारिक केंद्र, शिविर स्थल और दुकान स्थापित कर सकें। कोरा मार्ग के पड़ावों तक पहुँचने में उन्हें कई दिन और कई पड़ाव लगते थे। वे आमतौर पर दिरापुक की पहाड़ियों की चट्टानों और दीवारों के बीच, रास्ते से दूर, ऊँचाई पर अपनी छोटी सी बस्ती बसाते थे। उनकी दुकान लगभग द्रोल्मा ला दर्रे के स्तर पर थी, और इस विशाल समतल निर्जन क्षेत्र में साफ़ रातों में, देर शाम को तेज़ी से रास्ते पर चल रहे तीर्थयात्रियों के लिए उनकी रोशनी एक स्वागत चिह्न के रूप में दिखाई देती थी।

वर्षों से, दिरापुक के स्थानीय लोगों ने उस महान बुजुर्ग के लिए जगह बना ली थी और उनके आगमन को क्षेत्र के व्यापार के लिए शुभ संकेत मानने लगे थे। सांग्ये का क्षेत्र में बहुत सम्मान था, हालांकि वह केवल एक घुमंतू घुड़सवार थे और तिब्बत में घोड़ों का प्रजनन, पालन-पोषण और बिक्री करना उनका व्यवसाय था। उन्होंने

तिब्बती मास्टिफ़ नस्ल के घोड़ों को कभी विदेशियों को नहीं बेचा, क्योंकि तिब्बत से बाहर इस नस्ल को जाने देना उनकी धार्मिक मान्यताओं के विरुद्ध था। मास्टिफ़ नस्ल तिब्बत में जीवित बुद्धों के साथ आई थी। कुछ मठों में जीवित बुद्धों के साथ इनकी पूजा की जाती थी। येशे को संदेह था कि उस बुजुर्ग का एक गुप्त नेटवर्क था जिसके माध्यम से वह हर बार नए पिल्लों के आने पर उन्हें विश्वसनीय संरक्षकों और नस्ल-रक्षकों को वितरित करता था।

पैदल चलने के बजाय खच्चरों पर सवार होकर वे जल्दी पहुँच गए। याक अपने मालिकों द्वारा पीछा किए जाने से बचने के लिए पैदल चलना पसंद करते थे। वे मास्टिफ़ कुत्तों पर नज़र रखने का नाटक करते प्रतीत होते थे, लेकिन येशे जानता था कि वे सभी अच्छे दोस्त थे। अपने माता-पिता द्वारा चलाई जा रही दुकान के पास विश्राम कर रहे तीर्थयात्रियों के समूहों को देखकर वह प्रसन्न हुआ। यहाँ हर तरह के लोग थे, जो दिरापुक में तीर्थयात्रा मार्ग से दूर ऊँची जगह पर विश्राम करने की बुद्धिमत्ता को जानते थे। धीमी गति से बहने वाली पहाड़ी धाराएँ और दिखने में शांत दलदली ज़मीनें तूफ़ानी रात के बाद खतरनाक हो सकती थीं। पूरे क्षेत्र से गरीब तिब्बती तीर्थयात्री समूहों में थे, जिन्होंने अपने सदस्यों को रात के लिए अपने साझा विश्राम स्थल के बारे में बताने के लिए अपने झंडे ऊँचे लहराए हुए थे। इसके विपरीत, धनी स्कैंडिनेवियाई पर्वतारोही और यात्री भी थे जिन्होंने उन्हें दिए गए बाड़ों में अपने तंबू लगाए थे।

भारत से आए हिंदू और बौद्ध तीर्थयात्री अपनी-अपनी टूर कंपनियों द्वारा लगाए गए बड़े-बड़े तंबुओं में इकट्ठा हुए थे। ये तंबू मौसम की शुरुआत में लगाए गए थे, और कंपनियां तीर्थयात्रियों के नए-नए समूह लाती रहीं, कभी-कभी एक हफ्ते में दो समूह, और मौसम ठीक रहने पर कभी-कभी तीन समूह भी। उनका अपना खाना पकाने का तरीका था और वे अपने रसोइये और सहायक भी साथ लाए थे। यूरोपीय लोग अपने नूडल्स, दालें, मांस, मछली और पानी लाए थे और बर्तनों का इस्तेमाल करते थे और येशे की मां को उनके लिए खाना पकाने की अनुमति देते थे। तिब्बती तीर्थयात्री अपने खाने-पीने का सामान थैलों में लाए थे और शिविर स्थल पर बने अस्थायी खाना पकाने के क्षेत्रों में अपना खाना पकाते थे।

येशे ने अपने पिता द्वारा आगमन पर किराए पर लिए गए डार्चेन लड़कों की मदद से याकों से सामान उतारना शुरू किया। वे अपने खाना पकाने के तंबू के पीछे चट्टान की दीवार से सटे मुख्य भंडारण शेड में जल्दी-जल्दी अंदर-बाहर आते-जाते रहे। सामान से मुक्त होने के बाद, बूढ़ा व्यक्ति याकों को रात के लिए बाड़े और अस्तबल में ले गया। बूढ़े व्यक्ति ने सोचा कि इस अजीब रात में उन्हें चरने के लिए इधर-उधर जाने से रोकना ही बेहतर होगा। उसने मास्टिफ़ कुत्तों के खाने और पानी के बर्तनों को अस्तबल की गहरी दीवारों के पास रख दिया ताकि वे रात भर याकों, खच्चरों, टट्टुओं और घोड़ों के साथ एक ही जगह पर रहें।

त्सापरंग से आने पर, येशे के माता-पिता दारचेन गए और गाँव की बस्ती से कुछ सहायक लड़कों और लगभग दस महिलाओं को काम पर रख लिया। सभी दस महिलाएँ वृद्ध थीं और उनमें से कुछ विधवाएँ थीं, जबकि अन्य बेहद गरीब परिवारों से थीं। ये लड़के और महिलाएँ येशे के माता-पिता और उस बुजुर्ग व्यक्ति के साथ दिरापुक में उनके शिविर में रहने लगे। महिलाएँ तंबू लगाने की जगह की सफाई करती थीं, कूड़ा उठाती थीं,

मिट्टी को समतल करती थीं, याक और खच्चरों को चारा खिलाती थीं और तीर्थयात्री समूहों के छोटे-मोटे कामों में मदद करती थीं। प्रत्येक महिला बारी-बारी से तीर्थयात्रियों के एक समूह को अपने साथ ले जाती थी, चाहे वे गरीब हों या अमीर।

कुछ साल पहले, येशे के माता-पिता ने दारचेन के कुछ राजमिस्त्रियों से पहाड़ी ढलानों पर चट्टानी इलाकों से सटे हुए, बंकर जैसे दिखने वाले, सपाट छत वाले पत्थर के घर बनवाए थे। इन पत्थर के घरों में वे खाने-पीने का सामान और अन्य ज़रूरी चीज़ें रखते थे, जो पूरे पर्यटन सीजन के लिए ज़रूरी थीं। पिछले तीन सालों से, येशे की माँ ने एक पत्थर के घर में बत्तखें पालना शुरू कर दिया था ताकि वे अंडे इकट्ठा करके बेच सकें। त्सापरंग से आते-जाते समय, वे शिकुआनहे या दारचेन से उपलब्धता और कीमत के हिसाब से लगभग बीस बत्तखें खरीदते थे। बत्तखों को टोकरियों में भरकर याक पर लादकर दिरापुक लाया जाता था।

बुजुर्ग महिला सहायकों में से एक येशे के लिए गरमा गरम सूप और मक्खन लगी गेहूं की रोटी लेकर आई। वह पास ही में चार तीर्थयात्री महिलाओं से बातें कर रही थी, जबकि येशे तूफानी रात के लिए शिविर स्थल को व्यवस्थित करने के अपने काम से थोड़ी देर के लिए आराम कर रहे थे। वे उनकी बातचीत का अंदाज़ा लगा सकते थे। वे कांग रेनपोचे पर्वत के बारे में बात नहीं कर रही थीं। वे अपने पड़ोस की उन गाँव की लड़कियों के बारे में चर्चा कर रही थीं जिनकी शादी येशे से की जा सकती थी और उस महान बुजुर्ग से अनुमति कैसे प्राप्त की जाए। बुजुर्ग महिला सहायक बातचीत के दौरान मुस्कुराई और कटोरा और प्लेटें लेने के लिए जल्दी से येशे के पास वापस गई और उन्हें जानबूझकर कोहनी मारी, मानो शादी पहले ही तय हो चुकी हो।

यह चर्चा हर रात होती थी और वह जानता था कि तिब्बती तीर्थयात्रियों के स्नेह का सम्मान कैसे करना है। वह यह भी जानता था कि यह इतना आसान नहीं होगा क्योंकि ये तीर्थयात्री तिब्बत के विभिन्न हिस्सों से आए थे और प्रत्येक क्षेत्र एक दूसरे से बिल्कुल अलग था। येशे और उसका परिवार किन्हाई के मैदानों से आए घुमंतू घुड़सवार थे और याक के बालों से बने तंबुओं में घूमने के अलावा उन्हें कोई और जीवन नहीं पता था। दिरापुक में ही उन्होंने एक व्यवस्थित बस्ती बसाई थी। त्सापरंग में, वे अपने याक के बालों से बने तंबुओं में ही रहते थे, जबकि यह पूरी बस्ती, अस्तबल, शेड और अन्य सामान पैक करके दारचेन में एक महिला सहायक के परिवार की देखरेख में छोड़ दिया जाता था। येशे के माता-पिता उस महिला को अच्छी खासी रकम देते थे और वह उनके भरोसे को तोड़ने की कोशिश नहीं करती थी। फिलहाल, तेजी से आती तूफानी रात ही उनके सभी विचारों और चिंताओं में सबसे ऊपर थी। येशे ने शिविर स्थल, अस्तबल और तंबू वाले भोजनालय और दुकान का अच्छी तरह से जायजा लिया। तिब्बती मास्टिफ़ नस्ल का विशालकाय कुत्ता बज़ानबा भी इधर-उधर देख रहा था, जाहिर तौर पर उसे येशे पर भरोसा नहीं था कि वह अपना काम ठीक से करेगा। भोर होते ही पता चलेगा कि रात में क्या होने वाला है।

द्वितीय

वे चट्टानों के बीच चुपचाप बैठे रहे, तीर्थयात्रियों के उस समूह को देखते रहे जो सूर्यास्त से पहले दिरापुक गोम्पा पहुँचने के लिए उत्सुक थे, ताकि गुरु रिनपोचे के आगे की घाटी में अंधेरा छाने से पहले वे वहाँ पहुँच जाएँ। अन्य तीर्थयात्रियों ने उन पर ध्यान नहीं दिया और न ही किसी ने कोरा के इस समूह के बारे में कुछ कहा। वे लगभग बारह लोग थे, जो पिछले वर्ष के शिविर स्थल और उसके बचे हुए चट्टानी घेरे के बीच शांतिपूर्वक पालथी मारकर बैठे थे। कुछ देर पहले खच्चरों और याकों के साथ गुजर रहे तीर्थयात्रियों के एक समूह ने उन्हें दोपहर का भोजन और सूप बनाते हुए देखा था। बारह तीर्थयात्रियों का यह समूह दोपहर से उसी स्थान पर बैठा था।

वह समूह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। उन्होंने अन्य तिब्बती तीर्थयात्रियों की तरह ही वस्त्र धारण किए हुए थे, और उनमें कोई अन्य अंतर नहीं था। ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके बीच एक साधु था, जो हाथ में ढोल घुमाते हुए धीमी आवाज़ में भजन गा रहा था। वह ढोल की थाप के साथ भजन की एक पंक्ति गाता, और तीर्थयात्रियों का समूह उसी धीमी आवाज़ में उस पंक्ति को दोहराता। शब्द तो सुनाई नहीं दे रहे थे, लेकिन भक्ति भाव स्पष्ट था।

उनके कपड़े कई दिनों से पहने होने के कारण गंदे और बिना धुले थे। उनमें से कुछ ने फर के कोट पहने हुए थे, जो मैले और बदबूदार थे। वे सभी उस क्षेत्र की भीषण ठंड के लिए तैयार थे और खुले में बैठने में उन्हें कोई परेशानी नहीं थी। वे समूह में आपस में बात नहीं कर रहे थे। उनके पास जो थोड़े से बैग थे, उनमें केवल बुनियादी ज़रूरत की चीज़ें ही थीं। समूह के कुछ सदस्यों के पास विंडचीटर और जैकेट थे, जो उन्होंने उन शहरों और गांवों के बाज़ारों से खरीदे थे, जहाँ से वे गुज़रे थे।

वे पूर्वी तिब्बत के खम्पा तीर्थयात्रियों जैसे नहीं लग रहे थे, हालांकि उनके कपड़े उन्हीं की तरह थे। वे अस्थायी तंबू में बने चाय के स्टॉल पर नहीं रुके थे, जहाँ अधिकांश अन्य तीर्थयात्री बिना किसी पूर्व विराम के विश्राम करते थे। ये बारह लोग चाय के तंबू में विश्राम कर रहे तीर्थयात्रियों के बीच से गुजरे, तंबू के बाहर रखी बाल्टियों से पानी की कुछ बोतलें भरीं और चुपचाप दिरापुक गोम्पा की ओर चल दिए। पूर्वी तिब्बत के अन्य तिब्बती बौद्ध तीर्थयात्री चाय के तंबू के पास छोटे-छोटे समूहों में बैठे थे, और उन्होंने इस समूह को उत्सुकता से देखा, क्योंकि उन्होंने एक-दूसरे को नमस्कार नहीं किया था। समूह में मौजूद साधु ने तंबू के पास विश्राम कर रहे तिब्बती बौद्धों के विभिन्न समूहों में मौजूद अन्य साधुओं की ओर देखा तक नहीं।

बारह लोग अब तीर्थयात्रियों के चलने के रास्ते से कुछ दूरी पर ऊँची जगह पर बैठे थे। दूर से चोकु मठ दिखाई दे रहा था। बारह लोगों के समूह में मौजूद एक साधु ने कहा कि मठ में कोई नहीं दिख रहा था क्योंकि खिड़कियाँ अँधेरी थीं और अंदर से कोई रोशनी नहीं आ रही थी। वे ग्रैचोम न्गाग्ये डोरसा नामक ऊँचे रास्ते से चलकर पत्थरों के इस घेरे तक पहुँचे थे। बहुत कम तीर्थयात्री इस रास्ते से जाना पसंद करते थे क्योंकि यह अशुभ माना जाता था और कहा जाता था कि यहाँ राक्षस और बुरी आत्माएँ रहती हैं जो तीर्थयात्रा कर रहे तीर्थयात्रियों को परेशान करने की हिम्मत नहीं करती थीं।

सेरशोंग थारचेन के पास स्थित ग्राचोम न्गाग्ये दोर्सा, कांग रेनपोचे के निकट अनुमत कुछ आकाश-समाधि स्थलों में से एक है। कहा जाता है कि यह स्थल हजारों वर्षों से अस्तित्व में है। बारह तीर्थयात्रियों के समूह ने समाधि स्थल पर कोई श्रद्धा अर्पित नहीं की, बल्कि चुपचाप, स्थिर गति से चलते हुए, चोकु की ओर जाने वाले ऊंचे रास्ते को चुना। मठ से एक घंटे की धीमी पैदल यात्रा के बाद वे अब बैठे थे। एक घंटे में या उससे पहले ही अंधेरा हो जाएगा, यदि इस घाटी में तूफानी बादल तेजी से छा गए। धीमी गति से बहने वाली जलधाराएँ बाद में गति पकड़ सकती हैं और पैदल मार्ग को अवरुद्ध कर सकती हैं। चोकु की ओर ऊंचे ढलानों पर तीर्थयात्रियों के तंबुओं से दिखाई देने वाली हल्की रोशनी के साथ अंधेरे में चलना खतरनाक हो सकता है। आमतौर पर तीर्थयात्रियों की सहायता के लिए चोकु मठ की खिड़कियाँ रोशन रहती थीं।

चोकु मठ में ऐसा नहीं था। भिक्षुओं ने अभी तक खिड़कियों में रोशनी नहीं जलाई थी और वे ऐसा करने आए थे। एक भिक्षु ने चोकु से दिरापुक की ओर जाने वाले ऊपरी रास्ते पर पत्थरों के घेरे में बैठे बारह तीर्थयात्रियों के एक समूह को देखा। तीर्थयात्रियों के रास्ते पर भारी बारिश आने वाली थी, और आज रात ओलावृष्टि भी हो सकती थी। अधिकांश तीर्थयात्री तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। कुछ समूह मठ तक आ गए थे और बाहर बने आश्रयों में शरण ले ली थी। कुछ तीर्थयात्री समूहों ने सबसे बुरे हालात की आशंका से दिन में बहुत पहले ही अपने तंबू लगा लिए थे। इसलिए तीर्थयात्रियों के एक समूह को खुले स्थान पर बैठे देखना, मानो बारिश का इंतज़ार कर रहे हों, एक बहुत ही विचित्र दृश्य था।

युवा भिक्षु ने अन्य दो भिक्षुओं को खिड़की के पास बुलाया और खुले में बैठे बारह तीर्थयात्रियों के समूह की ओर इशारा किया। एक युवा भिक्षु ने सुझाव दिया कि उन्हें एक तिब्बती मार्गदर्शक को खच्चर पर बिठाकर भेजना चाहिए ताकि वह पता लगा सके कि क्या समूह किसी मुसीबत में है और क्या उन्हें मदद की ज़रूरत है। वरिष्ठ भिक्षु ने मना कर दिया और तीर्थयात्रियों को देखते रहे। अचानक ही वरिष्ठ भिक्षु ने एक बूढ़े तिब्बती मार्गदर्शक को आवाज़ दी जो तीर्थयात्रा के मौसम में अक्सर चोकु मठ के पास रहता था। यह बूढ़ा मार्गदर्शक, जो अब अस्सी वर्ष का था, लेकिन बहुत ही चुस्त और उत्साही था, मठ के हॉल को पार करते हुए तेज़ी से खिड़की तक आया।

वरिष्ठ भिक्षु ने खुले में बैठे बारह तीर्थयात्रियों के समूह की ओर बूढ़े तिब्बती मार्गदर्शक का ध्यान दिलाया। बूढ़े ने समूह को ध्यान से देखा और उदास भाव से सिर हिलाया। बाकी दो भिक्षु हैरानी से देखते रहे। सबसे छोटे भिक्षु ने पूछा, “हे गुरुदेव, आप इतने उदास क्यों लग रहे हैं? क्या आप उन मूर्ख तीर्थयात्रियों के समूह को जानते हैं? क्या वे रात भर बारिश में बैठे रहेंगे? क्या उनकी मूर्खता आपको उदास कर रही है?”

वरिष्ठ भिक्षु ने कोई उत्तर नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने बूढ़े तिब्बती मार्गदर्शक से कहा, “दावा, मेरे मित्र, हमने पहले ऐसी घटना कब देखी थी? क्या यह ठीक उसी स्थान पर नहीं हुई थी?” बूढ़े ने सिर हिलाया और समूह की ओर ध्यान से देखा, काफी देर तक देखते रहे और उत्तर दिया, “जी हाँ, गुरु रिनचेन। ऐसा ही हुआ था। ऐसा लगता है कि यह हर तीन से पाँच साल में एक बार होता है। चोकु में आपके समय में यह लगभग तीन बार हो चुका है।” वरिष्ठ भिक्षु, गुरु रिनचेन ने सहमति जताते हुए कहा, “जी हाँ। मैंने इसे पहले तीन बार होते

देखा है। यह आमतौर पर तीन या पाँच साल के अंतराल के बाद होता है। मुझे आश्चर्य है कि वे कैसे तय करते हैं कि यह इसी वर्ष होगा, और वर्ष के इसी समय होगा, और वे ठीक उसी स्थान का चयन करेंगे।"

युवा भिक्षु पहले से भी अधिक असमंजस में थे। गुरुदेव तीर्थयात्रियों के समूह के बारे में उनके अनकहे सवालों को जानते हुए बोले, "मेरे भाइयों, यह एक बहुत ही असामान्य घटना है। आप इसे पहली बार देख रहे हैं। आपको क्या लगता है कि ये कौन हैं? क्या आप अनुमान लगा सकते हैं और मुझे बता सकते हैं कि आज क्या होने वाला है?" युवा भिक्षु ने फिर से समूह की ओर देखा और उत्तर दिया, "गुरुदेव, उनके पहनावे और रूप-रंग से ऐसा लगता है कि वे पूर्वी तिब्बत के बौद्ध खम्पा तीर्थयात्री हैं। वे शायद विश्राम कर रहे हैं या एक साथ प्रार्थना कर रहे हैं, महान पर्वत की चोटियों पर वर्षा के बादलों के एकत्र होने का साक्षी बनना चाहते हैं। वे शायद बाद में दौड़ेंगे या उस स्थान पर तंबू लगाएंगे।"

यह बूढ़ा तिब्बती गाइड दावा था, जिसने उदास मुस्कान के साथ जवाब दिया, "नहीं। नहीं। वे बिल्कुल भी खम्पा नहीं हैं। हमने पहले भी इस जगह की तलाशी ली है। वे कहीं और से आए हैं। वे निश्चित रूप से तिब्बती नहीं हैं, लेकिन वे ल्हासा की ओर से आने वाले स्थानीय बौद्ध तीर्थयात्रियों की तरह कपड़े पहनने की बहुत कोशिश करते हैं। हमें नहीं पता कि वे कहाँ से हैं। हर बार जब वे दिखाई दिए हैं, मैंने पत्थरों के घेरे और आस-पास के रास्तों पर उनके बारे में कोई सुराग खोजने में बहुत समय बिताया है। हमें नहीं पता कि वे कहाँ से आते हैं। वे रात भर यहीं बैठे रहते हैं और आमतौर पर तूफानी रात में, जैसे कि आने वाली रात। वे रात को जानते हैं और चुनते हैं और इस जगह पर आते हैं। सुबह तक वे गायब हो जाते हैं। उन्हें कभी भी दारचेन वापस जाते या दिरापुक की ओर आगे बढ़ते हुए नहीं देखा गया है। वे अन्य रास्तों पर भी नहीं दिखाई देते। वे सुबह गायब हो जाते हैं। किसी ने भी उन्हें दिन के समय किसी भी स्थानीय रास्ते, कस्बे या गाँव में नहीं देखा है।"

"हमने आस-पास के गांवों में पूछताछ की। हमने अन्य तीर्थयात्रा गाइडों, पुलिसकर्मियों और अन्य तीर्थयात्री समूहों से बात की। हमने दारचेन से ल्हासा की ओर जाने वाली सड़कों पर स्थित मठों और अन्य गेस्ट हाउसों में भी पूछा। कोई खबर नहीं मिली," वरिष्ठ भिक्षु ने कहा। "ऐसा लगा जैसे वे गायब हो गए हों। हमें अक्सर कांग रेनपोचे पर्वत पर चढ़ने की कोशिश करने वाले लोगों की खबरें मिलती रहती हैं, और वे अलग-अलग समुदायों से होते हैं। लेकिन, आमतौर पर, हमें इसकी जानकारी पहले से ही मिल जाती है, और पुलिस चौकियों को सभी तीर्थयात्री गाइडों और भोजनालय मालिकों से मिली-जुली जानकारी से पता चल जाता है। इन साहसी लोगों को पर्वत पर चढ़ने से मना कर दिया जाता है। उन्हें कोरा करने और अपनी तीर्थयात्रा पूरी करने की अनुमति दी जाती है। यह कोई पर्यटन स्थल नहीं है। यहां आने वाले अधिकांश आगंतुक भक्ति भाव से आते हैं। यह सर्वोच्च और परम तीर्थयात्रा स्थल है। लेकिन यह समूह जो तीन से पांच साल में एक बार आता है, एक रहस्य है। वे रास्ते से गायब हो जाते हैं।"

***

वे धैर्यपूर्वक बैठे, प्रार्थना के भजन गुनगुनाते हुए, अपने गुरु के मार्गदर्शन में, आते हुए तूफान को देखते रहे। बारह तीर्थयात्री पत्थरों के घेरे के भीतर बैठे रहे और शाम के धुंधलके को अपने ऊपर छाते हुए देखते रहे। अंतिम तीर्थयात्री दिरापुक गोम्पा की ओर दौड़े और पथरीले इलाके में भागते हुए दिखाई दिए, मानो रात के लिए कोई सुरक्षित आश्रय पाने की उम्मीद कर रहे हों। तीर्थयात्रा का मार्ग अब पूरी तरह सुनसान था। दूर से बारिश की आवाज और गंध सुनाई दे रही थी, और शाम की धीमी हवाएं अपने साथ रात के सन्नाटे का आभास लेकर आ रही थीं। बारह तीर्थयात्री अपने बैठे हुए घेरे से हिले तक नहीं। वे खुले में बैठे रहे और उन्होंने तंबू या अस्थायी आश्रय बनाने का कोई प्रयास नहीं किया।

चोकु मठ के सबसे युवा भिक्षु, ब्रदर तमांग, खिड़की से दूर नहीं जा सके। वरिष्ठ गुरु ने उन्हें खिड़कियों में रोशनी करने की अनुमति नहीं दी थी। युवा भिक्षु ऊपरी रास्ते पर बैठे बारह तीर्थयात्रियों के समूह को देखते रहे। उन्होंने कोई दीपक नहीं जलाया था और ऐसा लग रहा था मानो वे धैर्यपूर्वक बैठे हों, तेज़ी से आते अंधेरे की प्रतीक्षा कर रहे हों। यदि उन्हें पता न होता कि वे उस स्थान पर बैठे हैं, तो युवा भिक्षु उन्हें खोजते भी नहीं। वह मुश्किल से ही उनके छोटे से समूह को, फर की टोपियों के साथ, एक परछाई के रूप में देख पाए, जो चोकु और दिरापुक के बीच की ढलानों पर शुरू हुई हल्की फुहार की चमक में दिखाई दे रहा था। बारह तीर्थयात्रियों का वह समूह बिना हिले-डुले वहीं बैठा रहा।

तिब्बती धर्मगुरु दावा, जो उम्रदराज थे, वरिष्ठ गुरु के साथ खिड़की के पास बैठे थे। उन्होंने बुद्ध की एक छोटी मूर्ति के पास दो मोमबत्तियाँ जलाई थीं और प्रार्थना कर रहे थे। दूसरे युवा भिक्षु ने प्रार्थना कक्ष के दूसरे छोर पर स्थित बुद्ध की दूसरी छोटी मूर्ति के पास दो मोमबत्तियाँ जलाई थीं। वह चुपचाप प्रार्थना कर रहे थे। दावा सीधे बैठ गए और वरिष्ठ गुरु से बातचीत करते हुए बोले, “हम सौभाग्यशाली हैं, भले ही हम अकेले हैं। आपका पवित्र कर्तव्य है कि आप दिन-रात, गर्शा से आई बुद्ध प्रतिमा के रूप में परम प्रबुद्ध व्यक्ति की आराधना करें। हम सचमुच धन्य हैं।”

दावा द्वारा गर्शा से लाई गई बुद्ध प्रतिमाओं के संदर्भ में कही गई इस बात पर तीनों भिक्षुओं ने प्रार्थना में सिर झुकाया। वरिष्ठ भिक्षु, मास्टर रिनचेन ने सिर हिलाते हुए कहा, “हे दावा, मेरे पुराने मित्र, तुम सही कह रहे हो। हम सचमुच धन्य हैं। लेकिन फिर भी, यह एक अपूर्ण आशीर्वाद है। यदि हमें अन्य तीन प्रतिमाओं के बारे में पता होता, तो यह पूर्ण आशीर्वाद होता। गर्शा में पाँच प्रतिमाएँ थीं। हमारे पास यहाँ केवल एक ही है। कहा जाता है कि एक और प्रतिमा गर्शा में है। तीन प्रतिमाएँ खो गई हैं और उनके ठिकाने का कोई पता नहीं है। जिस प्रतिमा की मेरे भिक्षु भाई पूजा करते हैं, वह चोकु में बची एकमात्र प्रतिमा है।”

सबसे युवा भिक्षु, भाई तमांग, गर्शा से मिली बुद्ध प्रतिमाओं की कहानी से परिचित थे। आखिरकार, वे स्वयं नेपाल की सीमा पर स्थित न्यालम के निकट तिब्बती गांवों से थे। इन गांवों में बुद्ध को समर्पित कुछ मंदिर अमिताभ बुद्ध और गर्शा से मिले बुद्ध की कथाओं को भी समर्पित थे। कहा जाता है कि पांच प्रतिमाएं गर्शा में एक दूध की झील में मिली थीं, जो न्यालम और नेपाल के दक्षिण में तथा सिक्किम के दक्षिण में स्थित है। गर्शा

के भिक्षुओं ने कुछ वर्ष पूर्व उन्हें भूटान लाया था, जब चोकु का मठ विनाश के खतरे में था। मठ का पुनर्निर्माण लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व हुआ था, और गर्शा से मिली बुद्ध प्रतिमाओं में से एक को वापस चोकु लाया गया था।
भाई तमांग उस जगह को देखते रहे जहाँ उन्हें पता था कि बारह तीर्थयात्री खुले में बैठे हैं। वे सोच रहे थे कि उन्होंने क्या योजना बनाई है या तूफानी रात में क्या होने की उम्मीद कर रहे हैं। दावा ने भाई तमांग की ओर देखा और कहा, "भाई, इसका कोई फायदा नहीं है। हमें बस इतना पता नहीं है कि वहाँ क्या होता है। वे तूफानी रात में बाहर बैठे रहते हैं। तूफानी रात की भविष्यवाणी से पहले वे पूरे क्षेत्र में कभी दिखाई नहीं देते। जैसे ही हमें पता चलता है कि इस तरह की बेमौसम भारी ओलावृष्टि आने वाली है, यह समूह तीर्थयात्रा मार्ग पर दिखाई देता है। और, सुबह तक वे गायब हो जाते हैं। बिना किसी सुराग के और बिना किसी ऐसी व्याख्या के जिसे हम समझ सकें।"
"कोई न कोई वजह तो होनी ही चाहिए। कोई न कोई कारण तो होना ही चाहिए। बिना किसी तर्क के हर बार ऐसा नहीं हो सकता। हमसे कुछ छूट रहा है। हमें कुछ करना होगा। आखिर क्या हो सकता है? ऐसा होना पहले से तय था। यह सब हमारी आंखों के सामने हो रहा है," भाई तमांग ने रास्ते में तीर्थयात्रियों को देखते हुए झुंझलाहट में कहा।
तेज़ बारिश शुरू हो गई थी। शाम ढल चुकी थी और ढल भी गई थी। बारह तीर्थयात्री पत्थरों के घेरे में बैठे रहे। चुपचाप उन्होंने अपने थैलों से काले रंग की प्लास्टिक की चादरें निकालीं और खुद को ढक लिया। पल भर में उनकी आकृति बदल गई। फर की टोपियाँ अब दिखाई नहीं दे रही थीं और बारह तीर्थयात्री अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में नज़र नहीं आ रहे थे। उन्हें ढकने वाली काली प्लास्टिक की चादरों ने उन्हें उस पत्थर के घेरे के बाकी लोगों जैसा बना दिया था जिसमें वे बैठे थे। प्रार्थना भजन की गुनगुनाहट तभी सुनाई देती थी जब कोई समूह के भीतर खड़ा होता, और उनके धर्मगुरु अपने हाथ में प्रार्थना ढोल घुमाते रहे।
उनके बीच कोई और बातचीत नहीं हो रही थी। वे एक-दूसरे से सटकर बैठे थे, मानो उन पर बारिश के साथ चलने वाली ठंड और ठंडी हवाओं का कोई असर नहीं हो रहा था। आसमान में कभी-कभार बिजली चमकती थी और ऊँची चोटियाँ जगमगा उठती थीं। बारिश में कांग रेनपोचे और भी अधिक तेजस्वी लग रहे थे। पत्थरों का घेरा मिट्टी से बनी एक मोटी और दबी हुई ज़मीन के चारों ओर बनाया गया था। तीर्थयात्रियों ने रात को सोने से पहले ज़मीन पर मोटी प्लास्टिक की चादरें बिछाई थीं। ऐसा लग रहा था मानो बारह तीर्थयात्री इस तेज़ सर्दियों जैसी हवाओं और भारी बारिश के आदी हो चुके थे। उनमें से किसी ने भी छींका, नाक बही या खाँसा नहीं।
चोकु मठ में, युवा भिक्षु, ब्रदर तमांग ने अनुमान लगाया कि बारह तीर्थयात्री बारिश में रात भर बैठने के लिए प्लास्टिक की चादरों से ढके होंगे। उन्होंने मठ के धुंधले प्रकाश वाले प्रार्थना कक्ष में चारों ओर देखा। हाथी के दांतों के जोड़े के पास अमिताभ बुद्ध की संगमरमर की प्रतिमा शांत भाव से खड़ी थी। मोमबत्तियों की रोशनी प्रार्थना कक्ष की छायाओं के साथ खेल रही थी और ऐसा लग रहा था मानो अमिताभ बुद्ध की प्रतिमा ब्रदर

तमांग से बात कर रही हो। वह श्रद्धापूर्वक प्रतिमा को निहारते रहे और उस स्थान की ओर देखते रहे जहाँ बारह तीर्थयात्री खुले में बैठे होंगे।

भाई तमांग ने एक निर्णय लिया। उन्होंने कहा, "गुरुजी, आप मेरे गुरु हैं और आप हमारे संप्रदाय के वरिष्ठों की ओर से बोल रहे हैं। हम तीनों पिछले कुछ वर्षों से अपने मठ में रह रहे हैं। हमें अपने मार्ग में सत्यनिष्ठा का पालन करना सिखाया गया है। अज्ञात के ज्ञान में ही हम अपने लक्ष्यों की खोज करते हैं। गुरुजी, आपने कहा है कि हमारे मठ में आपके रहने के दौरान ऐसा कम से कम तीन बार हुआ है। इन तीनों बार हमें पता नहीं चला कि हमारी खिड़कियों के सामने क्या हो रहा है। यह हमारी पवित्र भूमि है और कांग रेनपोचे हमारे देवताओं का निवास स्थान हैं।"

गुरु रिनचेन को आने वाले खतरे का डर सता रहा था, क्योंकि वे भाई तमांग की आँखों की चमक और तीक्ष्णता को समझ सकते थे। उन्होंने तमांग को अमिताभ बुद्ध की मूर्ति को निहारते हुए देखा था और अनुमान लगाया था कि युवा भिक्षु किसी समाधान की तलाश में है। गुरु ने उत्तर दिया, "मेरे युवा भाई, मैं तुम्हें तब से जानता हूँ जब तुम दीक्षा के लिए हमारे मंदिर आए थे। मैं तुम्हारी निष्ठा को जानता हूँ और तुम्हें स्वयं समझने से पहले ही मैं तुम्हें समझ सकता हूँ। कृपया बताइए, तुम्हारी क्या इच्छा है?"

युवा भिक्षु ने कृतज्ञतापूर्वक सिर झुकाया और कहा, "जी हे गुरु। आप मुझे भलीभांति समझते हैं। हमारे मठ के निकट एक ऐसी स्थिति है जिसके बारे में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं है। हम अपने घर और परिवार छोड़कर उस ज्ञान की खोज में अपने मंदिर में आए हैं जो समझना कठिन है और जो समझना अत्यंत आवश्यक है। परमप्रबुद्ध ने हमें सैकड़ों वर्षों में यह सिखाया है कि वही सम्राट है जो जानता है कि उसका कोई साम्राज्य नहीं है, परन्तु वह ज्ञान के मार्ग पर है और सदा उसकी खोज में लगा रहता है। हमारे मठ की खिड़कियों के ठीक बाहर एक पहेली है, और हम उसका हल खोजने का प्रयास नहीं करते।"

गुरु रिनचेन और दावा ने युवा भिक्षु की बुद्धिमत्ता पर सहमति जताते हुए सिर हिलाया। वे समझ सकते थे कि चोकु मठ के संरक्षक के जादू से उन्हें कितनी स्पष्टता मिली होगी। भाई तमांग ने आगे कहा, "हमें बारिश में बाहर जाना चाहिए। हमें बारिश से डरना नहीं चाहिए। हम बारिश, ठंड, हवाओं और अपने मठ के पास के रास्तों के आदी हैं। बाहर बैठे समूह को वह नहीं पता जो हमें पता है। उन्हें नहीं पता कि हम उन पर नज़र रख रहे हैं और पहले भी कई बार उनका अवलोकन कर चुके हैं। उन्हें नहीं पता कि हम ऊपर और नीचे के रास्तों को जानते हैं और अपने मठ के पास की ढलानों से भली-भांति परिचित हैं। हम इस क्षेत्र में घोर अंधेरे में भी चल सकते हैं। तो हमें किस बात का डर है? हमें बाहर जाकर यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि इस बारिश और रात के अंधेरे में क्या होता है। ये तीर्थयात्री ऐसी रात में क्यों गायब हो जाते हैं? गुरु नारोपा हमारी रक्षा करेंगे।"

***

मास्टर रिनचेन को जीवन के प्रवाह, घटनाओं के क्रम, ज्ञात और अज्ञात, तार्किक और रहस्यमय, विचित्र और परिचित, या कांग रेनपोचे के आसपास घटित होने वाली घटनाओं के दैवीय या अदैवीय स्वरूप में हस्तक्षेप करने का विचार पसंद नहीं था। उनका मानना था कि इस तरह की घटनाएं होनी ही थीं। उन्होंने युवा भिक्षु से धीमी आवाज़ में कहा, "भाई, मैं ज्ञान की आपकी खोज को समझता हूँ। लेकिन यह महान पर्वत का अद्भुत और अज्ञात संसार है जहाँ परम प्रबुद्ध व्यक्ति हजारों अरहतों के साथ आए थे और फिर भी उन्होंने कहा था कि इस स्थान के बारे में बहुत कुछ जानना और समझना बाकी है। इस संसार में घटनाओं के क्रम को बाधित करना हमारा काम नहीं है। हम उनमें भाग लेकर ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।"

"कांग रेनपोचे की छाया में स्थित इस जादुई ल्हाचू घाटी में असंख्य गुफाएँ हैं, जिनमें कई सिद्ध, संत, पवित्र आत्माएँ, राक्षस या दक्षिणी निवास करते हैं। हम नहीं जानते कि कौन क्या है। वे अपने-अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगे रहते हैं और किसी और के जीवन या उनके बारे में पूछताछ नहीं करते। वे यहाँ कई वर्षों से हैं। कहा जाता है कि कुछ तो सौ वर्षों से भी अधिक समय से यहाँ हैं," गुरु ने कहा और आगे कहा, "हम कौन होते हैं इन ल्हाचू घाटी के पहाड़ों में रहने वाले इन प्राणियों, आत्माओं और प्रेतों के बारे में कही गई बातों पर विवाद करने वाले? हम यहाँ धर्मकाया अमिताभ बुद्ध के साक्षात स्वरूप की पवित्र उपस्थिति में रहते हैं। कोई हमें परेशान नहीं कर सकता। इस घाटी में व्याप्त जीवन शैली और घटनाओं के क्रम को बाधित न करना हमारा कर्तव्य है।"

भाई तामेंग ने आदरपूर्वक सिर झुकाया। वह समझ सकते थे कि समस्त धर्मों में सर्वोपरि इस भूमि पर अपनी भावनाओं पर संयम रखना कितना आवश्यक है। कौन जानता था कि वे तीर्थयात्री यहाँ किस विशेष अनुष्ठान के लिए आए थे? शायद वे किसी दूसरे धर्म के हों। उनका वहाँ जाकर उन्हें परेशान करना गलत होता। लेकिन क्या होगा यदि पवित्र पर्वत और पवित्र घाटी का अपमान हो रहा हो? क्या उन्हें धैर्य बनाए रखना चाहिए और खुद को संयमित रखना चाहिए? क्या होगा यदि वे आतंकवादी हों? क्या उन्हें चुप रहना चाहिए? आजकल यह दुनिया विचित्र और हिंसक हो गई है। यह हान चीनी भी हो सकते हैं, जो कोरा की जासूसी करने या ल्हाचू घाटी के मठों को बदनाम करने वाली कोई अप्रिय घटना को अंजाम देने के लिए यहाँ डेरा डाले हुए हों।

नहीं। ऐसा नहीं होना था। उसे गुरु की अवज्ञा करने के लिए उनसे अनुमति लेनी होगी। उसने एक बार फिर घाटी में ऊंचे रास्ते की ओर देखा। बारिश तेज होती जा रही थी और दूर से गरजती हुई गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। कभी-कभी बिजली की कड़क पहाड़ों में दूर आसमान को रोशन कर देती थी। लाख कोशिश करने के बावजूद वह पत्थरों के घेरे या तीर्थयात्रियों को नहीं देख पा रहा था। हवा बहुत ठंडी होती जा रही थी और इस रात में पत्थरों और झरनों के बीच भटकने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह मौत के समान थी। पानी इतनी तेजी से जम रहा था कि जमीन पर उसका बहाव भी धीमा हो रहा था और वह बेहद फिसलन भरी थी।

युवा भिक्षु ने कहा, "गुरुजी, मुझे क्षमा करें, क्योंकि आप मेरे बारे में जो जानते हैं, उससे आप मेरी सत्य की पूर्ण खोज की इच्छा से अवगत होंगे। हमें जानना आवश्यक है। यह किसी और धर्म का हो सकता है और कोई ऐसा अनुष्ठान हो सकता है जिसे हमें बाधित नहीं करना चाहिए। लेकिन, इस घाटी में हम सब एक दूसरे से

किस प्रकार भिन्न हैं? हम सब यहाँ, कांग रेनपोचे की छत्रछाया में, एक ही सत्य के साधक हैं, और घटित होने वाली घटनाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यहाँ आने वाले सैकड़ों तीर्थयात्री हमारे प्रति आस्था रखते हैं और इस विश्वास के साथ आते हैं कि हम समय को इस स्थान को बदलने और उनकी प्रार्थना करने के अवसर को नष्ट करने नहीं देंगे। क्या पता बारिश में बैठे ये तीर्थयात्री गलत हों, बुरे हों, दुष्ट हों या राक्षसी हों? हमें जानना आवश्यक है।"

मास्टर रिनचेन ने सहमति में सिर हिलाया और उत्तर दिया, "मैं तुमसे सहमत हूँ, बालक। तुम नई पीढ़ी के हो, और यह तुम्हारी दुनिया है जिसकी देखभाल तुम्हें करनी है। मैं केवल एक संरक्षक हूँ जो तुम्हें तुम्हारी विरासत का नियंत्रण लेने की अनुमति देता हूँ। मैं तुम्हें ज्ञान से वंचित नहीं कर सकता। लेकिन इसे करने का एक और तरीका है। तुम मेरे पुराने मित्र, दावा को अपने साथ ले जाओ। मैं तुम्हें यह अकेले नहीं करने दे सकता। मुझे पता है कि तुम दोनों इन ढलानों को जानते हो और इस अंधेरी रात में पत्थरों के घेरे तक अपना रास्ता बना सकते हो। हम थोड़ी देर बाद इन खिड़कियों को रोशन कर देंगे, ताकि तुम सुरक्षित लौटने के लिए अपना रास्ता खोज सको। सुरक्षित और चुपचाप जाओ। हमें नहीं पता कि वहाँ क्या हो रहा है। मैं यहाँ वर्षों से हूँ, लेकिन मुझे इसका जवाब नहीं मिल पाया है, और यह पहले ही तीन बार हो चुका है। ये तीन घटनाएँ हैं जो हमने देखी हैं। कौन जानता है कि यह कितनी बार और हुआ होगा?"

दावा बारिश में बाहर जाने और रात में बाहर क्या होने वाला है, इसके जवाब खोजने के इस अवसर से बहुत खुश हुआ। वह पिछले तीन मौकों पर चूक गया था और सोच रहा था कि क्या यह अज्ञानता उसके साथ कब्र तक जाएगी। बाहर की दुनिया उसकी अपनी थी। कोरा की जानी-पहचानी दुनिया और इस घाटी में अज्ञात का कोई अस्तित्व नहीं था। उसे ऐसा महसूस होता था कि कोरा उसका अपना है। वह तीर्थयात्रा मार्ग के सबसे पुराने मार्गदर्शकों में से एक था। उसके पिता और दादा भी यही काम करते थे। उसके परिवार में किसी भी पुरुष के पास कभी कोई संपत्ति नहीं थी। वे अस्थायी झोपड़ियों, तंबुओं और शेडों में रहते थे या मठों में जैसे-तैसे गुजारा करते थे। उनकी महिलाएं गेस्ट हाउस, मठों और भोजनालयों में काम करती थीं। यह मार्ग ही उसकी दुनिया थी।

वे बारिश में बाहर जाने के लिए तैयार हो गए। बूढ़े तीर्थयात्री गाइड ने काले रंग की नायलॉन की रेनप्रूफ जैकेट और ट्रैक पैंट उठाईं। युवा भिक्षु ने अपने वस्त्रों के ऊपर काले रंग का नायलॉन का कोट ओढ़ लिया। वे मठ की इमारत से बाहर निकले और परिसर में खड़े हो गए, ताकि पत्थरों से बने मैदान पर बरसती बारिश का अंदाज़ा लगा सकें। ऊँची दीवारों वाले परिसर से वे सीढ़ियों से नीचे उतरे और रात के लिए आराम करने लगे। यह उनके लिए कोई नई बात नहीं थी। वे दोनों अक्सर रात में साथ-साथ घूमने निकल जाते थे, ताकि बैठकर कांग रेनपोचे के दर्शन कर सकें। ये सैर-सपाटे साफ रातों या पूर्णिमा की रातों में होते थे। वे हल्की बूंदा-बांदी में भी बाहर निकले थे और कभी-कभी अचानक हुई भारी बारिश में भी फंस गए थे। वे इन ढलानों के रास्तों से अच्छी तरह वाकिफ थे।

मठ की सीढ़ियों से उतरकर, वे दिरापुक पथ के दूसरी ओर, मठ की छाया में ढलान पर चढ़ने लगे। वे ल्हाचू घाटी की ओर ढलान पर स्थित एक ऊँचे रास्ते पर चढ़ गए, जिसके बारे में उन्हें पहले से ही जानकारी थी। ऊँची जगह पर होना और परिचित रास्ते पर चलना उन्हें अधिक सुरक्षित लगा। रास्ते पर पहुँचकर वे पत्थरों के घेरे की ओर स्थिर गति से चलने लगे। वे जानते थे कि इस रास्ते से वे किसी की नज़र में नहीं आ पाएँगे। इस वर्ष कुछ बड़े-बड़े पत्थर गिरे थे, जिनकी मदद से वे बारिश में बैठे तीर्थयात्रियों से ऊपर एक सुरक्षित स्थान पर पहुँच सकते थे। शायद वे ऊँचे रास्ते पर रुककर चुपचाप यह देख सकते थे कि आगे क्या होने वाला है, अगर वह घटना अभी तक घटित न हुई हो।

वहाँ पहुँचने में उन्हें लगभग तीस मिनट लगे। दावा को लगा कि वे पत्थरों के घेरे के ठीक ऊपर पहुँच गए हैं। उसने युवा भिक्षु को रोकने के लिए उसका वस्त्र खींचा। वे वहाँ पत्थरों के बीच बैठ गए, ताकि वे पत्थरों और ढलानों को देख सकें जो दूसरे रास्ते की ओर जाती थीं। कुछ समय लगा, लेकिन वे मुश्किल से ही सबसे नज़दीकी पत्थरों को देख पाए। दावा हर पत्थर के ढेर की बारीकी से जाँच करता रहा, यह देखने की कोशिश कर रहा था कि कहीं वे पत्थर तो नहीं हैं जिनकी उन्हें तलाश थी। वहीं, भाई तामेंग एक अलग रणनीति पर काम कर रहा था। उसे लगा कि वह जगह जानता है। वह मठ की खिड़की पर खड़े होकर ही इन ढलानों पर मौजूद निशानों को ध्यान से देख रहा था। वहाँ एक पुराना पत्थर का स्तूप था जिस पर पिछले वर्षों के दो प्रार्थना ध्वज लगे थे। उसने नाप लिया था कि पत्थरों का घेरा पत्थर के स्तूप से लेकर नीचे वाले रास्ते के पास बहने वाली पहाड़ी धारा तक सीधी रेखा में है।

वे सावधानी से पत्थर के स्तूप की ओर नीचे उतरे। बारिश की वजह से कोई शोर सुनाई नहीं दे रहा था, वरना किसी और रात इस शांत घाटी में वह शोर बहुत तेज़ और परेशान करने वाला होता। स्तूप के चारों ओर एक छोटी सी दीवार थी, और वे बारिश से बचने के लिए पत्थर की संरचना के पास आराम से बैठ गए। यहाँ उन्हें थोड़ी राहत मिली, और वे चुपचाप बैठकर इंतज़ार करने लगे। दावा ने अचानक इशारा किया, और अब वे लगभग सौ कदम दूर पत्थरों का घेरा मुश्किल से देख पा रहे थे। घेरे के अंदर पत्थर जैसी आकृतियों का एक समूह था, जो ढलानों पर मौजूद अन्य पत्थरों से अलग, एक-दूसरे के बहुत करीब थे। भाई तामेंग ने सोचा, ये तीर्थयात्री होंगे, जो प्लास्टिक की चादरों के नीचे दुबके हुए हैं।

दावा ने भाई तामेंग का हाथ पकड़ा और विस्मय से नीचे की ढलानों की ओर इशारा किया। वे चुपचाप और आश्चर्य से देखते रहे। आसमान बिजली की एक चमक के साथ फट गया और वे एक पल के लिए स्पष्ट रूप से देख पाए। उन्होंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था। यह याकों का एक झुंड था, जो धीरे-धीरे, छोटे समूह में, उद्देश्यपूर्ण ढंग से आगे बढ़ रहा था। कोई आवाज़ नहीं थी और वे घाटी के किसी भी याक जैसे नहीं लग रहे थे। ये बड़े जानवर थे, जिनके बाल बहुत नीचे लटके हुए थे। उनके सिर ऊँचे थे, आगे देखते हुए, जबकि अन्य पालतू याक इतनी भारी बारिश में ऐसा नहीं करते। दावा ने सोचा कि दस से अधिक याक रहे होंगे। ये जानवर इस भारी बारिश में चल रहे थे, और स्थिर और चुपचाप चल रहे थे, मानो किसी खास उद्देश्य से किसी मंजिल की ओर जा रहे हों।

***

दावा और भाई तामेंग भारी बारिश में दिरापुक मठ की दिशा से नीचे की पगडंडी पर चलते हुए याकों के झुंड को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें याक तभी दिखाई दिए जब ऊपरी पहाड़ों में बिजली चमकने से ल्हाचू घाटी में कुछ रोशनी फैली। झुंड एक साथ, घनी टोली की तरह चल रहा था। झुंड में हर याक एक ही उम्र और बराबर आकार का लग रहा था। वे अपना रास्ता जानते थे और आत्मविश्वास से चलते रहे।

दावा ने फुसफुसाते हुए कहा, "पत्थरों के घेरे से अपना ध्यान मत हटाओ। बारिश में बैठे तीर्थयात्रियों पर नज़र रखो। वे जंगली याक हैं और शायद दिरापुक और डोलमा ला दर्रे पर सभी तीर्थयात्रियों और शोरगुल से दूर जा रहे हैं। वे फंस गए होंगे और घाटी से निकलकर ऊँची जगह पर जाने की कोशिश कर रहे हैं। पत्थरों के घेरे से नज़र मत हटाओ।"

भाई तामेंग ने अंधेरी रात में सिर हिलाया और दावा के हाथों को थपथपाया, यह जानते हुए कि वे एक-दूसरे को देख नहीं सकते। वह तीर्थयात्रियों को देखता रहा, और जब कभी वह उनकी परछाई देख पाता, तो समझ जाता कि वे वहीं बैठे हैं। क्या उन्होंने जंगली याकों के झुंड को अपनी ओर आते देखा था? क्या वे उनके बारे में जानते थे? क्या उनका कोई संबंध था? इस जगह पर, कांग रेनपोचे पर्वत की छाया में, भाई तामेंग को लगा कि कुछ भी हो सकता है। वह अपनी दृष्टि तीर्थयात्रियों से जंगली याकों के झुंड की ओर घुमाता रहा।

भाई तामेंग ने सोचा, ये तो पालतू याक से कहीं ज़्यादा बड़े थे, जिनसे वो परिचित थे। ये तो बहुत बड़े थे, वाकई बहुत बड़े। इनके सींग भी बहुत चौड़े थे, बल्कि बहुत चौड़े, बड़े और भारी थे। ये देखकर आश्चर्य होता था कि इतना घना अंधेरा होने पर, इतनी तेज़ बारिश में भी, झुंड इतनी पास-पास चल रहा था और फिर भी उनके सींग आपस में उलझे नहीं थे। भाई तामेंग को जब एहसास हुआ कि उनका ध्यान कहीं और भटक रहा है, तो उन्होंने पत्थरों के घेरे की ओर मुड़कर देखा। उन्हें प्लास्टिक की चादरों के नीचे बैठे याक दिखाई दिए। क्या वहाँ बैठे तीर्थयात्रियों को पता था कि जंगली याक का झुंड नीचे वाले रास्ते से उनकी ओर आ रहा है?

दावा ने फिर फुसफुसाते हुए कहा, "भाई, तुम तीर्थयात्रियों और पत्थरों के घेरे के आसपास के इलाके पर नज़र रखो। सावधान रहना। कभी भी कुछ भी हो सकता है। मैं जंगली याक के झुंड और पत्थरों के घेरे से दूर के इलाकों पर नज़र रखूंगा।" भाई तामेंग ने सहमति में दावा के हाथ पर थपथपाया। बारिश तेज़ और ज़ोरदार होती जा रही थी। पास की घाटियों में गरज शुरू हो गई थी और ल्हाचू घाटी में बिजली पहले से कहीं ज़्यादा चमक रही थी। हर घाटी में गरज की आवाज़ दूसरी घाटियों में गूंज रही थी और ऐसा लग रहा था मानो गर्जना कभी बंद न हो।

जंगली याक का झुंड बारिश से भरी तेज़ बहती धारा को पार कर रहा था, जो निचले रास्ते से होकर गुज़र रही थी। पानी का स्तर बढ़ रहा था, और याक बिना रुके तेज़ धारा में से गुज़र रहे थे। उनकी गति धीमी लग रही

थी, लेकिन दावा जानता था कि इस अँधेरी तूफ़ानी रात में दृश्य बहुत भ्रामक हो सकता है। जंगली याक के झुंड खड़ी ढलानों पर तेज़ी से चलने और ठंडे मैदानों में धावा बोलने के लिए जाने जाते थे। पालतू याक उनसे दूर रहते थे, और भेड़-बकरी चराने वाले भी। चांगपा खानाबदोशों के पास ऊँचे पहाड़ों में जंगली याक के झुंडों की कई कहानियाँ थीं। हर बार सुनाने के बाद, कहानियाँ और भी रोमांचक और दिलचस्प होती जाती थीं।

दावा इस झुंड को देखकर हैरान था। कांग रेनपोचे पर्वत के आसपास की घाटियों में उसने जितने भी जंगली याक के झुंड देखे थे, यह उन सभी से बिल्कुल अलग था। यह झुंड उसे पांच साल पहले द्रोल्मा ला दर्रे के पास पहाड़ी नदी के किनारे देखे गए सबसे बड़े जंगली बैल से भी बड़ा लग रहा था। वह बैल भी अन्य जगहों पर देखे गए अधिकांश याक बैलों से बड़ा था। वह उस विशाल बैल की ऊंचाई का अनुमान इसलिए लगा पाया था क्योंकि वह एक पुराने पत्थर के स्तूप के पास गया था, और उसके ऊपरी हिस्से पर एक प्रार्थना का कपड़ा लटका हुआ था। यह कपड़ा एक निशान के रूप में काम आया था और दावा यह समझ पाया था कि बैल लगभग साढ़े सात फीट ऊंचा था।

जंगली याकों का यह झुंड जो निचले रास्ते से नीचे जा रहा था, उन सभी झुंडों से बिल्कुल अलग था जिन्हें वह जानता था। इस झुंड के सभी याक आकार में लगभग बराबर लग रहे थे, और उसे लगा कि हर एक याक एक विशालकाय बैल है, और हर एक की ऊंचाई लगभग आठ फीट से अधिक हो सकती है। बात सिर्फ ऊंचाई की नहीं थी। दावा को लगा कि ये बैल अन्य जंगली याकों से कहीं अधिक बड़े थे। वे सचमुच बहुत विशाल लग रहे थे। उसका अनुमान था कि उनका वजन 1.5 टन से भी अधिक होगा। वह सोचने लगा, यह सब सच नहीं हो सकता। क्या यह सचमुच हो रहा है?

उन्हें पता था कि जंगली याक बारिश से परेशान नहीं होते, लेकिन क्या वे सचमुच इस भीषण बारिश को झेल पाएंगे? उन्होंने पत्थरों के घेरे की ओर देखा और प्लास्टिक की चादरों के नीचे बैठे तीर्थयात्रियों को पहचान लिया। आखिर क्या हो रहा था? यह रात कैसे गुजरेगी? तीर्थयात्री क्या करेंगे? क्या जंगली याकों का झुंड पहले भी इस रास्ते से गुजरा था? काश उनमें इतनी हिम्मत, सूझबूझ और सूझबूझ होती कि वे रात में इस बारिश में बाहर निकलकर पता लगाने की कोशिश करते कि आखिर क्या हो रहा है। उन्होंने भाई तामेंग के साहस के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

जंगली याक का झुंड पत्थरों के घेरे के लगभग पास पहुँच चुका था। वे दिरापुक से चोकु की ओर जाने वाले निचले रास्ते पर चल रहे थे। तीर्थयात्री मध्य मार्ग पर अपनी जगह पर बैठे थे। भाई तामेंग और दावा ऊपरी रास्ते पर स्थित जीर्ण-शीर्ण पत्थर के स्तूप की नीची दीवार के पीछे छिपे हुए थे। बारिश के साथ हल्की-हल्की ओलावृष्टि शुरू हो रही थी। ओले छोटे थे और खतरनाक नहीं थे। ओलावृष्टि अचानक रूप बदल सकती थी और तेज़ होकर बड़े-बड़े ओले बरसा सकती थी। भाई तामेंग और दावा को, इस तूफानी रात में, जब भी बिजली ऊँचे पहाड़ों पर गिरती थी, साफ दिखाई देता था, अगर इसे साफ दृश्य कहा जा सकता है।

उन्होंने महसूस किया कि पत्थरों के घेरे में कुछ हलचल हुई है। बारह तीर्थयात्री उस स्थान पर इधर-उधर घूमे थे। प्लास्टिक की चादरें खुली हुई और फिर से व्यवस्थित की हुई प्रतीत हो रही थीं। शायद तीर्थयात्रियों ने जंगली याक के झुंड को देख लिया था। दावा सोच रही थी कि क्या तीर्थयात्री पत्थरों के घेरे से निकलकर जानवरों से बचने के लिए ऊपर की ओर पगडंडियों पर चले गए होंगे।

पत्थर के घेरे के नीचे जानवर रुक गए। वे घनी भीड़ में इकट्ठा होकर बारिश में भव्यता से खड़े थे। पत्थर के घेरे के आसपास के क्षेत्र में ल्हाचू घाटी में एक अजीब बदलाव आया। ऐसा लगा जैसे यहाँ बारिश रुक गई हो। दावा और भाई तामेंग दिरापुक, तारबोचे और कांग रेनपोचे की ऊँची ढलानों तथा ल्हाचू घाटी के दूसरी ओर स्थित अन्य पहाड़ों पर बारिश देख सकते थे। चोकु के ऊपर बादल छंट गए और ऊँची ढलानों से चाँद निकल आया। घाटी चमकदार चाँदनी में नहा गई और जंगली याकों का झुंड तथा पत्थर का घेरा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

जंगली याक झुंड बनाकर मुड़े और अब पत्थरों के घेरे की ओर मुँह करके खड़े हो गए। वे अभी भी बहुत पास-पास झुंड बनाकर खड़े थे। जानवर पत्थरों के घेरे की ओर पहाड़ी की निचली ढलान पर चढ़ने लगे। दावा सोच रहा था कि आखिर हो क्या रहा है। वह भाई तामेंग की उत्तेजना को महसूस कर सकता था। याक सीधे पत्थरों के घेरे तक गए और वहाँ चुपचाप खड़े हो गए। बारह तीर्थयात्रियों ने अपनी प्लास्टिक की चादरें हटा दीं और उसी जगह पर बैठे रहे। वे किसी प्रकार का प्रार्थना गीत गुनगुना रहे थे। दावा ने देखा कि तीर्थयात्रियों में से एक साधु था और उसके पास एक प्रार्थना ढोल था जिसे वह घुमा रहा था।

भाई तामेंग ने चुपचाप दावा को कोहनी मारी और उंगली से नीचे की ढलान की ओर इशारा किया। जिस जगह जंगली याकों का झुंड मुड़कर पत्थरों के घेरे की ओर बढ़ा था, वहाँ अब भेड़ियों का एक झुंड बिखरा हुआ और चुपचाप खड़ा देख रहा था। दावा ने बारह भेड़ियों को देखा। उन्होंने उन्हें पहले नहीं देखा था। शायद बारिश और अंधेरी तूफानी रात के कारण ऐसा हुआ हो। क्या भेड़िये जंगली याकों के झुंड के साथ आए थे? हो सकता है कि वे उन्हें पहले देखने से चूक गए हों। या हो सकता है कि भेड़िये बारह तीर्थयात्रियों के आने का इंतज़ार कर रहे हों। वे अपने समय का इंतज़ार कर रहे थे। आखिर, भेड़िये जंगली याकों के साथ नहीं चलते थे। वे उनके कभी-कभार और दुर्लभ शिकारी हुआ करते थे। जंगली याक को भेड़िये से केवल कभी-कभार ही डर लगता था।

तीर्थयात्री पत्थरों के घेरे में चुपचाप बैठे ढलान पर खड़े जंगली याक को देख रहे थे। वे गुनगुनाते रहे। तीर्थयात्री विचलित नहीं लग रहे थे और उन्हें यह एहसास भी नहीं था कि वे एक अजीब घटना देख रहे हैं। या, क्या वे वास्तव में इसके होने की उम्मीद कर रहे थे? निचले रास्ते पर पहाड़ी झरने के पास भेड़िये चुपचाप खड़े थे। उस इलाके में कोई आवाज़ नहीं थी, और हैरानी की बात यह थी कि जंगली याक गुर्रा भी नहीं रहे थे। दावा और भाई तामेंग याकों के नथुनों से धुआँ निकलते देख सकते थे। उनकी पूंछें सीधी खड़ी थीं। वे सचमुच लंबे और विशाल थे। और फिर, रात एक बार फिर बदल गई। चाँद ऊँचे पहाड़ों के पीछे छिप गया। बारिश के बादल लौट आए। चोकु इलाके में ज़ोरदार बारिश शुरू हो गई। फिर से अंधेरा छा गया।

***

वे पूरी रात चोकु मठ के नीचे पत्थर के स्तूप की नीची दीवार के पीछे ओलों की बारिश में बैठे रहे। बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। लगातार बरसती रही। न तो गरज थी और न ही बिजली। आसमान से पानी नहीं बरस रहा था। ऐसा लग रहा था मानो ल्हाचू घाटी और कांग रेनपोचे के ऊपर आसमान के बीच पानी की एक विशाल दीवार खड़ी हो। तूफान की गर्जना बहुत भयानक थी। पानी की दीवार क्षीण नहीं हुई और ओलों की बारिश बड़े-बड़े पत्थरों में तब्दील होने लगी।

दावा और भाई तामेंग मठ की ओर भागने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। रास्ते में जो कुछ उन्होंने देखा था, उसके बाद तो बिलकुल भी नहीं। क्या उन्होंने सचमुच जंगली याक, भेड़िये और बारिश से बेपरवाह तीर्थयात्री देखे थे? इस रात और क्या हो सकता था? दावा ओलावृष्टि में बाहर भागकर किसी आपदा या खुद को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता था। भाई तामेंग भी उन घटनाओं के जादू से इतना चकित था कि अभी-अभी जो कुछ उसने देखा था, उससे वे क्या समझ सकते थे?

पगडंडी पर घना अंधेरा था। ओले बरस रहे थे। वे किसी तरह पत्थर के स्तूप के नीचे छिप पाए, जिससे उन्हें थोड़ी-बहुत सुरक्षा मिल रही थी। न हवा थी, न गरज, न बिजली। बस ओलों के पहाड़ी ढलानों पर गिरने की आवाज़ आ रही थी। स्तूप के चारों ओर बनी नीची दीवार से टकराते ही वे टूट गए और उनके टुकड़े चारों ओर से उन पर गिर रहे थे। उनके बरसाती कपड़े और चोगा ही उनकी एकमात्र सुरक्षा थे। थोड़ी देर बाद, दावा और भाई तामेंग ने अपने चारों ओर पत्थर और चट्टानें जमा करके एक छोटी सी दीवार बनानी शुरू कर दी ताकि उड़ते हुए ओलों के टुकड़ों को रोका जा सके।

दावा सोच रहा था कि रास्ते में आखिर क्या हो रहा है। क्या जंगली याक पत्थरों के घेरे के पास खड़े थे? भेड़िये तीर्थयात्रियों के पास क्यों आ गए थे? क्या भेड़िये जंगली याकों का पीछा कर रहे थे? याक कहाँ से आए थे? उसने इतने बड़े याक सांडों के झुंड के एक साथ घूमने के बारे में कोई खबर या गपशप नहीं सुनी थी। आमतौर पर याक सांड अकेले ही घूमते थे। वे निचली पहाड़ियों की घास वाली बाहरी ढलानों को पसंद करते थे। कभी-कभी वे पहाड़ियों के आसपास की झीलों के किनारे भी रहते थे। उसने इतने विशाल और प्रभावशाली सांड पहले कभी नहीं देखे थे। वे बहुत बड़े थे, बेहद बड़े। उनके सींगों ने उन्हें और भी बड़ा बना दिया था।

तीर्थयात्री पत्थरों के घेरे में क्या कर रहे थे? वहाँ कोई सुरक्षा नहीं थी। वे ओलों के तूफान से कैसे बचेंगे? क्या उन्होंने जंगली याक के झुंड के पीछे और उससे आगे निचले रास्ते पर भेड़ियों को देखा था? भाई तामेंग के मन में इतने सारे सवाल थे। जवाब खोजने के बजाय, उन्हें और भी सवाल मिल गए थे। वह उन सभी चीजों पर चर्चा करना चाहता था जो उन्होंने देखी थीं, लेकिन उसके पास बोलने की ताकत नहीं थी।

उन्हें पता ही नहीं चला कि भोर हो चुकी है और दिन शुरू हो गया है। बारिश रुकी नहीं थी और काले तूफानी बादल ल्हाचू घाटी के तीर्थयात्रा मार्ग को घेरे हुए थे। दिन का पहला संकेत तब मिला जब बादल छंटने लगे और जितनी अचानक ओलावृष्टि शुरू हुई थी, उतनी ही अचानक रुक भी गई। दिन बादलों से बाहर निकला और सूरज की रोशनी मार्ग पर पड़ी। दावा और भाई तामेंग ने पत्थर के स्तूप से पत्थरों के घेरे को नीचे देखा।

जैसा कि दावा को आशंका थी, उसे कोई दिखाई नहीं दिया। जंगली याक का झुंड जा चुका था और भेड़िये भी कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। पत्थरों का घेरा खाली था। जो तीर्थयात्री वहाँ बैठे थे, वे गायब हो चुके थे।

वे स्तूप पर कुछ देर रुके और चोकु मठ की ओर देखा। उन्हें मास्टर रिनचेन और युवा भिक्षु खिड़कियों से उनकी ओर देखते हुए दिखाई दिए। वे उन्हें हाथ हिला रहे थे। दावा और भाई तामेंग ने भी हाथ हिलाकर जवाब दिया और स्तूप के चारों ओर बनी नीची दीवार से बाहर निकल आए। वे पत्थरों के घेरे की ओर नीचे चले गए। वहाँ कुछ भी नहीं था। इस बात का कोई संकेत नहीं था कि पुरुषों का कोई समूह वहाँ बैठा था। प्लास्टिक की चादरें गायब थीं। तीर्थयात्री अपने थैलों और अन्य सामान के साथ जा चुके थे। दावा जंगली याक के झुंड के निशान और पदचिह्न खोजने के लिए नीचे की ढलानों की ओर दौड़ा। भाई तामेंग पत्थरों के घेरे के अंदर किसी भी प्रकार की हलचल या तीर्थयात्रियों की उपस्थिति के संकेत खोजता रहा। कोई संकेत नहीं मिला। कोई पदचिह्न नहीं थे। पत्थर अपनी जगह पर थे। कुछ भी असामान्य नहीं लग रहा था।

वे नदी की धारा की ओर नीचे उतरे, जिसमें चारों ओर से पानी का प्रवाह लगातार बढ़ता जा रहा था। मठ की ऊँची खिड़कियों से मास्टर रिनचेन उन्हें देख रहे थे। दावा भेड़ियों के पदचिह्नों की तलाश कर रहा था। किसी भी प्रकार के पदचिह्न होना असंभव था। रात भर हुई भीषण ओलावृष्टि के बाद तो बिल्कुल नहीं। कोई भी निशान या पदचिह्न मिट गया होगा। वे पत्थरों के घेरे में वापस चढ़े और पगडंडी पर ऊपर-नीचे तलाशी ली। दिरापुक के धुंधले दृश्य से लेकर तारबोचे की ओर जाने वाली पगडंडी के मोड़ तक, किसी भी हलचल का कोई संकेत नहीं मिला।

दावा उन जगहों पर गया जहाँ उन्होंने याक के झुंड को पत्थरों के घेरे के बाहर आकर रुकते देखा था। वह याक के बालों के निशान खोज रहा था। पालतू याक हमेशा अपने पीछे ऐसे निशान छोड़ जाते हैं जिनसे पता चलता है कि वे किसी जगह से गुज़रे हैं या कहीं रुके हैं। याक के कई प्रकार के बाल होते हैं, और उनके घने, उलझे हुए बाल ही हमेशा उनकी मौजूदगी का संकेत देते हैं। उसे कोई निशान नहीं मिला। वे कहाँ गए होंगे? तीर्थयात्री इतनी तेज़ी से, खुले में, भयंकर ओलावृष्टि के बीच कैसे चले गए?

भाई तामेंग ने आश्चर्य से कांग रेनपोचे पर्वत की ऊँची ढलानों की ओर देखा। क्या इस पहेली का उत्तर इस पवित्र पर्वत में छिपा होगा? इस तूफानी रात में यहाँ वास्तव में क्या हुआ था? पिछली रात, चोकु मठ के प्रार्थना कक्ष में धर्मकाया अमिताभ बुद्ध की प्रतिमा से साहस माँगने पर उन्हें दृढ़ निश्चय प्राप्त हुआ था। वे जानते थे कि तिब्बत के उच्चभूमि के किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में इस क्षेत्र में अधिक रहस्य छिपे हैं। यहाँ की असंख्य कहानियाँ अभी तक ठीक से समझी भी नहीं गई हैं। अधिकांश कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक समुदाय से दूसरे समुदाय, एक मंदिर से दूसरे मंदिर, एक धर्म से दूसरे धर्म तक पहुँचती रही हैं और लाचू घाटी की कहानियों की सही संख्या का तो अभी तक ठीक-ठीक पता भी नहीं चल पाया है।

दावा ने हैरानी से सिर हिलाया और भाई तामेंग को पुकारा, "चलो मठ वापस चलते हैं और अपनी इमारतों की छतों से ढलानों को देखते हैं। हमें इस जगह से कुछ भी नहीं मिल रहा है। बारिश और ओलों ने सारे निशान और पदचिह्न मिटा दिए हैं। तीर्थयात्री गायब हो गए हैं। जो तीन साल पहले, और उससे पहले, और उससे भी

पहले हुआ था, वही फिर से हो रहा है।" लेकिन, उसने मन ही मन सोचा, इस बार रहस्य और भी पेचीदा होता जा रहा है। जंगली याक और भेड़ियों को कैसे समझाया जा सकता है? और तीर्थयात्री डरे क्यों नहीं?
वे मठ लौट आए। भाई तामेंग सीधे धर्मकाया अमिताभ बुद्ध की प्रतिमा के पास गए और उसके सामने खड़े होकर प्रार्थना और चिंतन में लीन हो गए। दावा, गुरु रिनचेन के साथ खिड़की पर खड़े होकर पत्थरों के घेरे को देख रहे थे। गुरु ने कहा, "मेरे पुराने मित्र, तुम दोनों को शांति मिले। हम रात भर खिड़की से हिले नहीं थे। एक क्षण, जब बारिश रुकी, तो मैंने जंगली याकों के झुंड को पत्थरों के घेरे के पास खड़े देखा। मैंने भेड़ियों को भी निचले रास्ते पर और नदी की धाराओं के पास खड़े देखा। मैंने देखा कि तीर्थयात्री निडर और साहसी होकर डटे रहे। उसके बाद क्या हुआ, यह मैंने कभी नहीं देखा। बारिश और ओलों के कारण हम घाटी में फैले जल के पर्दे के भीतर झाँक नहीं पाए।"
दावा ने उत्तर दिया, "हे गुरुदेव, मैं प्रसन्न हूँ। मैं सोच रही थी कि कहीं पूरी रात मेरा भ्रम तो नहीं था। मुझे पता है कि भाई तामेंग भी मेरे साथ थे, लेकिन मुझे उनकी भी चिंता थी। मुझे खुशी है कि आपने भी वही देखा जो हमने देखा। जो हमने देखा वही हम जानते हैं। जो हमने देखा और जो हम स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं, उससे मैं उलझन में हूँ। क्या यही कारण है कि हम समझ नहीं पा रहे हैं? हमने बारह तीर्थयात्रियों को बारिश में बाहर बैठे देखा, और वे तूफान के आने का इंतजार कर रहे थे। वे जानते थे कि रास्ते में बारिश होने वाली है। वे उसका इंतजार कर रहे थे। वे एक साथ बैठे रहे और हिले तक नहीं, यहाँ तक कि जब बहुत ठंड थी और बारिश तेज हो गई थी। उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ। गुरुदेव, क्या वे जानते थे कि ठंड और बारिश का उन पर कोई असर नहीं होगा? वे बिल्कुल भी हमारे जैसे नहीं थे।"
मास्टर रिनचेन ने सिर हिलाया और कहा, "जी हां, मेरे मित्र। हम इस बात को लेकर असमंजस में हैं क्योंकि हमें लगता है कि वे तीर्थयात्री भी हमारी ही तरह के लोग थे। जब जंगली याक पत्थरों के घेरे तक आए, तो वे साहस के साथ वहीं खड़े रहे। हम तो याकों को पगडंडी पर चलते हुए देखते ही भाग जाते। लेकिन ये तीर्थयात्री नहीं भागे। वे वहीं खड़े रहे और निडर होकर जंगली याकों को देखते रहे। उन्हें पता था कि उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। वे हमारी तरह नहीं हैं। उन्हें कैसे पता चला कि वे वहां बैठ सकते हैं? वे कौन थे? वे कहां से आए थे?"

तृतीय

दिरापुक गोम्पा के नीचे, अस्थायी तंबुओं और झोपड़ियों के घेरे में, रात भर चली भारी बारिश का असर साफ दिखाई दे रहा था। कुछ झोपड़ियाँ टूट गई थीं और कुछ तंबू गिर गए थे। चट्टानों ने उन्हें बचा लिया था। दिरापुक में ओलावृष्टि उतनी भीषण नहीं थी जितनी चोकु मठ के पास थी। नोर्बू ने अपने तंबू से बाहर झाँका

और घाटी में सूरज को ढलते हुए देखा। तीर्थयात्री और जानवर अभी तक अपने आश्रयों से बाहर नहीं निकले थे। सभी लोग भारी बारिश की तीव्रता को देखकर दंग रह गए थे।

नोरबू ने मन ही मन प्रार्थना की और सोचा कि क्या शिकुआनहे या दारचेन पर भी उतनी ही ज़ोर से बारिश हुई होगी। उसने अपने माता-पिता, बहन, दुकान और जानवरों के लिए प्रार्थना की। उसके याक और मास्टिफ़ कुत्ते तंबू में रात भर सुरक्षित रहे। उसने खाली घाटी की ओर देखा। कोई हलचल नहीं थी। वह अपने तंबू से बाहर आया और दर्रे से तारबोचे, उत्तर में चोकु और दिरापुक के उत्तर में द्रोल्मा ला दर्रे तक जाने वाले रास्ते को देखने लगा। कांग रेनपोचे की ऊपरी ढलानें सूरज की रोशनी में नई धुली तस्वीर की तरह चमक रही थीं। बारिश के बादल छंट चुके थे। उसने सोचा, बर्फीली चोटी कितनी सुंदर है।

वह दारचेन में अपनी दुकान पर अपने माता-पिता के बारे में सोचने लगा। लगभग सौ या उससे अधिक तीर्थयात्री उन झोपड़ियों में शरण लिए होंगे, और याक के झुंड को किसी सुरक्षित आश्रय स्थल पर ले जाया गया होगा। नोर्बू अपने पैतृक गांव के बारे में सोचने लगा और आशा करने लगा कि बारिश ने गांव को नष्ट नहीं किया होगा। उसके परिवार के पास वापस जाने के लिए कोई घर नहीं बचा होगा। वह वापस जाकर बड़े-बड़े खेत खरीदना चाहता था और सब्जी की खेती करना चाहता था। उसने जौ की खेती न करने का निश्चय किया था। जौ की खेती पूरी तरह से घाटे का सौदा थी और बारिश, धूप, बादलों, खरपतवारों और कीड़ों के भरोसे ही करनी पड़ती थी। वह सब्जी की खेती करेगा।

नोरबू ने भविष्य देख लिया था। उसने तीर्थयात्रा मार्गों पर सब्जियों और खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग को भांप लिया था। ये समूह स्थानीय बाजार में सब्जियां बेचकर उसके परिवार को मिलने वाली कीमत से चार से पांच गुना अधिक कीमत देने को तैयार थे। उसके माता-पिता दारचेन में दुकान संभालते रह सकते थे और वह तीर्थयात्रियों को कोरा (यात्रा) पर ले जाकर पैसे कमा सकता था और बड़े खेत खरीदने के लिए पर्याप्त बचत कर सकता था। ये तीर्थयात्री बुद्धिमान थे। कभी-कभी वे उससे बात करते और उसके, उसके माता-पिता और उसके पैतृक गांव के बारे में पूछते। कुछ तीर्थयात्री उससे तिब्बत के बाहर की दुनिया के बारे में बात करते। कुछ हान चीनी पुलिसकर्मियों ने उससे कपड़े की झोपड़ियों के अंदर सब्जियां उगाने के चलन के बारे में बताया। इससे फसल बादलों, बारिश, ओलों, ठंड और धूप से सुरक्षित रहती थी।

उसने तंबू के अंदर शांति से बैठे अपने दो याकों की ओर देखा। वे जानते थे कि उनका आराम का समय अनमोल है। क्योंकि एक बार उठकर चलने के बाद, उन पर सामान लादा जाएगा और उन्हें दिन भर चलना पड़ेगा। दोपहर के भोजन के समय या तीर्थयात्रियों के आराम करने के समय भी उनका सामान उनकी पीठ से नहीं उतारा जाएगा। आज मास्टिफ़ कुत्ता बहुत शांत, संयमित और बिल्कुल अलग लग रहा था। नोर्बू ने तंबू को नीचे उतारना शुरू किया और उसे समेटने लगा। उसने तंबू को खंभों के चारों ओर लपेटा और रस्सियों से बांध दिया। एक याक तंबू और अपने सामान के लिए था, जबकि दूसरा याक तीर्थयात्रियों के बैग और खाने-पीने का सामान ढो रहा था।

याक चुपचाप उसे देख रहे थे। बाकी तम्बुओं में भी ऐसी ही हलचल थी। कुछ याक उठकर इधर-उधर घूमने लगे थे। तीर्थयात्री अपने तम्बुओं से बाहर आ गए थे और तुरंत कांग रेनपोचे और दिरापुक में हो रही हर चीज़ की तस्वीरें लेने लगे थे। तीर्थयात्री गाइड नोर्बू और याक चलाने वाले लड़कों के पास आया और उन्हें दलिया, नूडल्स, मांस के टुकड़े और आलू से भरा नाश्ता दिया। ऐसी रात के बाद अच्छे नाश्ते की ज़रूरत थी। नोर्बू को सुरक्षित देखकर तीर्थयात्री गाइड ने राहत की सांस लेते हुए उसे गले लगाया और कहा, "हम सुबह तक यहीं रुकेंगे। हमें नहीं पता कि द्रोल्मा ला दर्रे पर क्या हो रहा होगा। पहाड़ियों से पानी बह रहा होगा और कहीं भी अचानक बाढ़ आ सकती है। आइए इंतज़ार करें और देखें कि क्या होता है। अगर दर्रे से कोई खबर मिलती है तो हम दोपहर में निकल सकते हैं।"

नोरबू ने सहमति में सिर हिलाया। ऐसे बादल फटने के बाद आने वाली अचानक बाढ़ में फंसने से बेहतर यही था कि सावधानी बरती जाए। उसने एक और याक चराने वाले लड़के को बुलाया और उसे सभी सहायक लड़कों और स्थानीय कुलियों के लिए नाश्ता बनाने को कहा। दिरापुक गोम्पा से एक भिक्षु बाहर आया था और यह देखने के लिए इधर-उधर घूम रहा था कि सब लोग सुरक्षित हैं या नहीं। जब भिक्षु उनके पास आया तो याक चराने वाले लड़कों और कुलियों ने सम्मानपूर्वक सिर झुकाया। वह नोरबू के मास्टिफ़ कुत्ते के पास आया और उसके सिर पर थपथपाया और कुत्ते के गुर्राने या घुरघुराने का इंतज़ार करने लगा। मास्टिफ़ ने न तो कुछ किया और न ही कुछ कहा, बस धीरे से रोया।

भिक्षु ने नोर्बू से पूछा, "इस कुत्ते को क्या हुआ है? मुझे लगा था कि मास्टिफ़ कुत्ते ज़्यादा खतरनाक होते हैं। क्या यह तंबू में मौजूद याकों से डर गया, या बारिश से, या तुम्हारे खाने से?" उन्होंने उस गड्ढे की ओर इशारा किया जो नोर्बू ने तंबू के अंदर खोदा था। बुझी हुई आग अभी भी गर्म थी, क्योंकि रात भर उसमें याक के गोबर के उपले डाले गए थे। याक के बच्चे विनम्रता से हँसे और एक कुली भिक्षु के पास आशीर्वाद लेने आया। वे आपस में कुछ फुसफुसाए और चले गए। नोर्बू ने मास्टिफ़ कुत्ते को देखा और सोचने लगा। आखिर क्या हुआ था?

"देखो!" याक चराने वाले लड़कों में से एक ने चोकु मठ की ओर इशारा करते हुए चिल्लाया। कुली और भिक्षु ने भी उस दिशा में देखा और नोर्बू के पास लौट आए। उन्होंने देखा कि चोकु मठ का एक भिक्षु और एक बूढ़ा तीर्थयात्री मार्गदर्शक दिरापुक की ओर जा रहे थे। किसी भिक्षु का सामान्य दिनों में एक मठ से दूसरे मठ तक पैदल जाना बहुत ही दुर्लभ था, जब तक कि कोई उत्सव न हो या कोई आपदा न आई हो। क्या मठ में कोई भयानक घटना घटी थी? नोर्बू कांप उठा और कांग रेनपोचे की ओर देखते हुए प्रार्थना करने लगा। दिरापुक के भिक्षु ने भी चुपचाप प्रार्थना की।

तीर्थयात्रियों ने कुछ भी असामान्य नहीं देखा। उन्हें पता ही नहीं था कि यह असामान्य है। उन्हें लगा कि यह एक सामान्य घटना है। उन्होंने चोकु के भिक्षु और उनके साथ आए बूढ़े व्यक्ति की तस्वीरें लेना शुरू कर दिया। नोर्बू और दिरापुक भिक्षु चोकु के भिक्षु से मिलने के लिए निचले रास्ते की ओर चल पड़े। कोई उनके

पीछे नहीं गया। दिरापुक भिक्षु ने झुककर कहा, "स्वागत है, भाई। इससे पहले कि आप कुछ कहें, मैं परमप्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि चोकु मठ में सभी सुरक्षित हों। मुझे आशा है कि कोई आपदा नहीं आई होगी।"
बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, "गुरुजी, कोई समस्या नहीं है। मेरे साथ चोकु मठ से भाई तामेंग हैं। मैं दावा हूँ और तीर्थयात्रा मार्गदर्शक हूँ। आजकल मैं पूरे मार्ग पर नहीं घूमता, बल्कि उन समूहों को ले जाता हूँ जो दारचेन आते हैं और विशेष रूप से धर्मकाया अमिताभ बुद्ध का आशीर्वाद लेने के लिए चोकु जाना चाहते हैं। हम पूछताछ करने आए हैं, क्योंकि हम उस रात हुई बारिश में घटी घटनाओं के बारे में कुछ प्रश्न जानना चाहते हैं।"
दिरापुक के भिक्षु ने उत्तर दिया, "भाई तामेंग, आपका स्वागत है। आपका भी स्वागत है, बूढ़े दावा, क्योंकि मैं आपको कई वर्षों से अच्छी तरह जानता हूँ। ये नोरबू हैं, जो दारचेन और उसके आसपास के इलाके से हैं। ये तीर्थयात्रियों को कोरा (पारंपरिक मंगोलियाई नृत्य) पर ले जाते हैं। याक के बच्चे नाश्ता तैयार कर रहे हैं, और आप भी थोड़ा गर्म सूप पी सकते हैं ताकि आप आराम कर सकें और बातें कर सकें। ऐसा लगता है कि आपको आराम की ज़रूरत है, और आप पूरी रात आराम नहीं कर पाए हैं। क्या आप बारिश में खुले में थे?"
भाई तामेंग ने अधीरता से पूछा, "भाई, मुझे सवाल पूछने ही होंगे। मैं आपका सूप सहर्ष स्वीकार करूंगा, क्योंकि हमें इसकी ज़रूरत है। लेकिन आइए यहीं बैठें, ताकि हम उन लोगों को डरा न दें जिन्हें नहीं डराना चाहिए। रात में चोकु के पास कुछ अजीब घटनाएँ घटीं। हम इसके बारे में पूछताछ करने आए हैं, क्योंकि इन घटनाओं को अंजाम देने वाले कौन थे, चाहे वे मनुष्य हों, जानवर हों, आत्माएँ हों या राक्षस हों, हम नहीं जानते। उनमें से कुछ प्राणी दिरापुक से चोकु की ओर जाने वाले रास्ते पर चले। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या याक चराने वाले लड़कों ने रात में याकों या कुत्तों के साथ कुछ गड़बड़ देखी? क्या याक परेशान हुए, और क्या कुत्ते भौंके या डरे?"
नोरबू फिर से कांप उठा। दिरापुक का भिक्षु भी कांप उठा। उन्हें मास्टिफ़ के अजीब व्यवहार के बारे में हुई अपनी बातचीत याद आ गई। यह इस नस्ल के बिल्कुल विपरीत था। नोरबू ने उस रात के बारे में सोचा और कहा, "गुरुजी और बूढ़े दावा, क्योंकि मैं आपको भी जानता हूँ, उस रात सचमुच कुछ अजीब हुआ था। ये मेरे दो याक थे। वे शांति से सो रहे थे और इतनी तूफानी रात में किसी भी जीवित प्राणी की तरह बेचैन थे। मेरा मास्टिफ़ मेरे पास सो रहा था और उसकी गर्मी से मुझे सुकून मिल रहा था। फिर अचानक, याक चुपचाप, बिना गुर्राए, तंबू के अंदर खड़े हो गए और पूरी तरह जाग गए। मुझे डर था कि वे बारिश में बाहर निकल जाएँगे और मैंने उन्हें शांत करने की कोशिश की। लेकिन वे शांत नहीं हुए। वे बहुत तनाव में थे। वे लगभग एक घंटे तक खड़े रहे, मानो उन्हें तंबू के बाहर किसी अजीब आत्मा या राक्षस का आभास हो गया हो। उनकी पूंछें ऊपर उठी हुई थीं, फिर भी वे गुर्राए नहीं। उनकी साँसें बहुत तेज़ हो गईं और उनकी नाक से निकलने वाले धुएँ से ऐसा लग रहा था जैसे कोहरे के बादल हमारे तंबू में घुस आए हों। फिर अचानक, वे फिर से बैठ गए और सो गए। मास्टिफ़ ने तो बिल्कुल भी भौंका नहीं।"

***

रातभर चली बारिश और तूफान ने शिकुआनहे में बने तंबूदार भोजनालयों को नुकसान पहुँचाया था। हरिराम महाराज और लूओ त्सेरिंग ने तंबुओं और नुकसान का जायजा लिया। शिकुआनहे के बाहर, दारचेन जाने वाली सड़क पर स्थित अन्य तंबूदार भोजनालयों की तुलना में वे भाग्यशाली प्रतीत हुए। अधिकांश अन्य भोजनालय और उनके शेड या तो उड़ गए थे या नष्ट हो गए थे। लूओ त्सेरिंग का भोजनालय काफी हद तक सुरक्षित लग रहा था। ऐसा शायद पास के पुलिस स्टेशन की वजह से था, जो भोजनालय से ऊँचा था और बारिश और हवा की दिशा में खड़ा होकर उसे इधर-उधर उड़ा रहा था।

महाराज ने सोचा कि तंबू के अंदर लाए गए वाहन सुरक्षित थे और ऐसा करना समझदारी भरा कदम था। यह लूओ का अचानक आया विचार था और महाराज को पहले तो यह एक मूर्खतापूर्ण काम लगा था। तूफान के बाद अगली सुबह उन वाहनों को हुए नुकसान का पता चल गया जो रात भर खुले में खड़े रहे थे। पचास से अधिक तीर्थयात्री रात भर तंबू वाले भोजनालय में रुके रहे। कुछ दारचेन की ओर जा रहे थे और कुछ कोरा से लौट रहे थे। कुछ स्थानीय लोग अपनी साइकिलों के साथ रात में जल्दी से अंदर आ गए थे।

महाराज और लूओ स्थानीय लोगों और तीर्थयात्रा गाइडों को अच्छी तरह जानते थे और कुछ तीर्थयात्री समूहों से भी परिचित थे, क्योंकि वे पहले भी उस ढाबे पर रुके थे। उन्होंने अपने रसोई के लड़कों को नाश्ते के लिए सूप और नूडल्स बनाने को कहा। लूओ की पत्नी ने स्थानीय तिब्बतियों के लिए अलग से मीठी चाय और त्सम्पा बनाना शुरू किया। एक लड़का बगल के तंबू में एक अलग कटोरे में पिछली रात का बचा हुआ याक के मांस का सूप और आलू गर्म करने लगा। तीर्थयात्री समूह लूओ द्वारा शाकाहारी और मांसाहारी भोजन को अलग-अलग रखने के बारे में जानते थे और उसी के अनुसार इधर-उधर घूमने लगे।

चूल्हे के पास दो तीर्थयात्री बैठे थे, खुद को गर्म कर रहे थे और तम्बू के बाहर देख रहे थे, शायद सोच रहे थे कि यात्रा करना सुरक्षित है या नहीं। लूओ को उनके बारे में जानने की उत्सुकता हुई। उसने धीमी आवाज़ में तिब्बती भाषा में महाराज से कहा, "महाराज, क्या आप चूल्हे के पास उन दोनों को देख रहे हैं? वे काफी देर से आए थे, जब लगभग निश्चित था कि रात खराब होगी। वे अकेले चल रहे थे। वे न तो स्थानीय तिब्बती हैं और न ही चांगपा खानाबदोशों जैसे दिखते हैं। क्या आप उनके बारे में कुछ जानते हैं?"

महाराज को तिब्बती भाषा का अच्छा ज्ञान तो था, लेकिन वे धाराप्रवाह तिब्बती नहीं बोल पाते थे और अपनी बनाई हुई मिश्रित भाषा में बात करते थे। लूओ उसे समझ जाता था, क्योंकि बातचीत आमतौर पर भोजनालय की गतिविधियों या धर्म, ईश्वर और धर्मगुरुओं के बारे में होती थी। महाराज ने कहा, "मैं इन्हें नहीं जानता। ये किसी तीर्थयात्री समूह से नहीं हैं। ये काफी तरोताज़ा दिखते हैं और थके हुए नहीं हैं। ये कोरा जा रहे होंगे या शायद इस क्षेत्र में व्यापार कर रहे होंगे। क्या आपको यकीन है कि ये चांगपा नहीं हैं? इनके कपड़े पूर्वी तिब्बत के ग्रामीणों जैसे ही दिखते हैं।"

लूओ को पूरा यकीन था। वह चांगपा लोगों को अच्छी तरह जानता था, क्योंकि वे नियमित रूप से उसके साथ व्यापार करने आते थे। वह उनसे मांस, नमक और अन्य मसाले खरीदता था जो वे बेचने के लिए लाते थे। पूर्वी तिब्बत से लद्दाख तक उनका एक आसान तस्करी मार्ग था जिसका वे सैकड़ों वर्षों से उपयोग कर रहे थे।

कहा जाता था कि भारत के लद्दाख में चांगपा लोगों की संख्या पूर्वी तिब्बत में उनकी अपनी भूमि की तुलना में कहीं अधिक थी। वे कुशल व्यापारी थे और भारत से मसालों, अनाज, दालों और ब्रांडेड वस्तुओं की अच्छी और विश्वसनीय आपूर्ति लाते थे। महाराज को भारत से आने वाले हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध तीर्थयात्रियों के लिए अपना खास भोजन पकाने के लिए उन मसालों और दालों की आवश्यकता थी। उन्होंने अपने गाँव किन्हाई में ऐसा भोजन कभी नहीं खाया होगा, और न ही उनकी पत्नी ने अपने गाँव में।

महाराज चूल्हे के पास गए और अपने विशेष बर्तन तैयार करने लगे। भारत से आए "पूर्ण शाकाहारी" तीर्थयात्रियों को उन्हें काम करते देखना और वास्तव में खाना बनाते देखना अच्छा लगता था। वे जानते थे कि वे अपने बर्तनों, थालियों और कटोरियों को अलग और "साफ़" रखेंगे और उन्हें मांसाहारी लोगों के साथ मिलाकर अपवित्र नहीं करेंगे। गुजरात, विशेष रूप से नवसारी से आए तीर्थयात्रियों का एक समूह कैलाश पर्वत की विशेष तीर्थयात्रा पर आया था, जिनमें हिंदू भी शामिल थे, और अष्टपद पर्वत की, जिनमें जैन भी शामिल थे। महान पर्वत कांग रेनपोचे सर्वधर्म समभाव वाले थे और विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच अलग-अलग नामों से जाने जाते थे, जिन्होंने जीवन में एक बार इस परम तीर्थयात्रा को पूरा करने के लिए संघर्ष किया था।

नवसारी के तीर्थयात्री पवित्र पर्वत से लौट रहे थे। उनके साथ जो तीर्थयात्री मार्गदर्शक था, वह भी नवसारी का ही था, हालांकि वह अहमदाबाद में रहता था। जैन समूह में नवसारी क्षेत्र का एक युवा भिक्षु भी था। तीर्थयात्री मार्गदर्शक और जैन भिक्षु आपस में फुसफुसा रहे थे और चूल्हे के पास बैठे दो अजनबी तीर्थयात्रियों को चोरी-छिपे देख रहे थे। महाराज ने उन्हें पुकारा और गुजराती में कहा, “बापू, प्रणाम। नमस्कार। रात बहुत भयानक थी। हम सब भाग्यशाली हैं। आपके इस संत ने कोरा के दौरान जो आशीर्वाद मांगा था, वह आप सबके साथ है और हम सब सुरक्षित हैं। आइए और बढ़िया भारतीय चाय पीजिए। मैंने इसमें भारत से लाया हुआ असली अदरक डाला है। इससे आपको अच्छा लगेगा। अपने पूरे समूह को चूल्हे के पास ले आइए। यहाँ गर्मी होगी।”

स्थानीय कस्बेवासी, तिब्बती और पास की चौकी से आए पुलिसकर्मी दूसरे तंबू में जमा हो रहे थे। लूओ और उनकी पत्नी ने चियांग का पारंपरिक नाश्ता परोसा। दोपहर का भोजन और रात का खाना आमतौर पर तीन तरह के व्यंजनों - चियांग, सिचुआन और शिनजियांग - में पकाया जाता था। लेकिन नाश्ता हमेशा झटपट और आसान तरीके से, चियांग शैली में बनाया जाता था। इसमें सब कुछ मांस ही होता था, सूप में, नूडल्स में और त्सम्पा में मिला हुआ। पिछली शाम की याक करी परोसे जाते ही चट कर ली गई। कटोरों का स्वागत खुशी भरी आवाज़ों और मुस्कानों के साथ किया गया। अब वे धीरे-धीरे पकाए जाने वाले नाश्ते का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे, क्योंकि अब उनके पेट में कुछ तो था।

महाराज उन दो अजनबी तीर्थयात्रियों के बारे में और भी उत्सुक हो रहे थे। उन्हें दूसरे तंबू में जाकर मांस का सूप और याक का मांस ले लेना चाहिए था। वे तो रुचि ही नहीं दिखा रहे थे। क्या वे शाकाहारी नाश्ते का इंतज़ार कर रहे थे? यह तो वाकई अजीब था। क्या चांगपा खानाबदोश लोग सिर्फ शाकाहारी भोजन ही करते हैं? तीर्थयात्री मार्गदर्शक और नवसारी से आए जैन भिक्षु महाराज के पास आकर खड़े हो गए। उन्होंने चूल्हे

पर जल रही आग की ओर हाथ बढ़ाकर उन्हें गर्म किया। सहायक लड़कों ने उन दो रहस्यमय पुरुषों समेत सभी तीर्थयात्रियों को चाय के प्याले दिए।

महाराज ने अपने मशहूर आलू पराठे बेलने शुरू किए, जिनके बारे में स्थानीय तिब्बती लोग बहुत उत्सुक रहते थे और हमेशा उनके आसपास खड़े होकर देखते रहते थे कि कैसे वे मसालेदार और पके हुए आलू के बुरादे को गेहूं की रोटी में भरते हैं, जिसे गरम करके करी के साथ खाने के लिए तैयार किया जाता है। नवसारी के तीर्थयात्री गाइड ने महाराज से हिंदी में कहा, "हे महाराज, हमें चाय पिलाने के लिए धन्यवाद, जिससे हमें ऐसा लग रहा है कि हम गुजरात वापस आ गए हैं। मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ, और इसीलिए मैं आपसे हिंदी में बात कर रहा हूँ, गुजराती में नहीं। क्या यह ठीक है? मैंने अपने जैन भाई और गुरुजी से बात की, और हम आपसे पूछना चाहते थे कि क्या आप इन दो आदमियों के बारे में कुछ जानते हैं? वे देखने में इसी जगह के लगते हैं, लेकिन हम जानना चाहते हैं कि क्या आप उन्हें जानते हैं?"

जैन भिक्षु ने हिंदी में कहा, "महाराज, हम हिंदी में बोलते हैं, गुजराती में नहीं, इसके पीछे एक कारण है। ये दोनों व्यक्ति कोरा में हमारे साथ थे। वे हमारे साथ तो नहीं थे, लेकिन आस-पास ही थे और हमने उन्हें कई बार देखा था। हमने उनके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा, लेकिन रात में जब हम सब बारिश से बचने के लिए आश्रय ले रहे थे, तब जो हमने सुना, उससे हमारी जिज्ञासा बढ़ गई है। और कोरा के दौरान इन दोनों व्यक्तियों के बारे में जो हमने देखा या नहीं देखा, उससे हमारी जिज्ञासा और भी बढ़ गई है। क्या आप उन्हें जानते हैं?"

महाराज हैरान थे। उन्होंने सोचा था कि ये दोनों आदमी शिक्कानहे में दारचेन जाने के लिए आए हैं, क्योंकि वे ज़्यादा थके हुए या परेशान नहीं लग रहे थे। नवसारी तीर्थयात्री हिंदी में बात क्यों करना चाहते हैं, गुजराती में क्यों नहीं? यह तो वाकई अजीब था, उन्होंने सोचा। उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, मेरे भाइयों। मैं उन्हें नहीं जानता। रात में आपने इस जगह पर जो सुना, उसमें ऐसा क्या खास था?"

तीर्थयात्री गाइड ने कहा, "महाराज, आप जानते हैं कि हम नवसारी से हैं। इसलिए हम गुजराती, हिंदी और कच्छी भाषाओं के विभिन्न रूपों से परिचित हैं। ये दो आदमी, जो तिब्बत से आए हुए लग रहे थे, एक अजीब और अपरिचित भाषा बोल रहे थे जो हमने केवल नवसारी में ही सुनी है। यह गुजराती नहीं है। वे ईरान के लोगों, पारसियों के प्राचीन पुरोहितों की भाषा बोल रहे थे। यह वास्तव में वह भाषा नहीं थी जो हम रोज़ाना अपने मिलने वाले पारसियों से सुनते हैं। यह बहुत अलग थी। लेकिन हमें लगा कि यह उसी प्रकार की प्राचीन पारसी भाषा है जो उनके पुजारी उनके विवाह और धार्मिक समारोहों में बोलते हैं। यह पूरी तरह से एक जैसी नहीं थी, लेकिन मिलती-जुलती थी।"

जैन भिक्षु ने आगे कहा, "हाँ। बात यही थी। अजीब बात यह थी कि जब हम दारचेन में अपना कोरा पूरा कर चुके थे, तब ये दोनों व्यक्ति बारह अन्य तीर्थयात्रियों के साथ हमारे समूह के पास आए और उनके साथ आगे बढ़ गए और तारबोचे से ही लौट आए। बारह अन्य तीर्थयात्री आगे चले गए। आप अपने साथियों को छोड़कर तारबोचे तक क्यों जाएंगे?"

***

विजय कुलकर्णी मानसरोवर झील के पास स्थित अपने चार लोगों वाले अल्पाइन टेंट में रात भर तेज बारिश के बीच जागते रहे। उनका शिविर झील से कुछ दूरी पर एक गाँव के पास था। उन्होंने अपने टेंट एक स्कूल की चारदीवारी के बाहर लगाए थे। स्कूल की इमारतों और पास के प्रार्थना कक्ष ने रात भर हुई ओलावृष्टि से उन्हें कुछ हद तक सुरक्षा प्रदान की थी। भोर होते ही तूफान थम गया और आश्चर्यजनक रूप से सुबह का कोहरा और ठंडी हवा गायब थी।

वह तंबू वाले इलाके में घूमते हुए मानसरोवर झील के शांत पानी को निहार रहा था। लहरें किनारे से टकरा रही थीं और उनकी हल्की सी आवाज़ सुनाई दे रही थी। इसका मतलब था कि गाँव में सुबह काफ़ी सन्नाटा था। विजय ने सोचा, यह अजीब बात है। उसे तो खूंखार कुत्तों और गाँव के दूसरे कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुननी चाहिए थी। पास में बैठे पालतू याक भी चुप थे। शायद सभी, इंसान और जानवर, रात भर जागते-जागते थक गए थे।

उनके साथी अपने तंबुओं से बाहर नहीं निकले थे। वे जानते थे कि सूरज निकलने तक और दोबारा तूफ़ान आने की आशंका न होने तक कहीं हिलना-डुलना संभव नहीं है। समूह आराम करने और ज़रूरी विश्राम पाने का मौका ढूंढ रहा था। विजय स्कूल परिसर के द्वार के पास गया और अंदर देखा। कई पैदल यात्री और तीर्थयात्री समूहों ने परिसर के अंदर अपने तंबू लगा रखे थे। स्कूल की इमारत एक खुले खेल के मैदान के चारों ओर तीन तरफ से बनी हुई थी। यह एक समझदारी भरा फैसला था। तंबू उड़े नहीं थे और कोई नुकसान भी नहीं दिख रहा था। स्कूल के द्वार गांव के कुत्तों और याकों से होने वाली परेशानी को भी रोक सकते थे।

विजय अपने तंबू में वापस गया और अंदर देखा। उसकी टीम जाग रही थी और इधर-उधर घूम रही थी। हिमांशु और परमिता बाहर आए और उसके साथ घूमने लगे। वे जलभूवैज्ञानिक थे और चट्टानों के नमूने एकत्र करने और क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए इस अभियान पर आए थे। यह क्षेत्र उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं था और उन्हें इस बात की खुशी थी कि विजय और अन्य ट्रेकिंग लीडर रसद की चिंता कर रहे होंगे। यह एक मिश्रित समूह था, जिसमें पर्वतारोही, तीर्थयात्री, जलभूवैज्ञानिक, अंतर्देशीय मत्स्य विशेषज्ञ, वन्यजीव विशेषज्ञ, फोटोग्राफर, पक्षी प्रेमी और टूर गाइड शामिल थे।

हर समूह का अपना-अपना एजेंडा था। वे अपने-अपने काम में लगे रहते थे, जबकि टूर गाइड और ट्रेकिंग लीडर उन्हें तय कार्यक्रम के अनुसार आगे बढ़ाते रहते थे। चीनी लोग इधर-उधर भटकना पसंद नहीं करते थे और आमतौर पर बिना अनुमति के की जाने वाली किसी भी अनौपचारिक पढ़ाई को नापसंद करते थे। विजय ने सोचा, ठीक है, हम भी भारत में ऐसा ही करते, और सिर्फ चीनियों के साथ ही नहीं। हम एक-दूसरे को भी उन चीजों का अध्ययन करने से रोकते जो आमतौर पर हम सभी के लिए स्पष्ट होती हैं।

हिमांशु ने पूछा, "विजयराव, रात को आपको क्या हुआ? मैंने आपको सोते हुए बिल्कुल नहीं देखा। आप पूरी रात तंबू में इधर-उधर घूमते रहे। बारिश में भी आप बाहर निकले और बार-बार अंदर-बाहर आते-जाते रहे।

क्या हुआ? पेट खराब हो गया था?" परमिता हंस पड़ी, क्योंकि वह जानती थी कि हिमांशु को विजय का मज़ाक उड़ाना अच्छा लगता है। उसने आगे कहा, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। विजय साहब का पेट कभी खराब नहीं होता। वे इतने जंगली इलाकों में घूम चुके हैं और हर तरह का खाना खा चुके हैं। उनका पेट खराब हो ही नहीं सकता। वे शायद बारिश की तस्वीरें खींचने की कोशिश कर रहे होंगे और तेज बारिश या ओलावृष्टि में ट्रेकिंग करने के बारे में सोच रहे होंगे।"

विजय उनकी हंसी-मजाक पर मुस्कुराया। वह उन्हें पुराने समय से जानता था, यहां तक कि परमिता को भी। परमिता पुणे विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर छात्रा थी और भूविज्ञान में गहरी रुचि रखती थी। हिमांशु ने उसे जलभूवैज्ञानिक और अभियानों का शौकीन बना दिया था। वे दोनों कई अभियानों में उसके साथ गए थे और अपने काम में सच्चे और काफी निपुण थे। विजय ने जवाब दिया, "पेट खराब नहीं हुआ। मुझे नहीं पता क्या हुआ। मुझे बिल्कुल नींद नहीं आई। मैं काफी देर तक तंबू में बैठा रहा। मैं बहुत उत्सुक था। एक अजीब स्थिति उत्पन्न हो गई थी। कस्बे के कुत्ते भौंक नहीं रहे थे। बहुत तेज बारिश हो रही थी। मुझे लगा कि यह सब व्यर्थ है। हम कैलाश पर्वत की छाया में और मानसरोवर झील के किनारे पर थे। जीवन भर का सुनहरा अवसर, और बारिश हो रही थी। और हम तंबू के अंदर छिपे हुए थे जबकि हमारे पास बेहतरीन बारिश से बचाव के कपड़े और किट थे। अंदर क्यों छिपें? मैंने बाहर जाकर बारिश देखने का फैसला किया।"

"तो तुम इतने अलग क्यों दिख रहे हो?" परमिता ने पूछा। "तुम एकदम अलग लग रहे हो। तुम पूरी तरह से अजीब और विचित्र दिख रहे हो। क्या हुआ? क्या किसी कुत्ते ने तुम पर हमला किया, या याक ने तुम पर झपट्टा मारा? तुम बहुत डरे हुए लग रहे हो, तुम्हारे सारे बाल खड़े हो गए हैं, और तुम बहुत घबराए हुए, कांपते हुए और डरे हुए चल रहे हो।"

विजय ने सिर हिलाया। उसे खुशी थी कि यह विषय इतनी जल्दी सामने आ गया। वह अपने मन का बोझ हल्का करना चाहता था और अपने दोस्तों से बात करना चाहता था। उसने कहा, "मेरी रात बहुत अजीब गुज़री। पूरी रात अजीब ही अजीब थी। जितनी भी घटनाएँ हुईं, सब अजीब थीं। कोई एक घटना या गड़बड़ी नहीं, बल्कि सब कुछ बहुत अलग था। मैं पूरी तरह से तैयार होकर घूम रहा था, और मुझे नहीं लगता कि बारिश में मुझे किसी ने देखा होगा, क्योंकि मेरी पूरी किट काली थी, और यहाँ पूरी रात अंधेरा छाया हुआ था, बारिश इतनी तेज़ हो रही थी मानो प्रकृति में और कुछ बचा ही न हो।"

लगभग रात के 2 बजे, मैंने गाँव के मास्टिफ और दूसरे कुत्तों को देखा। वे सब सिसक रहे थे। वे भीग नहीं रहे थे। वे सब स्कूल के बरामदे और प्रार्थना कक्ष के खुले बरामदे में छिपे हुए थे। वे भीग नहीं रहे थे और बिल्कुल सूखे थे। लेकिन, वे सब सिसक रहे थे। यह बहुत अजीब था। और फिर, मैंने याक देखे। उन्हें तो आश्रय लेना चाहिए था और अपने बाड़ों या ऐसी जगहों पर होना चाहिए था जहाँ उनके लोग उन्हें बारिश से बचाने के लिए ले गए होते।

विजय ने आगे बताया, "याक बारिश में भीगते हुए झुंड बनाकर खड़े थे। वे कैलाश पर्वत को निहार रहे थे। वे अपनी जगह से हिले तक नहीं और न ही अपनी निगाहें पर्वत से हटा पाए। मैं इधर-उधर घूमता रहा और मुझे

एहसास हुआ कि सभी पालतू याक एक साथ आकर खड़े हो गए थे। कुछ तो हो रहा था। क्या वे भूत देख रहे थे? अगर भूत-प्रेत या बुरी आत्माएं थीं, तो वे कैलाश पर्वत को क्यों देख रहे थे?"

हिमांशु ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "विजयराव, यह एक अजीब जगह है, यह तो हम जानते ही थे। यहाँ की कहानियाँ राक्षसों, देवताओं, अच्छे-बुरे आत्माओं और अजीब शक्तियों से ग्रसित मनुष्यों से भरी पड़ी हैं। तो फिर याक भी इसमें अपना हिस्सा क्यों नहीं निभा सकते? लेकिन आपकी बात तो अजीब है। सारे याक एक साथ क्यों आएँगे? वे एक-दूसरे को जानते भी नहीं हैं, और इस गाँव के सारे याक आपस में रिश्तेदार भी नहीं होंगे। वे अलग-अलग गाँवों, कस्बों, प्रांतों और समुदायों से आए हैं। वे कई संकर प्रजातियाँ हैं। वे एक साथ क्यों खड़े होंगे, और वह भी इस भारी बारिश में? यह बात समझ से परे है।"

"मैं सहमत हूँ," विजय ने कहा। "मैंने भी यही सोचा था। मैंने चारों ओर देखा कि कोई इंसान घूम रहा है या नहीं। कोई नहीं था। मैं याक के झुंड के चारों ओर, काफी दूरी बनाए रखते हुए, तब तक चलता रहा जब तक मैं उनके ठीक पीछे सीधी रेखा में नहीं आ गया, और मानसरोवर झील मेरे पीछे थी। मैं मानसरोवर झील से लेकर इकट्ठे हुए याकों तक की सीधी रेखा में था। मैं देख सकता था कि वे क्या देख रहे थे। मैं कैलाश पर्वत को भी देख रहा था। मैं आपको बता दूँ, हिमांशु, परमिता, यह जगह सचमुच अजीब है।"

लगभग रात के 3 बजे होंगे। यहाँ बहुत तेज़ बारिश हो रही थी, और झील व कैलाश पर्वत तक के इलाके में भी बारिश हो रही थी। लेकिन, जब मैं याकों को देखता रहा, तो मुझे लगा कि कैलाश पर्वत की चोटियों पर रात में बारिश रुक गई है, जबकि बाकी जगहों पर बारिश हो रही थी। कैलाश पर्वत और उसकी चोटियाँ चमक रही थीं। मुझे चाँद बहुत तेज़ी से चमकता हुआ दिखाई दे रहा था, और बर्फ से ढकी चोटी दिन के उजाले की तरह चमक रही थी। यह नज़ारा लगभग एक घंटे तक बना रहा। और अचानक, चोटी दिखना बंद हो गई। मुझे लगता है कि वहाँ बारिश शुरू हो गई थी।

"उस समय, याक एक जगह स्थिर खड़े रहे, एक-दूसरे के और करीब आते गए, कैलाश शिखर को देखते रहे। बारिश शुरू होने के बाद भी वे उसी तरह खड़े रहे। मैं अपने तंबू में वापस आया और कुछ देर बैठा रहा। तुम दोनों इतनी शांति से सो रहे थे कि मुझे तुम्हें परेशान करने का मन ही नहीं हुआ। मैं सुबह करीब 4:30 बजे बाहर आया, तो याक जा चुके थे और आसपास कोई जानवर या इंसान नहीं था। स्कूल की इमारत के बरामदे पर कुत्ते अभी भी सिसक रहे थे।"

विजय ने आगे कहा, "कैलाश की चोटी पर कुछ ऐसा हुआ है जिसके बारे में यहाँ दूर खड़े याक और आम तौर पर खतरनाक दिखने वाले कुत्ते भी जानते थे। ऐसा लगता था जैसे उन्हें पता था कि वहाँ कुछ हो रहा है। हम इसके बारे में जाने बिना यहाँ कैसे रह सकते हैं? मैं अपने अभियान की योजना बदलना चाहता हूँ। चलो एक बार फिर कोरा (यात्रा) पर चलते हैं। मैं आस-पास के मठों और तीर्थयात्रा मार्ग पर जाकर सभी से पूछना चाहता हूँ कि वहाँ क्या हुआ था। मुझे आश्चर्य है कि क्या कोई उस घटना का प्रत्यक्षदर्शी था।"

***

सांग्ये, महान वृद्ध किन्हाई घुमंतू घुड़सवार, दिरापुक में बेचैन थे, क्योंकि वे तूफान के थमने का इंतजार कर रहे थे। उन्हें सबसे बुरे की आशंका थी, क्योंकि दिरापुक और ड्रोल्मा ला दर्रा कांग रेनपोचे के चारों ओर की तीर्थयात्रा के सबसे ऊंचे स्थान थे। उन्होंने प्रार्थना की कि तीर्थयात्रा के रास्ते पर बारिश के बाद बर्फ या पानी की मोटी चादर न बिछ जाए। याक अपने सामान के साथ फिसल सकते हैं और उनकी टांगें टूट सकती हैं। उनकी देखभाल कौन करेगा? इन क्षेत्रों में चिकित्सा सहायता मिलना मुश्किल था और जानवरों को तीर्थयात्रा का सबसे बुरा अनुभव होता था।

उन्हें पता था कि उन्होंने अपने घोड़ों, याकों, खच्चरों और टट्टुओं की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा है। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया था कि उनके विशालकाय कुत्ते सुरक्षित रहें। दिरापुक के उत्तर में छिपी घाटियों में देर से सूरज निकला और सांग्ये पत्थरों, पुरानी ईंटों, कबाड़ से मिली टिन की चादरों, कैनवास के कपड़े और छलावरण वाले सेना के वेबिंग से बनी अपनी झोपड़ी के अंदर इंतजार कर रहे थे। झोपड़ी एक दीवार जैसी थी, जिससे उन्हें और उनके परिवार को पहाड़ की उस लटकती हुई चट्टान के भीतर रहने में मदद मिली, जिसके पीछे गुफाओं की एक श्रृंखला थी। घाटी में नीचे से या दिरापुक की तंबू वाली बस्तियों से गुफाओं को नहीं देखा जा सकता था। किन्हाई का वह बूढ़ा व्यक्ति लटकती हुई चट्टान में अपनी देखरेख में सभी मनुष्यों और जानवरों की रक्षा करता था।

गुफाओं का एक सिरा और चट्टानी आवरण तंबूदार भोजनालयों, शिविर क्षेत्रों और सीमेंट से बने कमरों की बस्ती तक फैला हुआ था, जहाँ खाने-पीने की चीजें और बत्तखें रखी जाती थीं। अपने छिपने के स्थान से, सांग्ये दिरापुक के ऊपर की घाटी को देख सकता था, जो कांग रेनपोचे से उत्तर-पश्चिम की ओर फैली हुई थी और उससे भी ऊपर अन्य चोटियों की ओर जाती थी जो उससे कहीं नीची थीं। वह नीचे चोकु मठ की ओर जाने वाले रास्ते और ऊपर, पूर्व की ओर, द्रोल्मा ला दर्रे को भी देख सकता था। उसने येशे को आवाज़ दी और वे अपनी बस्ती के किनारे तक गए और दिरापुक के पास तीर्थयात्रियों और अन्य लोगों की आवाजाही को देखने लगे।

येशे ने बज़ानबा और कांगरी, त्सांग खायी नस्ल के मास्टिफ़ कुत्तों को आवाज़ दी, जो गुफाओं के अंदर छाया में छिपे हुए थे और हिले तक नहीं। सांग्ये ने कहा, "उन्हें रहने दो, बारिश के बाद इतनी सुबह बाहर निकलने में उन्हें झिझक हो रही होगी। चलो हम बाहर जाकर देखते हैं कि हमारे सामान का क्या हुआ। तूफान काफी तेज़ था और सुबह होते-होते थम गया।" वे पत्थर के किनारे तक गए, जहाँ शाम और रात में तंबू लगे हुए थे, और देखने लगे। लोग इधर-उधर घूम रहे थे। कुछ यात्री येशे के माता-पिता द्वारा चलाए जा रहे तंबू वाले भोजनालय की ओर जा रहे थे।

सांग्ये ने देखा कि येशे के माता-पिता जल्दी उठ गए थे और महिला सहायक भी सक्रिय थीं, वे सूप, गर्म पानी और चाय गर्म करने लगी थीं। तीर्थयात्री मीठी चाय और सूप का स्वागत करेंगे। बहुत जल्द, वे गरमागरम और स्वादिष्ट नाश्ते का भी इंतज़ार करेंगे। बूढ़ा व्यक्ति अपने हाथ में पकड़ी चाय के प्याले से खुश था। उसने येशे को कंधों से पकड़ा और पथरीले टीले के पिछले हिस्से की ओर चलने लगा। घाटियों से आने वाले रास्ते

आमतौर पर आने वाली बर्फबारी या छिपी हुई अचानक बाढ़ के अच्छे संकेत होते थे। येशे के माता-पिता ने सेना के कपड़े से बने तंबुओं में सब्जियां लगाई थीं।

तम्बुओं ने सब्जियों को कड़ाके की ठंड और रात-सुबह की ओस से बचाया। तम्बुओं के पास पहुँचते ही सांग्ये और येशे ने एक-दूसरे को आवाज़ दी और रात के दौरान हुई भयानक तबाही की ओर इशारा किया। दो सबसे बड़े तंबू गिरा दिए गए थे। छोटे तंबू पूरी तरह से सही-सलामत खड़े थे। सबसे बड़े तंबू पहाड़ी पगडंडी की ओर थे जो ऊँची घाटियों से नीचे आती थी और ऊँचे-ऊँचे पत्थरों के बीच बहने वाली पहाड़ी नदी के किनारे स्थित थी।

येशे ने सबसे पहले कहा, "यह अजीब बात है, बड़े तंबू गिर गए हैं जबकि छोटे खड़े हैं और उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ है।" बूढ़े ने सिर हिलाया और नुकसान वाली जगह की ओर दौड़ा। तंबू की कीलें एक कतार में उखड़ गई थीं और तंबू बस बोई गई सब्जियों पर गिर गए थे। फसल बर्बाद नहीं हुई थी। तंबुओं को बस एक बार फिर से समेटना पड़ा। उसने कीलों को ध्यान से देखा। तंबू लगाते समय उसने ही उन्हें ठोका था और वह जानता था कि उसने उन्हें काफी गहराई तक गाड़ा था। वे उखड़ कैसे गईं? उसने एक अजीब बात देखी। दोनों तंबुओं के बीच की कीलें उखड़ गई थीं। तंबुओं के दूसरी तरफ की कीलें सही सलामत थीं और उनमें कोई गड़बड़ी या नुकसान नहीं था। तो फिर तंबुओं के बीच के रास्ते की कीलें क्यों उखड़ गईं?

सांग्ये और येशे दो बड़े तंबुओं के बीच बने रास्ते की ओर दौड़े। यह रास्ता घाटी की ऊपरी ढलानों से नीचे उतरकर दिरापुक के तंबुओं और बस्तियों के पूर्व में स्थित निचली ढलानों की ओर जाता था। यह रास्ता ऊपरी ढलानों से नदी की धारा के साथ-साथ चलता था, लेकिन पचास-सौ साल पहले हुए हिमस्खलन और भूस्खलन के दौरान गिरे बड़े-बड़े पत्थरों के कारण यह रास्ता टेढ़ा हो गया था। संकरे रास्ते के दोनों ओर दो तंबू लगे हुए थे। इस क्षेत्र में बहुत कम चहल-पहल थी, और खासकर बारिश के दौरान तो कोई भी व्यक्ति या जानवर ऊपरी ढलानों पर जाने की हिम्मत नहीं करता था।

येशे ने सोचा, "सारे तंबू के खूंटे क्यों उखड़ गए? इन्हें उखाड़ने की ताकत किसमें होगी? इस रास्ते पर लगे सारे तंबू उखड़ गए हैं। किस तरह के जानवर ने, और किस ताकत से इतने सारे खूंटे उखाड़े होंगे?" बूढ़े ने सहमति में सिर हिलाया, और गौर से देखते हुए इधर-उधर घूमने लगा। "येशे, ध्यान से देखो। सारे खूंटे सिर्फ एक ही दिशा में उखड़े हैं। कोई चीज़ या कोई व्यक्ति इस रास्ते से नीचे आया है, और आते-आते तंबू उखड़ गए हैं। जो भी था, बहुत ताकतवर था। बेहद ताकतवर।"

पगडंडी काफी चौड़ी थी, लेकिन सब्जी के तंबुओं के पास जाकर संकरी हो जाती थी। येशे के माता-पिता ने पहली बार इतनी ऊंचाई पर सब्जियां उगाने की कोशिश की थी। प्रयोग के तौर पर ही सही, लेकिन यह सफल रहा था। दिरापुक या दारचेन के स्थानीय ग्रामीणों को इस प्रयोग के बारे में विस्तार से कुछ नहीं पता था। जब उन्होंने महिला सहायकों या भटकती भेड़ों को ढूंढने के लिए पगडंडी पर जाने वाले चरवाहों से इसके बारे में सुना, तो वे हंस पड़े थे। सांग्ये ने तंबू वाले इलाके के ऊपर पगडंडी को देखा। यहाँ कोई जंगल नहीं था। घास के गुच्छे ही एकमात्र वनस्पति थे।

ऊपर घाटी में सबसे नज़दीकी जगह पर पगडंडी लगभग पाँच मीटर चौड़ी थी, जहाँ से वह नदी से अलग होकर ऊँचे-ऊँचे पत्थरों के कारण दूर हो गई। ज़रूर कोई झुंड रहा होगा, जो बारिश से बचने के लिए ढलानों से नीचे उतर रहा था। चिरू हिरणों में खूंटियों को उखाड़ने की ताकत नहीं होती। कियांग हिरणों के बारे में यह ज्ञात नहीं था कि वे ऊपरी ढलानों पर छिपते हैं। वह सोचने लगा कि इन ऊँची ढलानों पर और कौन सा जानवर पाया जाता होगा। येशे बूढ़े आदमी के बगल में खड़ा था, और दोनों किन्हाई खानाबदोश यह कल्पना करने की कोशिश कर रहे थे कि रात में क्या हुआ होगा। जो भी नीचे आया हो, जानवरों का वह बड़ा झुंड बहुत ताकतवर था, और उसे चलने के लिए बहुत जगह चाहिए थी। यह झुंड एक साथ चल रहा था। उन्हें ऊपरी ढलानों से दूर जाना था।

“वे कहाँ जाएँगे?” सांग्ये ने लगभग फुसफुसाते हुए मन ही मन सोचा, “येशे, मेरे बेटे, इतने ताकतवर जानवरों को ऊपरी ढलानों से नीचे जाने की क्या ज़रूरत है? वे डर के मारे नीचे नहीं आ रहे थे, मेरे बेटे, वे कहीं जा रहे थे। वे कहाँ जाएँगे? यह रास्ता तीर्थयात्रियों, पर्वतारोहियों, अच्छे वन्यजीव प्रेमियों और स्थानीय ग्रामीणों से भरा रहता है। अगर इतने ताकतवर जानवरों का झुंड यहाँ घूमता हुआ दिखाई दे, तो तुरंत चर्चा हो जाएगी।”

“मुझे लगता है कि ये जानवर बारिश के आने का इंतज़ार कर रहे थे। वे कोरा के इस इलाके में एक ऐसे पल का इंतज़ार कर रहे थे, जब उन्हें पूरा यकीन हो जाए कि कोई भी इधर-उधर नहीं घूम रहा होगा। बारिश ने उन्हें मौका दे दिया। वे कहीं जा रहे थे और बहुत जल्दबाज़ी में थे, और अंधेरी रात में तूफ़ान में चल रहे थे। तंबू की रस्सियाँ इन जानवरों की ताकत के सामने बस एक मामूली रुकावट रही होंगी। जो भी था, यह बहुत बड़े और बहुत ताकतवर जानवरों का झुंड था। ये चिरू, कियांग, जंगली घोड़े या पालतू याक नहीं हो सकते थे। यहाँ तक कि जिन जंगली याकों को हम जानते हैं, वे भी इन ऊँची घाटियों में नहीं पाए जाते।”

येशे ने अचरज से चारों ओर देखा। उसके दादाजी सही थे। किसी और नुकसान का कोई निशान नहीं था। यहाँ तक कि सब्जियाँ भी रौंदी नहीं गई थीं। तंबू वहीं पड़े थे जहाँ खूंटियाँ उखड़ने पर गिर गए थे। उसने ज़मीन की ओर देखा, जहाँ नदी के किनारे सुबह की ओस जमी हुई थी, और इशारा करते हुए कहा, “देखो, वहाँ, घास के गुच्छे के किनारे जमा हुई उस ओस को देखो। यह एक स्पष्ट निशान है। यह एक याक का पदचिह्न है। लेकिन, कीचड़ और घास में पदचिह्न का आकार और गहराई देखो। यह कोई सामान्य जंगली याक या पालतू याक नहीं है। यह बहुत बड़ा था। यह जानवर बहुत भारी था। और, अगर यह बहुत ताकतवर झुंड था, तो यह जंगली याकों का एक बहुत बड़ा झुंड था, जो इस घाटी से नीचे कोरा के रास्ते की ओर जा रहा था। वे कहाँ गए? वे कहाँ से आए? वे इस घाटी में सबसे क्यों छिपते हैं?”

***

दारचेन में तंबू वाले भोजनालय में सुबह-सुबह तीर्थयात्रियों और स्थानीय ग्रामीणों की भारी भीड़ थी, जो गरमागरम सूप और चाय के लिए कतार में खड़े थे। बारिश एक घंटा पहले ही थम गई थी और तीर्थयात्री इधर-

उधर घूमने लगे थे। वाहनों को तंबू से बाहर निकाल लिया गया, जहाँ उन्हें ओलों से बचाने के लिए रखा गया था। मेजों को फिर से व्यवस्थित किया गया और तंबू के बाहर दो अतिरिक्त गर्म पानी के डिस्पेंसर लगाए गए। तीर्थयात्री गर्म पानी के टैंकों के पास आकर अपने कटोरे भर रहे थे ताकि वे हाथ-मुँह धोकर दिन की शुरुआत कर सकें। यह व्यवस्था रोज़ाना नहीं थी, लेकिन बारिश के बाद भोजनालय के मालिक को लगा कि इससे तीर्थयात्रियों को अपने यहाँ स्वागत का एहसास होगा।

बारिश रुकने का इंतज़ार करते हुए चीनी पुलिसकर्मी शेनशे भोजनालय में सो गया था। उसने एक गर्म कोना चुन लिया था और दूसरों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे स्लीपिंग बैग की जगह गोल तकियों और गद्दे पर सो रहा था। नालंदा का बौद्ध भिक्षु और भारत के अमृतसर का सिख साधु भी पास ही सो रहे थे। उनका सामान उनके बीच रखा हुआ था। तंबू के अंदर चीनी पुलिसकर्मी की मौजूदगी ने किसी भी चालाक चोर को तूफानी रात में तीर्थयात्रियों के सोते समय उनके बैगों की तलाशी लेने से रोक दिया था।

शेंशे ने सोचा, यह एक अजीब दुनिया थी। उसके परिवार और बड़े रिश्तेदारों ने उसे तिब्बत में पागल न होने की चेतावनी दी थी। उसने सोचा था कि उसकी तैनाती तिब्बत के किसी दूरदराज इलाके में होगी और वह अपने परिवार से उतनी बार नहीं मिल पाएगा जितनी बार वह चाहता होगा। लेकिन उसने इस सुनसान जगह पर तैनाती की उम्मीद नहीं की थी, जिसे वह अक्सर सर्कस कहता था। हर दिन अलग होता था। यह ल्हासा जैसा नहीं था, जहाँ हर पुलिसकर्मी को बेहद सतर्क और चौकस रहना पड़ता था। उसने पाया था कि यह जगह हर दिन एक अलग देश होती थी।

हर दिन वह तिब्बत के विभिन्न स्थानों, अन्य देशों और सभी समुदायों से आए नए लोगों को देखता था। हर आगंतुक के यहाँ आने का अपना कारण था। हर आगंतुक के लिए, यह जीवन भर की एक यादगार यात्रा प्रतीत होती थी। अधिकतर लोग ऐसे स्थानों से आते थे जहाँ ऊँचे पहाड़ नहीं थे। तिब्बतियों के लिए भी, यह स्थान एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल था। चीनी पर्यटक और चीन के अन्य हिस्सों से तीर्थयात्री यहाँ आने लगे थे। शेनशे इस विचित्र मिलन स्थल के बारे में सोचता रहता था। दुनिया का सबसे ऊँचा स्थान, जैसा कि वह अक्सर दूसरों को तीर्थयात्रा के बारे में चर्चा करते हुए सुनता था।

कल उन्हें एक बिलकुल नई बात पता चली। नालंदा के बौद्ध भिक्षु तिब्बती थे, लेकिन तिब्बत के मूल निवासी नहीं थे। वे भारत में जन्मी तीसरी पीढ़ी के थे और एक ऐसे मठ से आए थे जो तिब्बती निर्वासितों के क्षेत्र में नहीं था। वे एक ऐसे व्यक्ति के साथ यात्रा कर रहे थे जो उनसे बिल्कुल अलग धर्म का अनुयायी था। क्या यह जायज़ था? भारत से आने वाले हर तीर्थयात्री एक-दूसरे से बहुत अलग लगते थे। यह दूसरा तीर्थयात्री एक ऐसे समुदाय से था जिनसे उनकी मुलाक़ात बहुत कम हुई थी। उन्होंने उन्हें चीन के अन्य शहरों में कभी-कभार और कभी-कभार ल्हासा में देखा था। उन्होंने ल्हासा जाने वाली नई ट्रेन में भी उनमें से कुछ को देखा था। लेकिन दारचेन में उनकी कभी किसी से मुलाक़ात नहीं हुई थी और न ही उन्होंने कोरा में किसी सिख तीर्थयात्री के बारे में सुना था।

सिख तीर्थयात्री को कोरा और कांग रेनपोचे पर्वत के बारे में सब कुछ पता था। वह इसे सुमेरु पर्वत कहता था। यह कुछ नया था, शेषे ने सोचा। उसने पर्वत के सभी नाम याद कर रखे थे, और जब उसे लगा कि उसने सभी नाम याद कर लिए हैं, तो इस सिख तीर्थयात्री ने इसे एक और नाम से पुकार दिया। वे शांति से सो रहे थे। हालांकि, उसने देखा कि सिख तीर्थयात्री रात भर नहीं सोया था। वह पूरी रात पर्वत की ओर मुख करके बैठा रहा, ध्यान या जप करता रहा। वह अपनी प्रार्थना माला का उपयोग कर धीरे-धीरे जप कर रहा था। बौद्ध भिक्षु एक-दो बार उठा, चुपचाप उसे देखता रहा, और फिर सो गया।

एक बार सिख तंबू से बाहर निकलकर, अच्छी सी बरसाती जैकेट पहनकर, प्रवेश द्वार पर खड़ा हो गया। शेंशे उसे देखता रहा। सिख बेचैन लग रहा था और अपनी प्रार्थना की माला लिए बार-बार तंबू के अंदर-बाहर आ-जा रहा था। वह तंबू से बाहर जाकर खड़ा हो जाता, इधर-उधर देखता और कुछ खोजता रहता। नालंदा का बौद्ध भिक्षु दो बार जागा और सिख तीर्थयात्री को देखकर उसकी बेचैनी पर मुस्कुराया और फिर सो गया। शेंशे को इस बात पर आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि शायद इस अजीब जगह और पवित्र पर्वत की निकटता के कारण ही वह अपने धर्म के कुछ सवालों के जवाब खोजने के लिए इतनी दूर आया होगा।

शेनशे दोनों तीर्थयात्रियों के जागने का इंतज़ार कर रहा था। वह पास ही आराम से बैठा था, उसे लग रहा था कि दिन बहुत लंबा होगा और बहुत सारे काम निपटाने होंगे। उसे जो शांति से बैठने का मौका मिला था, उसका वह पूरा फायदा उठाना चाहता था। पुलिस चौकी पास ही थी, लेकिन बाकी पुलिस कांस्टेबल शिकुआनहे गए हुए थे और उनके लौटने की उम्मीद थी। उसने सोचा कि वे बारिश की वजह से फंस गए होंगे।

वह तंबू वाले भोजनालय के मालिक के निमंत्रण पर नाश्ते के लिए उनके साथ बैठ गया। गरमा गरम नूडल्स, सूप और चाय ने उसका दिल जीत लिया। इसी बीच, दोनों तीर्थयात्री जाग गए और तैयार हो गए। उन्होंने अपने स्लीपिंग बैग और थैले पैक कर लिए। शेन्शे ने गौर किया कि वे अपने साथ अलग-अलग टेंट किट भी लाए थे। उसके इशारे पर, भोजनालय के मालिक ने दोनों तीर्थयात्रियों को अपने साथ नाश्ते पर बैठने के लिए आमंत्रित किया। सिख तीर्थयात्री चीनी पुलिसकर्मी के बगल में बैठ गया, हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा और मन ही मन कुछ वाक्य दोहराता रहा।

अपनी जिज्ञासा को रोक न पाने के कारण, शेनशे ने पूछा, “हे श्रीमान सिंह, आपकी नींद अच्छी नहीं रही। मैंने देखा कि आप रात भर बैठे ध्यान कर रहे थे। आप इधर-उधर घूम रहे थे और बारिश में भीगने के लिए बाहर गए थे। कोई बात आपको परेशान कर रही थी। क्या आप ठीक हैं? सब ठीक है? कोई समस्या तो नहीं? क्या इन तिब्बती होटलों के घटिया खाने से आपका पेट ठीक है? बीजिंग जैसा तो नहीं है, आप जानते ही हैं।” तंबू वाले भोजनालय के मालिक और नालंदा के बौद्ध भिक्षु ने तिब्बत के बारे में चीनी पुलिसकर्मी के सवालों का कोई जवाब नहीं दिया। नालंदा के भिक्षु ने सोचा कि तिब्बत के ऊंचे पहाड़ों की हर बात हान चीनी लोगों के लिए दुखद प्रतीत होती है, क्योंकि उन्हें पिछले कई दशकों में तिब्बतियों पर हुए अत्याचारों और उत्पीड़न के बारे में बताया गया था। उन्होंने यह उम्मीद नहीं की थी कि यह चीन और तिब्बत के आम लोगों के मन में

इतनी गहराई से बैठ जाएगा। उन्होंने सोचा कि उन्हें आभारी होना चाहिए, क्योंकि उनका सारा पानी तिब्बत से आता है। अगर कांग रेनपोचे न होते, तो चीन के लोग बहुत पहले ही इतिहास में नष्ट हो गए होते।

“अमृतसर के सरदार अमरपाल सिंह,” बौद्ध भिक्षु ने कहा और शेनशे द्वारा पूछे गए प्रश्नों का अनुवाद करते हुए कहा, “मैंने भी देखा कि आपकी रात बहुत अशांत गुज़री, हालाँकि आप निरंतर प्रार्थना में लीन थे। कृपया हमें बताइए कि आपको इतनी बुरी तरह से क्या परेशान कर रहा था। मैंने रात में आपसे पूछने का सोचा था, लेकिन हर बार जब मैं जागा, तो मैंने आपको अपनी प्रार्थना की माला और प्रार्थना की पुस्तकों के साथ देखा। उस समय मुझे आपको परेशान करने का साहस नहीं हुआ।”

सिख तीर्थयात्री ने शेषे को प्रणाम किया, और बौद्ध भिक्षु द्वारा अनुवाद किए जाने पर, उन्होंने धीरे-धीरे बोलना शुरू किया। उन्होंने कहा, “जी हाँ। आप सचमुच एक सच्चे पुलिसकर्मी हैं, मैं देख सकता हूँ। भारत में भी, मुझ पर हमेशा नज़र रखी जाती है। लोग मुझे नहीं समझते। मेरे भाई, मंदिर की सेवा में लगे सिख, समझते हैं कि मैं क्या अनुभव कर सकता हूँ। मैं विस्तार से नहीं समझा सकता। जब मैं ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करता हूँ, तो मैं अनुभूति कर सकता हूँ, अनुभव कर सकता हूँ या समाधि में जा सकता हूँ। मैं शांति से ध्यान कर सकता हूँ। जब तक मैं समाधि से बाहर नहीं आता, तब तक मुझे भोजन या पानी की आवश्यकता नहीं होती।”

“लेकिन, कल रात, बारिश के दौरान जो हुआ, वह बहुत अजीब था। मैं आमतौर पर भीड़ भरी सड़क पर या रेलगाड़ी के अंदर भी ध्यान करने बैठ जाता हूँ। हमारे मंदिर में हमेशा लोग रहते हैं, और फिर भी मैं मन की शांति के साथ पवित्र ग्रंथ पढ़ता रहता हूँ। लेकिन, कल मैं बिल्कुल भी प्रार्थना नहीं कर पाया। मैंने पूरी कोशिश की। मैं बार-बार रुकता और शुरू करता रहा। मैं अपनी प्रार्थना की माला का एक चक्कर भी पूरा नहीं कर पाया।”

“मैं कई बार तम्बू से बाहर निकला,” अमरपाल ने आगे कहा। “मैंने सुमेरु पर्वत से शक्ति प्राप्त करने का प्रयास किया। मैंने अपने गुरु को पुकारा। लेकिन कुछ ऐसा था जो मुझे अपने ईश्वर से बात करने, प्रार्थना करने और पवित्र नाम का जाप करने से रोक रहा था, जैसा कि मुझे सिखाया गया था और जैसा कि मैं अपने प्रिय अमृतसर में इतने वर्षों से करता आ रहा हूँ। मैं पवित्र पर्वत के दर्शन करने के लिए बाहर निकला, लेकिन असफल रहा।”

“और फिर, एक समय ऐसा आया जब मैंने अपनी आँखें बंद कीं और पूरी तरह से अपने वाहेगुरु, अपने मार्गदर्शक और अपनी प्रेरणा पर ध्यान केंद्रित किया, तो मुझे एक चमत्कार दिखाई दिया। तेज़ बारिश के बीच, मुझे सुमेरु पर्वत चाँदनी में चमकता हुआ दिखाई दिया। सुमेरु पर बारिश रुक गई थी और चाँद चमक रहा था। सुमेरु की बर्फीली चोटी इतनी शानदार थी कि मैं उसका वर्णन करने के लिए शब्द ही नहीं ढूंढ पा रहा था। और फिर, वह गायब हो गई। सुमेरु पर फिर से बारिश शुरू हो गई। चोटी एक बार फिर मेरी नज़रों से ओझल हो गई। मैं एक बार फिर अपनी प्रार्थना ठीक से नहीं कर पा रहा था। वहाँ क्या हुआ होगा? मुझे सुमेरु पर्वत पर जाकर वहाँ का भ्रमण करना होगा।”

***

सांग्ये और येशे टूटे हुए तंबूओं के रास्ते पर चलते हुए बड़े याकों के झुंड के और पदचिह्नों की तलाश करने लगे। उन्हें तंबूओं के आसपास कोई निशान नहीं मिला। सांग्ये ने सोचा, यह आश्चर्यजनक था, क्योंकि उसने ऐसे झुंड के बारे में अपने परदादा की कहानियों में सुना था, जो वे कांग रेनपोचे से मिलने के दौरान सुनाते थे। परदादा तीर्थयात्रा से लौटकर किन्हाई के मैदानों में आए थे। वे लगभग अंधे हो चुके थे और जब बाकी लोग जंगली घोड़ों को पकड़ने और चराने के लिए बाहर जाते थे, तब उन्हें गाँव में ही रुकना पड़ता था। अधिकांश ग्रामीणों ने केवल कहानियाँ सुनी थीं और उन्हें नज़रअंदाज़ करके अपने काम में लग गए थे।

सांग्ये चुपचाप पगडंडी पर खड़ा था, दिरापुक क्षेत्र और ड्रोल्मा ला दर्रे के ऊपर स्थित पहाड़ों को देख रहा था। ये अज्ञात पहाड़ थे, और यहाँ न तो कोई खोजबीन हुई थी, और न ही कई वर्षों से कोई शिकारी इन क्षेत्रों में गया था। उसने किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में नहीं सुना था जो गया हो और लौट आया हो। वह ढलानों, मोड़ों, घाटियों, दर्रों, चट्टानों, चोटियों और छोटी चोटियों को निहार रहा था। ये पहाड़ कितना बड़ा रहस्य छिपा सकते हैं। उसने मन ही मन सोचा कि दस हजार विशाल जंगली याकों का झुंड आसानी से इन पर्वत श्रृंखलाओं के भीतर छिप सकता था।

वह कई वर्षों से जंगली घोड़ों की चर्चाओं और तिब्बती जानवरों की दुर्लभ नस्लों के व्यापार की तलाश में कांग रेनपोचे की पहाड़ियों और घाटियों में आता रहा था। अब वह इतना मजबूत नहीं था कि इन पर्वत श्रृंखलाओं के भीतर जाकर शिकार कर सके, जाल बिछा सके और जंगली जानवरों के पदचिह्नों का पीछा कर सके, क्योंकि इसमें कई सप्ताह लग जाते। उसके अपने बेटे, येशे के पिता को भी इस कला में कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसमें बहुत धैर्य की आवश्यकता होती थी और पहाड़ों में घूमने के रोमांच के अलावा लगभग कोई प्रतिफल नहीं मिलता था। इसके लिए आपको इन भव्य पहाड़ों और श्रृंखलाओं के साथ एकत्व स्थापित करना पड़ता था। येशे शायद अभी भी ये कौशल सीख सकता है। उसने सोचा, विशाल जंगली याकों के पदचिह्नों जैसी यह किंवदंती ही शायद इसका जवाब हो सकती है।

“चलो, बेटा, घर वापस चलते हैं और सोचते हैं कि क्या करना है,” सांग्ये ने धीरे-धीरे चलते हुए, गहरी सोच में डूबे हुए कहा और प्रार्थना की, “हे हे मेरे अपने रक्त के पुत्र, यह बात बिल्कुल सच हो सकती है कि विशाल जंगली याक ऊंचे पहाड़ों से नीचे पहाड़ी रास्ते पर आते थे। ऐसी कहानी और चर्चा थी, लेकिन वह तुम्हारे पिता के जन्म से भी बहुत पहले की बात है। इस पर्वत ने हमें आशीर्वाद दिया है, और भविष्य में हमारे भाग्य में जो लिखा है, उसका मार्गदर्शन किया है। आओ, सिर झुकाओ और परम ज्ञानी को धन्यवाद दो, और तिब्बत आए हजार बुद्धों को धन्यवाद दो, और धर्मकाया अमिताभ बुद्ध को धन्यवाद दो, जिन्होंने इन पहाड़ों के जादू को प्रकट किया। हमारे पास धन्यवाद देने के लिए बहुत कुछ है।”

येशे जानता था कि उसके दादाजी मानते थे कि कांग रेनपोचे के आसपास की इन पर्वत श्रृंखलाओं का हर पर्वत एक बुद्ध है, और उन्हें यह भी विश्वास था कि हर पर्वत एक सजीव प्राणी है। वह सांग्ये के बगल में खड़ा हुआ, प्रार्थना में सिर झुकाया, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद वह ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था,

क्योंकि उसके मन में विचारों की बाढ़ दौड़ रही थी। विशाल जंगली याक? सबसे ऊंचे जंगली याक से भी ऊंचे? सबसे भारी जंगली याक से भी भारी? एक नहीं, बल्कि कई? क्या यह सच हो सकता है? क्या ऐसा संभव है? वे एक ही पगडंडी पर चले थे। इस क्षेत्र में कई अन्य पगडंडियाँ थीं, और उन्होंने तंबू की कतारों के बीच से इस पगडंडी पर चलना चुना? अगर वे किसी और पगडंडी से आते तो उन्हें कभी पता भी नहीं चलता और न ही उन्हें शक होता।

सांग्ये अपने पोते को भली-भांति जानता था। उसे पता था कि वह बेहद जिज्ञासु और उत्साहित होगा। वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा वह खुद उस उम्र में हुआ करता था। कभी-कभी उसे आश्चर्य होता था कि क्या उसके अपने बेटे ने उसे धोखा दिया है, क्योंकि वह न तो पथप्रदर्शक बना और न ही शिकारी। उसने दुकान खोल ली थी और खाना बनाना शुरू कर दिया था। वह ऐसा कैसे कर सकता था? क्या जीवन में बस इतना ही था? ये पहाड़, दुनिया के सबसे ऊंचे पहाड़, ये घाटियाँ, सबसे रहस्यमय घाटियाँ, जानवर, पेड़, बादल और देवता। ये सब दुनिया में कहाँ मिलेंगे? ये सब तो यहीं मौजूद थे। सांग्ये धैर्यपूर्वक अपने पोते के सवालों का इंतज़ार करता रहा और सोचता रहा कि क्या वह अपने वंश के प्रति वफादार रहेगा और उस पथप्रदर्शक बनने की अनुमति मांगेगा।

सांग्ये ने सोचा, फिलहाल तो इंतजार करना पड़ेगा। हमें यह पता लगाना होगा कि ल्हाचू घाटी में जंगली याकों के झुंड के कोई निशान हैं या नहीं। पहाड़ी झरनों पर उनके संकेत मिल सकते हैं, और घाटी में दूसरों ने भी उन्हें देखा होगा। यह इलाका तीर्थयात्रियों की भीड़, जानवरों की आवाजाही और तंबू वाले भोजनालयों और शिविर क्षेत्रों की स्थापना के कारण सबसे व्यस्त घाटियों में से एक था।

बूढ़ा आदमी और उसका पोता पगडंडी से हटकर भोजनालय लौट आए। सांग्ये ने दिरापुक की ओर इशारा किया। वहाँ कुछ हलचल दिखाई दे रही थी। अलग-अलग रंगों के वस्त्र पहने दो भिक्षु, एक बूढ़ा मार्गदर्शक और एक युवा याक चराने वाला लड़का, दो याक और एक मैस्टिफ़ कुत्ते के साथ, एक पहाड़ी झरने के पास ज़मीन की ओर देखते हुए चल रहे थे, मानो किसी निशान की तलाश कर रहे हों। क्या यह इतना स्पष्ट हो सकता है, उसने सोचा। वे ज़रूर जंगली याकों के पदचिह्न खोज रहे होंगे। येशे को अपने अनुमान लगाने दो। अब उसे पता चल जाएगा कि उसका पोता भविष्य में एक कुशल शिकारी बनेगा या नहीं।

येशे ने उत्साह से कहा, "दादाजी, उस समूह को देखिए। वे न तो ऊपर देख रहे हैं, न ही इधर-उधर, और न ही एक-दूसरे से दूर जा रहे हैं। और न ही एक-दूसरे के करीब हैं। वे इधर-उधर घूम रहे हैं, ज़मीन की ओर देख रहे हैं, और एक बड़े घेरे में घूम रहे हैं। वे कुछ खोज रहे हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि वे बड़े जंगली याकों के पदचिह्न खोज रहे हों? उन्हें ज़रूर कुछ पता होगा। क्या हम वहाँ जाकर पता लगा सकते हैं कि क्या हो रहा है?"

सांग्ये ने दिल में खुशी लिए मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ, ऐसा हो सकता है। और शायद न भी हो। चलो वहाँ चलते हैं और पता लगाते हैं। पर ज़रा धीरे चलो, मेरे बेटे, और उन्हें यह मत बताना कि हमने अपने भोजनालय के

ऊपर वाले रास्ते पर क्या देखा। इससे लोग और तीर्थयात्री डर सकते हैं और तुम्हारे माता-पिता का धंधा ठप हो सकता है। पहले हमें पता चल जाए कि वे क्या खोज रहे हैं। हमें पूरी तरह से आश्वस्त होना चाहिए।"
येशे ने सहमति में सिर हिलाया। उसने ऐसी जानकारी प्रकट करने के खतरे के बारे में सोचा ही नहीं था। व्यापार में थोड़ी सी भी गिरावट, यहाँ तक कि कुछ दिनों के लिए भी, उनके छोटे-मोटे कारोबार को बर्बाद कर देती। यहाँ रहते हुए वे हर दिन की आमदनी पर निर्भर थे। उसने अपने कुत्तों को न बुलाने का फैसला किया और अपने दादाजी के पास जाने के लिए थोड़ी दूर नीचे चला गया, जो ढलानों पर काफी तेज़ चल सकते थे। बूढ़ा आदमी समतल मैदान पर बहुत धीरे चलता था। जैसा कि वह अक्सर कहता था, समतल मैदान पैदल चलने के लिए नहीं बने थे, वहाँ घोड़ों, खच्चरों या याकों पर सवारी करनी पड़ती थी। ढलानें तो चढ़ाई के लिए बनी थीं।
वे भिक्षुओं, बूढ़े तीर्थयात्री मार्गदर्शक और याक चराने वाले लड़के से मिले। बूढ़ा मार्गदर्शक और सांग्ये एक-दूसरे को जानते प्रतीत हुए। उन्होंने आदरपूर्वक प्रणाम किया। सांग्ये दिरापुक मठ के भिक्षु के पास गए और हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए बोले, "हे गुरु, आप जिन्हें परम ज्ञानी की सेवा और निरंतर प्रार्थना करने का सौभाग्य प्राप्त है, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। यह वास्तव में एक पवित्र आशीर्वाद है, क्योंकि इस महान पर्वत की छाया में मुझे आपसे और चोकु मठ के भिक्षु से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जैसा कि उनके वस्त्रों से प्रतीत होता है। आप किसी चीज़ की खोज में प्रतीत होते हैं। क्या मठ से कुछ बहकर यहाँ आ गया है?"
दावा, जो एक बूढ़ा तीर्थयात्री मार्गदर्शक था, किन्हाई के घुड़सवार की चालाकी और जिज्ञासा पर मुस्कुराया और बोला, "किन्हाई के महान घुड़सवार, आप एक धैर्यवान पक्षी की तरह हैं जो इतने वर्षों से अपनी खोज में इन पहाड़ों के चक्कर लगा रहा है। आपके पिता ने भी ऐसा ही किया था, और उनसे पहले उनके पिता ने भी। मैं आपको कई वर्षों से जानता हूँ। दिखावा छोड़िए। आप उसी रास्ते से नीचे आ रहे हैं जहाँ हम खड़े हैं। आपने अवश्य ही हमारे यहाँ खोजे जा रहे मार्ग के निशान देखे होंगे। वरना, आप अपने भोजनालय की गर्माहट छोड़कर, जहाँ आपका बेटा सुबह गरमागरम सूप बनाता है, आपसे आगे दौड़ने के बजाय नीचे नहीं आते।"
भाई तामेंग और दिरापुक के भिक्षु इस हंसी-मजाक पर मुस्कुराए। वे तिब्बत के इस हिस्से में होने वाली बातचीत और चर्चा की परंपरा से परिचित थे। दिरापुक के भिक्षु ने कहा, "हे सांग्ये, नमस्कार। मैं नोर्बू हूँ, जो शिकुआनहे के पर्यटक समूह का याक चराने वाला लड़का है। उसके दो याक, जो उसके तंबू में बारिश से बचने के लिए छिपे हुए थे, रात में अजीब व्यवहार कर रहे थे। उसका कुत्ता भी रात में बहुत डरा हुआ और सहमा हुआ लग रहा था। वह अभी भी चुपचाप चल रहा है। और, चोकु मठ के भाई तामेंग के पास हमें सुनाने के लिए एक बहुत ही रहस्यमयी कहानी है, वे कहते हैं। चलिए, हम उन्हें सुनते हैं। अभी हम पुराने दावा का अनुसरण कर रहे हैं, नदी की धारा को देख रहे हैं, और यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या वह रात में किसी हलचल के बारे में कुछ बताती है।"

सांग्ये ने उत्तर दिया, “हे स्वामीजनों और वृद्ध दावा, मैं समझ गया। नोर्बू ने आपको जो बताया है और दावा जिस चीज़ की तलाश कर रहा है, उससे मुझे लगता है कि मैं आपसे किसी उद्देश्य से मिलने आया हूँ। क्या यह संभव है कि आप सभी जंगली याकों के झुंड के पदचिह्न और निशान खोज रहे हों? बहुत बड़े जंगली याकों के?”

चतुर्थ

भाई तामेंग और दावा ने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुराए। दिरापुक के भिक्षु ने कहा, “क्या? आप किन बड़े जंगली याकों की बात कर रहे हैं? दिरापुक क्षेत्र के आसपास कोई जंगली याक नहीं हैं और न ही वे इस घाटी में पाए जाते हैं। आप क्या कह रहे हैं, किन्हाई घुड़सवार? येशे, आपके दादाजी क्या कह रहे हैं?” नोर्बू डरा हुआ लग रहा था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उसके याक अजीब व्यवहार कर रहे थे। फिर उसका मास्टिफ़ कुत्ता अजीब क्यों हो गया? क्या मास्टिफ़ कुत्ते जंगली याकों से डरते हैं, उसने सोचा?

दावा ने दिरापुक के भिक्षु को प्रणाम करते हुए कहा, “हे गुरुजी, कृपया हमें क्षमा करें। भाई तामेंग और मैं डरे हुए हैं। हमें डर है कि लोग हम पर विश्वास नहीं करेंगे। हमने किसी से बात नहीं की है। इसीलिए हमने आपको अपनी खोज के बारे में नहीं बताया। दिरापुक से ड्रोल्मा ला तक का क्षेत्र और इन दोनों स्थानों के बीच की ढलानें उत्तर से घाटी में प्रवेश द्वार हैं। हम तीर्थयात्रियों और पर्वतारोहियों के आने से पहले इन नदी-तल और चिकनी रेत पर निशान खोजना चाहते थे। पालतू याक तो सारे रास्ते नष्ट कर देते।”

नोरबू, येशे और सांग्ये, दिरापुक के भिक्षु के साथ पास-पास खड़े थे। भाई तामेंग ने एक-एक करके पवित्र पर्वत शिखरों को प्रणाम किया और कहा, “भाइयों, आप सभी धर्मनिष्ठ लोग हैं, अपने जीवन चक्र और इस पवित्र पर्वत से जुड़े हुए हैं। कल जो हुआ वह बहुत ही विचित्र था, और हमने कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा कुछ हो सकता है। हम रहस्य को और बढ़ाना नहीं चाहते। हम यह पता लगाना चाहते हैं कि ऐसा क्यों हुआ। जो हुआ है उसके कई कारण हो सकते हैं। हम उन पर बाद में चर्चा करेंगे। हमें घाटी में भीड़ बढ़ने से पहले जल्दी सोचना होगा।”

“कल रात, तेज बारिश के बीच, बूढ़े दावा और मैं, अपने गुरु रिनचेन की अनुमति से, चोकु मठ की ढलानों के पास घूमने गए। बाकी की घटनाएँ मैं आपको बाद में बताऊँगा, लेकिन हमने बहुत बड़े, सचमुच बहुत बड़े जंगली याक देखे। हमने इन जानवरों का पूरा झुंड देखा। वे विशालकाय थे। आपने जितने भी सबसे बड़े जंगली याक देखे या सुने होंगे, उनसे कम से कम एक या दो फीट ऊँचे। आपने जितने भी सबसे भारी जंगली याक के बारे में सुना या जाना होगा, उनसे कम से कम 300 से 400 किलो भारी। हम झूठ नहीं बोल रहे हैं। हमने उन्हें देखा। वे बहुत बड़े थे। सभी। झुंड में एक भी जानवर दूसरे से छोटा नहीं था,” भाई तामेंग ने आगे बताया।

“हम समय बर्बाद नहीं करना चाहते। यह जानना बहुत ज़रूरी है कि हमने जो देखा वह सच था और हमें पता होना चाहिए कि वास्तव में क्या हुआ था। बाकी बातें मैं आपको बाद में बताऊँगा। लेकिन उस तूफ़ान में कुछ बिल्कुल अलग ही हुआ। अब, किन्हाई के बूढ़े साहब, आप हमसे इतना सटीक सवाल कैसे पूछ पा रहे हैं? आपको क्या पता? क्या आपने भी इन जंगली याकों को देखा है? क्या आप इनके बारे में जानते हैं? इतनी दूर किन्हाई से आकर आपको इस घाटी में जंगली याकों के बारे में कैसे पता चला? क्या आपने उन्हें दिरापुक या ड्रोल्मा ला में देखा है?”

सांग्ये ने दिरापुक के उत्तर में ऊपर की ओर पहाड़ों की तरफ देखा और इशारा करते हुए कहा, “वे वहीं से आए थे। वे दिरापुक के ऊपर वाली घाटी से आए थे। वह घाटी बहुत लंबी है और उसे पार करने में तेज़ घोड़े पर सवार होकर चार-पाँच दिन लग जाते हैं। वे वहीं से आए थे। मैंने उन्हें नहीं देखा। न ही मेरे पोते ने। हमने जानवरों के पैरों के निशान देखे। हमने सिर्फ़ एक ही निशान देखा। वहाँ और कहीं हमें एक भी निशान नहीं दिखा। मैं कह सकता हूँ कि वे बहुत बड़े जानवर थे। बूढ़े दावा और मैं एक-दूसरे को कई सालों से जानते हैं। इन घाटियों के बारे में जो कुछ भी हम नहीं जानते, वह यहाँ बिल्कुल भी नहीं है। लेकिन, यह मामला अलग था।”

दावा ने सिर हिलाया। उसने दिरापुक के ऊपर घाटी के प्रवेश द्वार की ओर देखा। यह संभव हो सकता था। यह रेखा दिरापुक के ऊपर से शुरू होकर, ल्हाचू घाटी तक, नदी की धारा के साथ-साथ, चोकु मठ से होते हुए, उस स्थान तक सीधी रेखा में जा रही थी जहाँ पत्थरों का घेरा होगा। इसमें कोई मोड़ नहीं था, कोई घुमाव नहीं था, और उन याकों जैसे बड़े जानवर, जिन्हें उन्होंने देखा था, कोई भी बाधा उन्हें रोक नहीं सकती थी। रात में नदी की धाराएँ उथली थीं, और अब दिन के दौरान ढलानों से पानी नीचे आने के कारण गहरी होती जा रही होंगी। वहाँ क्या था? क्या उस घाटी में और भी जंगली याक थे? वे कहाँ गए थे? क्या वे उसी रास्ते से वापस लौटे थे?

येशे बहुत उत्साहित था। उसे महसूस हुआ कि जंगली याकों के बड़े झुंड के बारे में सुनकर नोर्बू भी बहुत उत्साहित था। नोर्बू का कुत्ता उसके पास ही खड़ा था, हिल नहीं रहा था। वह बहुत डरा हुआ लग रहा था। उसे अपने दो कुत्तों की याद आई। वे भी बहुत अजीब व्यवहार कर रहे थे। वे भौंके नहीं थे, और न ही सुबह उनके साथ गए थे। यह उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था। वे आमतौर पर येशे या सांग्ये से बहुत पहले ही घूमने निकल जाते थे। तो आखिर ऐसा क्या हुआ था जिससे कुत्ते भी डर गए थे?

“गुरुजी, मेरा एक सीधा-सा सवाल है। मैं अपने दादाजी की तरह कुशल पथप्रदर्शक नहीं हूँ, न ही बूढ़े दावा जैसा। मैं यहाँ नोरबू की तरह हूँ, दूसरे देश से आया हूँ, अपने माता-पिता और परिवार के साथ, अपने जानवरों और व्यापार के साथ,” येशे ने कहा। “मुझे एक अलग पहलू के बारे में जानने की उत्सुकता है। मैं विशाल जंगली याकों के झुंड को लेकर लोगों के उत्साह को समझ सकता हूँ। अगर मेरा अस्तित्व है, तो कोई मुझसे भी बड़ा हो सकता है। अगर मेरा शिकार किया जाता है, तो मैं छिप जाऊँगा। मुझे आपकी बातों में कोई रहस्य

नहीं दिखता। जब मेरा शिकार नहीं किया जा सकता, तो मैं ज़रूर इधर-उधर घूमूँगा। लेकिन, जो रहस्य मुझे दिखता है, वह मास्टिफ़ कुत्तों में है।"

"नोर्बू के मास्टिफ़ को देखो। कितना डरपोक और सहमा हुआ लग रहा है। हमारे मास्टिफ़ अभी भी उस गुफा और झोपड़ियों में छिपे हुए हैं जो मेरे माता-पिता के भोजनालय के पीछे हैं। कुछ और ही हो रहा है। यह जारी है। तुमने रात में जंगली याक देखे थे। हमने घाटी से गुजरते हुए जंगली याकों के निशान देखे थे। अब वे हमें नहीं दिख रहे हैं। लेकिन, मास्टिफ़ अभी भी, सुबह के काफी देर तक, डरे हुए लग रहे हैं। उन्हें क्या हुआ है?"

सांग्ये ने गर्व से येशे की पीठ थपथपाई और कहा, "आइए, गुरुजी, मेरे मित्र दावा, चलिए गरमा गरम सूप और नूडल्स खाते हैं। मैं आपको दिरापुक क्षेत्र के पीछे का रास्ता दिखाता हूँ। वहाँ कोई तीर्थयात्री नहीं जाता। वह क्षेत्र अछूता है। हम वहाँ रास्ता और निशान ढूंढ सकते हैं। वह जंगली और एकांत क्षेत्र है। घाटी में निशान मिलना मुश्किल है। बारिश ने रेत और मिट्टी को समतल कर दिया है। ढलानों से पानी नदियों में बह रहा है। सारे निशान मिट गए होंगे। आइए, हमारे मेहमान बनिए। हमें गर्व होगा कि चोकु और दिरापुक के पवित्र मंदिरों के गुरु हमें आशीर्वाद देने आ रहे हैं। गुरुजी, आप थके हुए होंगे। बूढ़े दावा की बातों में मत आइए। वह ऊर्जा और शक्ति से भरपूर है। उसे भोजन की आवश्यकता नहीं है।"

दावा ने आगे कहा, "जी, स्वामी जी। चलिए घाटी में चलते हैं। वहाँ ज़रूर कोई कहानी होगी। मैं येशे की माँ से आपके लिए एक अलग चूल्हा और बर्तन देने को कहूँगी। मैं आपके लिए सूप बनाऊँगी और उसमें अपनी कुछ खास चीज़ें भी डालूँगी। कौन जाने दिन में हमें दोबारा कब खाना मिलेगा? मुझे डर है कि आज का दिन बहुत लंबा होने वाला है। हम नोर्बू के स्वामियों से भी बात करेंगे और उनसे एक और याक चराने वाले लड़के और जानवरों को साथ ले जाने का अनुरोध करेंगे। नोर्बू ने अपने याकों का व्यवहार देखा है और उसके कुत्ते को भी कुछ गड़बड़ होने का आभास हो गया है। हमें उन्हें अपने साथ रखना होगा।"

उन्होंने नोर्बू से कहा, "बेटा, जाओ और अपने तीर्थयात्रा मार्गदर्शक से कहो कि वह भोजनालय में हमसे मिलने आए। उसे बताना कि दिरापुक और चोकु के पवित्र गुरु उससे मिलना चाहते हैं। हम उससे बात करेंगे। क्या तुम आज हमारे साथ चलोगे? क्या तुम डरे हुए हो? तुम धन्य हो, मेरे बेटे। तुम कांग रेनपोचे के पर्वतों की घाटियों के रहस्य का हिस्सा बनने जा रहे हो। जाओ, उसे अपने साथ भोजनालय ले आओ।"

नोरबू ने राहत भरी मुस्कान दी। उसे चिंता हो रही थी कि उसे तीर्थयात्रियों के समूह के साथ यात्रा करनी पड़ेगी और वह उत्साह से दूर हो जाएगा। उसने समूह से अलग होने के बारे में सोचा था। उसने पहले ही बीमार होने का बहाना बनाकर दिरापुक में रुकने का फैसला कर लिया था। लेकिन यह बुरा होता, क्योंकि इससे समूह मुसीबत में पड़ जाता। वह जानता था कि बूढ़े दावा को मना नहीं किया जा सकता। दूसरे याक के बच्चे उसकी जगह ले सकते थे। क्योंकि दिरापुक से ड्रोल्मा ला दर्रे तक और फिर ज़िंतालपुक और डार्चेन तक का सफर सिर्फ एक दिन का था। वह अपने समूह के नेता से बात करने के लिए तीर्थयात्रियों के तंबू की ओर भागा। उसका कुत्ता चुपचाप, बिना भौंके, उसके साथ-साथ दौड़ता रहा।

समूह भोजनालय की ओर चलने लगा। भाई तामेंग ने दावा द्वारा दी गई छड़ी को कसकर पकड़ रखा था। वह सहारे के लिए आभारी थे। दूसरे हाथ में उनका एक प्रार्थना चक्र था, जिसे वे धीरे-धीरे घुमा रहे थे। उन्होंने सांस लेने के लिए कुछ देर रुककर चोकु मठ और घाटी की ओर देखा। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्होंने वास्तव में वह सब कुछ देख लिया था जो उन्होंने देखा था। और, उन्हें खुशी थी कि किन्हाई के उस बूढ़े घुमंतू घुड़सवार ने भी बड़े जंगली याकों के झुंड के निशान देखे थे। लेकिन भेड़ियों का क्या? क्या उन्हें उनके बारे में बात करनी चाहिए?

येशे के माता-पिता अंदर आए उस अजीब समूह को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। बूढ़े सांग्ये, अपने बेटे येशे के साथ, दो भिक्षु (एक चोकु से और एक दिरापुक से) और बूढ़े दावा। येशे के पिता सोचने लगे कि आखिर क्या हो रहा है। वे उनका स्वागत करने के लिए दौड़े और झुककर प्रणाम किया।

***

सांग्ये ने येशे के पिता से समूह के लिए ताज़ा सूप और नूडल्स बनवाने और नहाने के लिए गर्म पानी की बाल्टियाँ लाने को कहा। भाई तामेंग ने सांग्ये की इस नेकदिली की सराहना करते हुए बूढ़े दावा को थपथपाया। उन्होंने कहा, "बूढ़े दावा, या तो हम बहुत बदबूदार हैं, या फिर आपका दोस्त सांग्ये सचमुच बहुत नेक और समझदार है। चलिए, हम नहा-धोकर तरोताज़ा हो जाते हैं और खाना खा लेते हैं। कौन जाने आज का दिन हमें कहाँ ले जाएगा?"

दावा मुस्कुराया और सिर हिलाया। वह सांग्ये को जानता था और अंदाज़ा लगा सकता था कि आने वाले घंटों में यह किस ओर ले जाएगा। बूढ़ा किन्हाई घुड़सवार एक कुशल पथप्रदर्शक था। इस तरह का रहस्य उसके जीवन की सबसे बड़ी चुनौती थी। दावा भी उसी चुनौती को महसूस कर रहा था जो उसे अपने भीतर समाहित करने के लिए आमंत्रित कर रही थी। वे यहाँ, पृथ्वी के सबसे रहस्यमय स्थान पर थे, और उन्होंने सोचा था कि वे उन सभी रहस्यों के बारे में जान चुके हैं जिन्हें जानना बाकी था।

येशे की माँ घाटी के मठों से आए दो भिक्षुओं की सेवा करके खुद को धन्य महसूस कर रही थी। वे सचमुच यहीं, उसकी भोजनालय में, बैठकर उसके बनाए भोजन का आनंद ले रहे थे। यह एक ऐसी कहानी थी जिसे वह किन्हाई वापस ले जाएगी और वह जानती थी कि सभी महिला सहायिकाएँ इसे दारचेन वापस ले जाएँगी। गपशप, कहानियाँ और अफवाहें आपस में गुंथी होंगी, और अंत में जो कहानी निकलेगी, वह इस अजीबोगरीब समूह के एक साथ आने के असली कारण के बारे में कुछ भी नहीं होगी।

उसे लगता था कि वह बूढ़े सांग्ये को अपने पति से भी बेहतर जानती और समझती है। वह जानती थी कि येशे भी उसके दादा की ओर आकर्षित थी। उसका बेटा कभी कोई भोजनालय नहीं चला पाएगा। वह उनके साथ यहीं फंसा हुआ था, उसे जानवरों की देखभाल करनी पड़ती थी और भोजनालय में मदद करनी पड़ती थी। उसने घाटी में आने वाले पर्यटकों, तीर्थयात्रियों और आगंतुकों को देखा, जो विभिन्न स्थानों, देशों और इलाकों से आए थे, अलग-अलग धर्मों के थे, अमीर-गरीब थे और वे भी थे जिन्होंने अपना सब कुछ पीछे छोड़ दिया था। वह जानती थी कि उसका बेटा आने वाले कई लोगों से बेहतर था, भले ही वे अमीर हों और उनके पास बेहतर साजो-सामान हो।

सांग्ये बूढ़े दावा से बात कर रही थी, जबकि दो भिक्षु भोजनालय के पीछे अपनी गुफा के एकांत क्षेत्र में स्नान कर रहे थे। दो लड़के और येशे उनकी मदद करने और गर्म पानी की और बाल्टियाँ देने के लिए पास ही इंतज़ार कर रहे थे। बूढ़े दावा बोल रहे थे, "जंगली याक इस क्षेत्र से दूर मैदानों और पहाड़ियों में आम हैं। मैंने एक घास के मैदान में दो सौ से अधिक जंगली याकों के झुंड देखे हैं। मैंने उनका शिकार किया है और कुछ की खाल खुद उतारी है। हम पालतू याकों से परिचित हैं और उनके साथ जीवन भर रहे हैं। मुझे पता है कि मैंने रात में क्या देखा। ये जंगली याक थे जिन्हें हमने पहले कभी नहीं देखा था।"

भिक्षु भोजनालय में आए, साफ-सफाई की और चर्चा में शामिल होने के लिए उत्सुक दिखे। येशे की माँ ने सांग्ये और दावा को भिक्षुओं के साथ तब तक बैठने नहीं दिया जब तक वे साफ-सफाई करके चले नहीं गए। उन्होंने उन्हें तम्बू से बाहर निकाल दिया। भाई तामेंग ने येशे की माँ से डरने का नाटक कर रहे दोनों बूढ़े

आदमियों को देखकर मुस्कुराया। उन्होंने दिरापुक के भिक्षु के साथ प्रार्थना में सिर झुकाया और फिर खाना शुरू किया। येशे उनके पास आया और पास ही एक छोटे से स्टूल पर बैठ गया, और उनके लिए और नूडल्स और सूप लाने का इंतज़ार करने लगा। उसकी माँ संतरे के रस के टेट्रापैक लेकर लौटी, "खास तौर पर लद्दाख से तस्करी करके लाया गया है," उसने फुसफुसाते हुए कहा।

यह कोई विलासिता की वस्तु तो नहीं थी, लेकिन उनकी ओर से यह एक सराहनीय प्रयास था। संतरे का रस और अन्य जूस के पैकेट, टेट्रापैक और डिब्बे लद्दाख के रास्ते चांगपा खानाबदोशों द्वारा भारी मात्रा में तस्करी करके लाए जाते थे। नेपाल सीमा पर अन्य तस्कर गिरोह भी सक्रिय थे और पर्यटन एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में शामिल लोग इन सामानों का भरपूर स्वागत करते थे। जब भी छापा पड़ता या पकड़े जाते, भोजनालय के मालिक इन्हें पर्यटन समूहों से खरीदे गए सामान बताकर बात टाल देते थे।

नोरबू अपने तीर्थयात्रा गाइड के साथ भोजनालय में दाखिल हुआ और दोनों भिक्षुओं के पास आकर बैठ गया। तीर्थयात्रा गाइड बिपिनभाई शाह एक नियमित टूर ऑपरेटर थे, जो घाटी में छह महीने से अधिक समय तक रहते थे और पिछले दस वर्षों से कोरा में आते आ रहे थे। उन्हें स्थानीय मठ के दोनों भिक्षुओं के सामने खुले स्थान पर बैठने की अपनी जगह का एहसास था। स्थानीय लोगों के लिए उनकी बात कानून के समान थी, और अगर वह उनकी बात नहीं मानते, तो वह इस क्षेत्र में अपना काम नहीं कर पाएंगे। नोरबू ने उन्हें ज्यादा कुछ नहीं बताया था, और उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि लड़का उनके साथ क्यों नहीं आ रहा है।

बिपिनभाई शाह ने कारणों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। आख़िरकार, उनकी शादी तो उस याक-वाले से नहीं हुई थी, उन्होंने सोचा। उन्हें सामान ढोने के लिए दो याकों की ज़रूरत थी, और उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी अगर अलग-अलग याक बोझ उठाएँ। लेकिन, उन्हें थोड़ी जिज्ञासा ज़रूर थी। ज़रूर कुछ अजीब हुआ होगा कि चोकु के भिक्षु और दिरापुक के भिक्षु नियमित शिविर क्षेत्रों से बाहर इस जर्जर ढाबे में बैठे थे। उन्होंने तो अपने तीर्थयात्री समूह को भी इन तंबू वाले ढाबों में खाने की अनुमति नहीं दी थी। उनका समूह आमतौर पर एक परिसर के अंदर अपने तंबू लगाता था और अपना खाना खुद पकाता था। यह पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के लिए ज़्यादा सुरक्षित और स्वच्छ था।

वह भिक्षुओं से कुछ दूरी पर एक छोटी चौकी पर श्रद्धापूर्वक बैठ गया। चोकु से आया बूढ़ा तीर्थयात्री मार्गदर्शक बिपिनभाई के पास आया और उनसे नोर्बू को वहीं रुकने की अनुमति देने का अनुरोध किया। उसने कहा, “भाई, मैं आपको पहले से जानता हूँ। आप एक अच्छे और न्यायप्रिय व्यक्ति हैं। हमें आपकी मदद की ज़रूरत है। मैं नोर्बू को जानता हूँ, क्योंकि मैं शिकुआनहे में उसके परिवार को जानता हूँ। दोनों भिक्षुओं ने कुछ दूरदराज के इलाकों की यात्रा करने का फैसला किया है, और हमें नोर्बू और उसके दो याकों की मदद की ज़रूरत है। यह सब अचानक हुआ है, और हमारे पास दारचेन जाकर नई सहायता टीम लाने का समय नहीं है। क्या आप उसके बिना काम चला सकते हैं?”

बिपिनभाई ने सहमति में सिर हिलाया। उनका दिमाग तेज़ी से सोच रहा था। यह सचमुच अजीब था। यह बूढ़ा आदमी ज़रूर झूठ बोल रहा था। दिरापुक क्षेत्र में कई तीर्थयात्री मार्गदर्शक बिना काम के थे। साधु-संतों को यूँ

ही इन पहाड़ियों में भटकने के लिए नहीं भेजा जाता। लेकिन, वे असहमत नहीं हो सके। उन्हें सूप का एक कटोरा दिया गया। वे जानते थे कि यह सब्ज़ी का सूप होगा, क्योंकि दोनों भिक्षु भी इसी तरह के कटोरे से पी रहे थे। उन्होंने विनम्रता से अपने कटोरे से एक घूँट पिया, यह जानते हुए कि मना करना पाप होगा, और बाद में, झुककर खड़े हुए और भोजनालय से चले गए।

नोरबू बिपिनभाई के साथ बाहर निकला और विदाई ली। तीर्थयात्रा गाइड नोरबू को बहुत पसंद करता था, क्योंकि वह कई कोरा (यात्रा) में समूह के साथ गया था। उसने नोरबू को उसकी पूरी फीस दी और सद्भावना बनाए रखने के लिए उदारतापूर्वक कुछ अतिरिक्त पैसे भी दिए। बिपिनभाई इस क्षेत्र के आर्थिक मामलों को भली-भांति समझता था। वह जानता था कि नोरबू को दी गई अतिरिक्त 'टिप' उसे तीर्थयात्रा समूह से एक अवैतनिक दायित्व के रूप में बांध देगी। बिपिनभाई ने सोचा कि लड़का अगले साल अपने याकों और तीर्थयात्रा समूह के साथ वापस आएगा और बहुत उत्साहित होगा, और वापस जाते समय उसने उसे हाथ हिलाकर विदा किया।

दो याक, उसका कुत्ता (मास्टिफ़), उसके तंबू और अन्य सामान ढाबे तक लाए गए थे और दारचेन के दो सहायक लड़कों की देखरेख में रखे गए थे। लड़के नोर्बू को जानते थे और इन अचानक हुई घटनाओं से उत्साहित थे। उन्होंने आपस में फुसफुसाते हुए कहा, "ज़रूर कुछ अजीब हुआ होगा।" नोर्बू तंबू वाले ढाबे में लौटा और येशे के साथ बैठ गया। बूढ़े दावा ने स्नेह से उसे थपथपाया और कहा, "स्वागत है बेटा, कुछ गरमा गरम सूप और नूडल्स खा लो। येशे के पिता दारचेन के कुछ लड़कों को तुम्हारे याक और मास्टिफ़ को खिलाने के लिए लाएंगे।"

भाई तामेंग और बूढ़े घुड़सवार सांग्ये आपस में बातचीत कर रहे थे। चोकु मठ के भिक्षु, भाई तामेंग ने सांग्ये से सलाह लेने के बाद मानो कोई निर्णय लिया हो, वैसे ही बोलना शुरू किया। उन्होंने कहा, “भाइयों, हमें नहीं पता कि अब हमारे जीवन में क्या होने वाला है। हमारे जीवन के चक्र हमें एक साथ लाते हैं, और हमारे चक्र आपस में मिल गए हैं। यह घाटी इस दुनिया का सबसे रहस्यमय स्थान है। यह घाटी इस दुनिया का सबसे पवित्र स्थान भी है। हम भाग्यशाली हैं कि हम यहाँ हैं, और हमने कल जो देखा या अनुभव किया, वह हमारे लिए सौभाग्य की बात है।”

“हमें नहीं पता कि जंगली याकों का बड़ा झुंड कहाँ गया। हमें नहीं पता कि चोकु के नीचे पत्थरों के घेरे में बैठे बारह तीर्थयात्रियों का क्या हुआ। तीर्थयात्री बारिश में खुले में क्यों बैठे थे? जंगली याक उन्हें क्यों नहीं डरा रहे थे? जंगली याक पत्थरों के घेरे में क्यों आए थे? भेड़िये दूर क्यों इंतजार कर रहे थे? क्या इन सब में कोई संबंध था? शायद हम इन सभी घटनाओं के बारे में कभी कुछ न जान पाएं।”

उन्होंने आगे कहा, “बूढ़े सांग्ये और नौजवान येशे की वजह से अब हमें यह पता चला है कि जंगली याकों का झुंड इस पहाड़ी के पीछे ढलान से नीचे आया था। ऐसा लगता है कि वे दिरापुक के पीछे वाली लंबी ढलान से नीचे आए थे। यह पक्की जानकारी है। हम इन सवालों के जवाब ढूंढने की कोशिश कर सकते हैं। आइए योजना बनाएं और घाटी के अंदर जाकर इस क्षेत्र का पता लगाने की कोशिश करें और देखें कि क्या वहां

जंगली याक हैं, क्या वे बहुत बड़े हैं, और क्या उनकी संख्या अधिक है। अगर हमने रात में सिर्फ नर जंगली याक देखे हैं, तो दूसरे भी जरूर होंगे। मादा जंगली याक भी जरूर होंगी, और उनके बच्चे भी जरूर होंगे, और इन घाटियों के अंदर झुंड जरूर होंगे। हममें से कुछ लोग घाटी में चलें।"

***

बूढ़े दावा ने भाई तामेंग की ओर देखकर कहा, "हमें घाटी का भ्रमण करना चाहिए। कौन चलेगा? अंदर जाकर वापस आने में कई दिन या सप्ताह लग सकते हैं। क्या गुरु रिनचेन आपको चोकु मठ से बाहर जाने की अनुमति देंगे? मैं अंदर जाने के लिए उत्सुक हूँ। मेरा जीवन व्यतीत हो चुका है, और मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं बचा है। मैं घटी घटनाओं की सच्चाई जानना चाहता हूँ। हमें योजना बनानी होगी।"
चोकु और दिरापुक के भिक्षुओं ने एक-दूसरे की ओर देखा, और दूसरे के इशारे पर भाई तामेंग बोले, "मेरे भिक्षु भाई और मैंने इस मुद्दे पर चर्चा की है। कोरा क्षेत्र से निकलने से पहले हमें अपने वरिष्ठों और बुजुर्गों से परामर्श करना होगा। आप जाने के लिए स्वतंत्र हैं। आप और वृद्ध सांग्ये विवरण की योजना बना सकते हैं। हम आपको हर संभव सहायता प्रदान करेंगे। इसमें कोई समस्या नहीं होगी। यदि आप ऐसे शिविर स्थल स्थापित करते रहें जिन्हें हम पहचान सकें, तो हम आपके लिए भोजन और सामान पहुंचाने की व्यवस्था भी कर सकते हैं।"
सांग्ये ने सहमति में सिर हिलाया, भाई तामेंग को प्रणाम किया और कहा, "गुरुजी, इस रहस्यमयी घाटी में जल्द से जल्द जाने की आपकी सलाह बिल्कुल सही है। ज़रूरत पड़ने पर घाटी में कई दिनों तक रहने के लिए हमें आपकी मदद, मार्गदर्शन और सहयोग की आवश्यकता होगी। दिरापुक की छोटी बस्ती पर्याप्त सहायता नहीं दे पाएगी। आपको दारचेन और शिकुआनहे से भी मदद लेनी पड़ सकती है। मैं अपने पोते येशे के साथ जाऊँगा, अगर उसके माता-पिता अनुमति दें, और बूढ़े दावा और नौजवान नोरबू भी साथ जाएँगे।"
दिरापुक के भिक्षु ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "नोरबू को ले जाओ, लेकिन उसे ज़्यादा दूर मत ले जाना। हमने उसके माता-पिता को सूचित नहीं किया है। उसे एक दिन की यात्रा के बाद लौटने दो। हम दो और लोगों को उसके साथ लौटने के लिए तैयार रखेंगे ताकि वे तुमसे मिल सकें। नोरबू को दिरापुक लौटने और घाटी में जाकर तुम्हारे लिए सामान और आपूर्ति लाने वाला बनाना है। उसके पास दो याक हैं, और उसका मास्टिफ़ कुत्ता उसे साहस देगा। जब वह लौटेगा, तो मैं मठ से कुछ लोगों को खच्चर, याक और कुत्ते लेकर उसके साथ जाने के लिए कहूँगा। वे एक दिन की यात्रा पर अग्रिम शिविर स्थापित करने में मदद कर सकते हैं।"
दावा और सांग्ये इस योजना और बुद्धिमत्ता से सहमत थे। यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि अचानक बारिश या बर्फबारी होने पर वे घाटी में न फंस जाएं। किसी को भी स्थानों का पता नहीं चलेगा। दिरापुक क्षेत्र के लोग इस तरह के वातावरण और भूभाग में यात्रा करने के आदी थे। वे दूसरों की मदद करते हुए अपनी

सुरक्षा भी कर सकते थे। येशे ने पास खड़े अपने माता-पिता की ओर देखा। उसकी आँखों में प्रश्न था। उसकी माँ उसके पास आई, उसे थपथपाया और सहमति में सिर हिलाया। उसे अपने बेटे पर गर्व था और वह जानती थी कि यह बूढ़े व्यक्ति से सीखने का ईश्वर प्रदत्त अवसर है।

“भाई तामेंग, आपका क्या कहना है?” दावा ने पूछा। “इस खोज में आप सबसे ज़्यादा जिज्ञासु और दृढ़ थे। आप यह जानना चाहते थे कि वे बारह तीर्थयात्री खुले कोरा क्षेत्र में क्यों बैठे थे। अगर आप बारिश के कारण चोकु में ही रुक जाते, तो हमें जंगली याकों के विशाल झुंड के बारे में पता नहीं चलता और हम यहाँ घाटी के अंदर जाने की योजना नहीं बना रहे होते। क्या आप हमारे साथ नहीं चलेंगे?”

भाई तामेंग मुस्कुराए और बोले, “बुजुर्ग, आप सही कह रहे हैं। मेरा मन कहता है कि मुझे आपके साथ चलना चाहिए और घाटी में घूमना चाहिए। लेकिन इसके लिए मुझे अपने गुरु की अनुमति चाहिए होगी। मुझे दारचेन और अन्य मठों को भी संदेश भेजना होगा ताकि वे आपके लिए आवश्यक सामान का इंतजाम कर सकें। कौन जाने आपको उन ऊंचे इलाकों और जंगलों में कितने दिन बिताने पड़ेंगे? कौन जाने वहां क्या-क्या है? मैं भी आपके साथ आने की कोशिश करूंगा। मैं कुछ तीर्थयात्री गाइड संचालकों से बात करके उनसे अच्छे अल्पाइन टेंट, स्लीपिंग बैग और अन्य सामान लेना चाहता हूं। जैसे-जैसे हम ऊपर जाएंगे या जरूरत पड़ने पर लंबे समय तक रुकेंगे, हमें इनकी जरूरत पड़ेगी।”

“लेकिन मुझे चोकु लौटना भी होगा, क्योंकि मुझे डर है कि हम क्या करने वाले हैं,” उन्होंने कहा और आगे कहा, “मुझे डर है कि यह घाटी एक बेयुल हो सकती है, शांति और शरण की उन गुप्त घाटियों में से एक, जो तिब्बत में हमारे जीवन के मार्ग, बुद्ध के मार्ग का प्रतीक है। यह घाटी उन 108 घाटियों में से एक हो सकती है जिन्हें बेयुल के रूप में जाना और सूचीबद्ध किया गया है। या, यह अज्ञात घाटियों में से एक हो सकती है, और शायद उन घाटियों में से एक हो सकती है जिनके बारे में कम ही बात की जाती है। मुझे मास्टर रिनचेन से परामर्श करना होगा। हम अन्य सभी मठों को भी सूचना भेजेंगे। हो सकता है कि हमारे पास या दूसरों के पास कोई ग्रंथ या अभिलेख हों।”

येशे और नोरबू ने बेयुल के बारे में कभी नहीं सुना था। बूढ़े सांग्ये ने इन छिपी हुई घाटियों के बारे में सुना था, जो आत्माओं और गुप्त अभिलेखों द्वारा संरक्षित थीं ताकि उन्हें नुकसान या विनाश से बचाया जा सके। इन घाटियों में घर बनाना, खेती करना या जानवरों को चराना आम तौर पर मना था। उसने मन ही मन सोचा, अगर कोई कभी अंदर नहीं गया है, और अगर यह घाटी वाकई काफी लंबी है, तो यह एक अज्ञात प्राचीन हिमनद भी हो सकता है जो कुछ हिस्सों में पीछे हट गया हो।

दिरापुक के भिक्षु ने येशे, उसके माता-पिता और नोरबू के लाभ के लिए समझाया। उन्होंने कहा, “इन पवित्र भूमि में अनेक अज्ञात और गुप्त घाटियाँ हैं। कुछ के बारे में जानकारी है, और हम जानते हैं कि वे अज्ञात हैं। कुछ अज्ञात हैं, क्योंकि वे निषिद्ध क्षेत्रों के भीतर गहराई में स्थित हैं, और हम नहीं जानते कि वे बेयुल हैं। ऐसी घाटियों के स्थान गुप्त ग्रंथों में लिखे श्लोकों में छिपे हैं और शायद भुला दिए गए हैं। किसी कारणवश उन्हें गुप्त रखा गया होगा, और पीढ़ियों के बीतने के साथ, हम भूल गए होंगे कि फलां ग्रंथ में फलां रहस्य छिपा है।”

“हालाँकि, यह स्थान, कांग रेनपोचे के आसपास की घाटी, और इस क्षेत्र में मठों की संख्या को देखते हुए, ऐसे स्थान को भूलना मुश्किल होगा,” उन्होंने आगे कहा। “हो सकता है कि हमारे पूर्वज इसे जानते हों, लेकिन उन्होंने इस घाटी के बारे में ग्रंथ में जो लिखा है, उसका उल्लेख न किया हो। आइए हम यहीं रुककर पता लगाएं। दावा और सांग्ये, येशे और नोरबू घाटी के भीतर यात्रा करें। हम अपनी पूछताछ करेंगे। यदि यह घाटी वास्तव में एक बेयुल (पारंपरिक माओरी मठ) है, तो हमें आवश्यक प्रार्थनाएँ करनी होंगी और आवश्यक अनुष्ठान करने होंगे ताकि हमें अंदर प्रवेश करने और वहाँ निवास करने वाली आत्माओं को विचलित करने की अनुमति मिल सके।”

भाई तामेंग ने कहा, “हाँ। हमें सावधान रहना होगा। हमने जो घटनाएँ देखीं, वे हमारी समझ से परे हैं। भेड़ियों को मत भूलिए। वे जंगली याकों के स्वाभाविक शिकारी हैं, फिर भी उन्होंने उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाया। शायद इसलिए कि वे याकों के बड़े और खूंखार होने के कारण ज़्यादा समझदार हैं। भेड़िये हमें, हमारे पालतू याकों, खच्चरों और कुत्तों को आसान शिकार समझ सकते हैं। यह लंबी घाटी सैकड़ों वर्षों में कई स्थानों से टूटकर बना एक पुराना हिमनद भी हो सकता है। हमें सावधान रहना चाहिए।”

सांग्ये ने येशे और नोरबू को जानवरों और सामान को व्यवस्थित करने के लिए भेजा। येशे के पिता अपनी दुकान के अंदर गए और पूरे समूह के लिए एक सप्ताह से अधिक समय तक चलने वाला सामान चुनने लगे। उनके पास दो अल्पाइन तंबू थे जो उन्हें नॉर्वे के एक अभियान दल ने दिए थे। वे दिरापुक भोजनालय गए थे और एक कोरा के दौरान उनके यहाँ रुके थे। वे भारी तंबू अपने साथ नहीं ले जाना चाहते थे क्योंकि उन्हें काठमांडू वापस गाड़ी से जाना था और फिर नॉर्वे वापस हवाई जहाज से लौटना था। उन्होंने येशे को तंबू खोलना और उनका उपयोग करना सिखाया था, ताकि अगर उन्हें पैकेट में ही छोड़ दिया जाए तो कपड़ा सड़ना शुरू न हो जाए। उन्होंने सोचा, ये तंबू आज काम आएंगे, हर चीज किसी न किसी उद्देश्य से होती है, और सबसे प्रबुद्ध व्यक्ति ने ही नॉर्वे से उस अभियान दल को ये तंबू देने के लिए भेजा होगा।

सूखे कोयले के दो बोरे थे जो विशेष रूप से इन ऊंचे इलाकों में इस्तेमाल के लिए बनाए गए थे। यह शिकुआनहे और नगारी से उसका भंडार था, ताकि अगर कभी हिमपात या हिमस्खलन हो जाए तो वह इनका इस्तेमाल कर सके। कोयले के ये दो बोरे येशे और उसके दादाजी के काम आएंगे। वह शिकुआनहे में अपने चचेरे भाई को संदेश भेजेगा और ज़रूरतों की सूची देगा। अगर मौसम ठीक रहा तो सामान एक हफ्ते के अंदर उसके पास पहुंच जाएगा। वह यहीं रुककर यह सुनिश्चित करेगा कि उसके पिता और पुत्र, जो उसके लिए बहुत प्यारे थे, सुरक्षित लौट आएं।

दोनों भिक्षु तंबू वाले भोजनालय से निकले और अपने-अपने मठों की ओर चलने लगे। बूढ़े दावा, भाई तामेंग के साथ कुछ दूर तक गए और फिर लौट आए। येशे और नोर्बू जानवरों और सामान को व्यवस्थित ढंग से रखने में व्यस्त थे। सांग्ये अपने मास्टिफ़ कुत्तों को लेने गया। ये कुत्ते भेड़ियों से आगाह करने और उन्हें साहस देने में काम आएंगे। दिरापुक मठ के भिक्षु ने कुछ सहायकों से टीम के लिए आशीर्वाद के रूप में प्रार्थना वस्त्र और प्रार्थना चक्र भेजने का अनुरोध किया। येशे की माता तंबू वाले भोजनालय से बाहर निकलीं और चुपचाप

कांग रेनपोचे पर्वत की चोटियों को निहारते हुए, गहरी श्रद्धा से जमीन पर लेट गईं और अपने बेटे, उसके दादा, बूढ़े दावा और युवा नोर्बू, उनके जानवरों और उनके कुत्तों के लिए परम ज्ञानी ईश्वर से आशीर्वाद की प्रार्थना की।

***

सांग्ये ने युवा नोरबू और उसके पोते येशे की ओर देखा। वह जानता था कि उनकी युवावस्था इस अज्ञात और अनछुई घाटी की खोज में उनकी मदद करेगी। बूढ़ा दावा भी समूह के साथ यात्रा कर सकेगा। वह खुश था। वह चाहता था कि उसका जीवन इसी तरह बीते, तिब्बत के विशाल हिमालय के रहस्यमयी पहाड़ों के महान अज्ञात की खोज में। यह एक ऐसा समूह होगा जो घाटी में कई दिनों या हफ्तों तक रह सकता है। उसे लगा कि उन्हें इसी तरह योजना बनानी होगी, क्योंकि कौन जानता है कि वहाँ क्या है।

वे एक घंटे के भीतर चलने के लिए तैयार थे। सांग्ये ने येशे के साथ जोड़ी बनाई, जबकि दावा नोर्बू के साथ था। वे सांग्ये द्वारा चुने गए घोड़ों पर सवार होकर निकलेंगे। सांग्ये ने उनकी ताकत, साहस और वफादारी के आधार पर उन्हें चुना था। वे कभी भी खतरे से नहीं भागते थे और ऊंचे इलाकों में चलने के आदी थे। चार याक चुने गए थे। चारों याक काले बालों वाले थे, क्योंकि अन्य याक सफेद, चितकबरे और भूरे रंग के भी थे। सांग्ये चाहता था कि चारों याक जंगली नस्ल के जैसे दिखें। वह नहीं चाहता था कि अन्य पालतू याक जंगली वातावरण और रहस्यमय घाटी में अलग दिखें।

येशे और नोरबू ने चारों घोड़ों और याकों को आगे बढ़ाया। उनके पीछे-पीछे तीन विशालकाय कुत्ते भी चल दिए। सांग्ये और दावा ने विशाल कांग रेनपोचे शिखर की ओर देखते हुए मौन प्रार्थना की और येशे के माता-पिता को हाथ हिलाकर अभिवादन किया। स्थानीय तीर्थयात्री मार्गदर्शक, याक चराने वाले लड़के और अन्य सहायक दल का स्वागत करने आए। दिरापुक में सभी को यह खबर फैल गई थी कि दो मठों के भिक्षुओं ने सांग्ये और दावा को अज्ञात घाटी में एक पवित्र स्थान की खोज में जाने के लिए कहा है, जहाँ अनेक पवित्र आत्माएँ और देवता निवास करते हैं। उन्हें वहाँ जाकर उन अज्ञात खजानों को लेकर लौटना था जिन्हें पवित्र देवताओं ने इन घाटियों में छिपा रखा था।

दिरापुक मठ से भिक्षु समूह से मिलने वापस आए और उन्हें एक साथ खड़े होने के लिए कहा, क्योंकि वे देवताओं और पवित्र आत्माओं से प्रार्थना करने वाले थे ताकि उन्हें गुप्त घाटी में प्रवेश करने और वहां के रहस्यों को जानने की अनुमति मिल सके। प्रार्थना के बाद, उन्होंने उन चारों से बात की और निर्देश दिया, "ये ऐसे क्षेत्र हैं जिनके बारे में हम नहीं जानते। भाई तामेंग इस विशेष घाटी के बारे में कुछ जानकारी के लिए गुरु रिनचेन से परामर्श करने गए हैं। हम अन्य घाटियों में भी संदेश भेजेंगे और यह पता लगाने की कोशिश करेंगे कि क्या कोई जानकारी पहले से ज्ञात है, सुनी गई है या विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में लिखी गई है।"

"चूंकि हम इस जगह के बारे में नहीं जानते, इसलिए मैंने अभी दिरापुक के आसपास के इन पहाड़ों के संरक्षक देवताओं से प्रार्थना की है कि वे हमें अंदर जाने की अनुमति दें। कृपया किसी भी प्रकार के संकेत या किसी भी व्यक्ति की ओर से आने वाली किसी भी ऐसी सूचना का इंतजार करें जो हमें अंदर जाने से रोके। यदि कोई अशुभ संकेत न मिले, तो आप आगे बढ़ सकते हैं। मैं आपके लिए प्रार्थना के वस्त्र और पवित्र पत्थर भी लाया हूँ जिन्हें आपको दिरापुक में पगडंडी के ऊपर घाटी के प्रवेश द्वार पर रखना है। आप इस रहस्यमयी घाटी में प्रवेश द्वार बनाने के लिए इन पत्थरों को रखने वाले पहले व्यक्ति होंगे।"

सांग्ये, दावा, येशे और नोरबू ने आदरपूर्वक सिर झुकाया। स्थानीय तीर्थयात्री मार्गदर्शक, दारचेन के सहायक और याक चराने वाले लड़के भी समूह में शामिल हो गए और दिरापुक के आसपास के पहाड़ों की शुभ आत्माओं के लिए भिक्षु द्वारा की गई प्रार्थना और स्तुति के प्रति आदरपूर्वक सिर झुकाया। भिक्षु ने आगे कहा, "यहाँ एकत्रित सभी लोग। आज आप ही सौभाग्यशाली भक्त हैं। जैसे ही हमारे मित्र और भाई घाटी में प्रवेश करेंगे, आप सभी उस प्रवेश द्वार के निर्माण में शामिल होंगे जिसका नेतृत्व भिक्षु चोकु और दिरापुक से करेंगे। यदि मेरे भाई तामेंग समय पर नहीं लौटते हैं, तो हम प्रवेश द्वार का एक कोना उनके लिए छोड़ देंगे, ताकि वे उसे स्थापित कर सकें।"

यह एक पारंपरिक प्रथा थी, जिसके तहत श्रद्धालु स्थानीय पत्थरों से एक स्तूप जैसी प्रवेश संरचना बनाते थे। उनका मानना था कि इस प्रवेश द्वार में देवी-देवताओं और आत्माओं की शक्ति समाहित है और इससे गुजरने वालों को आशीर्वाद प्राप्त होता है। घाटी में इस प्रकार का सबसे पुराना प्रवेश द्वार दारचेन के पास स्थित प्रसिद्ध यम-द्वार (मृत्यु के देवता यम का प्रवेश द्वार) था। सांग्ये और दावा ने मार्ग पर चलकर पहले दो कोनों के लिए पत्थर रखे, जबकि दिरापुक मठ के भिक्षु ने तीसरा कोना रखा। येशे ने सांग्ये और भिक्षु के पत्थरों को जोड़ने के लिए एक पत्थर रखा, जबकि नोर्बू ने सांग्ये और दावा के पत्थरों को जोड़ने के लिए एक पत्थर रखा। येशे के माता-पिता ने अगले दो पत्थर रखे, जिसके बाद स्थानीय लोगों ने पत्थर रखे।

चारों लोगों का समूह उस पवित्र प्रवेश द्वार के प्रतीक पत्थरों को पार कर गया, जो रास्ते में स्थापित किए गए थे। उन्होंने येशे के माता-पिता, स्थानीय लोगों और भिक्षु की ओर मुड़कर देखा और हाथ हिलाया। उन्होंने कांग रेनपोचे पर्वत की ओर देखा और आदरपूर्वक प्रणाम किया। मानो आपसी सहमति से, वे अपने घोड़ों के साथ चल पड़े। येशे और नोरबू के घोड़े याकों के पीछे चल रहे थे, जबकि सांग्ये और दावा सबसे आगे चल रहे थे। तीनों विशालकाय कुत्ते इधर-उधर दौड़ रहे थे, हलचल को देखकर आश्चर्यचकित थे और कुल मिलाकर सब कुछ देखकर खुश थे।

दिरापुक से दूर पगडंडी पहले ऊपर की ओर चढ़ती हुई प्रतीत हुई और फिर एक नदी के किनारे पहुँच गई जो बेहद बड़े-बड़े पत्थरों से ढकी हुई थी। सांग्ये ने सोचा कि शायद यही कारण था कि लोग घाटी में प्रवेश करने की हिम्मत नहीं कर पाए थे। तो फिर जंगली याक कहाँ से अंदर आए होंगे, अगर घाटी का प्रवेश द्वार पत्थरों से पूरी तरह अवरुद्ध था? उसने सोचा कि कहीं न कहीं तो प्रवेश द्वार होगा ही। वे चारों बड़े-बड़े पत्थरों के बीच से रास्ता खोजने के लिए फैल गए। याकों को घोड़ों के साथ कुछ पत्थरों से बाँध दिया गया। मास्टिफ कुत्तों को भी जानवरों के पास रहने के लिए कहा गया।

बूढ़े दावा को आश्चर्य हुआ कि क्या उनकी खोज यहीं समाप्त हो गई। पत्थरों के बीच से आगे बढ़ने का कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। येशे और नोरबू अधीर हो रहे थे। वे घाटी के अंदर तेज़ी से आगे बढ़कर जंगली याकों से मिलना चाहते थे। येशे ने सोचा कि नदी के तल पर हुआ यह विशाल भूस्खलन उनकी खोज के शुरू होने से पहले ही उसके लिए एक आपदा जैसा लग रहा था। कुछ पत्थर दस से पंद्रह फीट ऊँचे थे, और अधिकांश का वज़न 4-5 टन लग रहा था, जबकि बड़े पत्थरों के बीच के सभी खाली स्थान छोटे पत्थरों, मिट्टी,

पुराने और सूखे पेड़ों, झाड़ियों और घास के गुच्छों से भरे हुए थे, जो ऐसा लग रहा था मानो सदियों से यहीं मौजूद हों।

जानवरों की आवाजाही का कहीं कोई निशान नहीं था। चिरू, जंगली याक या भेड़ियों का कोई पदचिह्न नहीं था। हैरानी की बात यह थी कि पालतू याक या घोड़ों को चराने के लिए इन जगहों पर लाए जाने का भी कोई संकेत नहीं था, जबकि घास और खाने योग्य झाड़ियों के पर्याप्त निशान थे। ऐसा लगता था कि स्थानीय चरवाहों और उनकी बकरियों और भेड़ों ने भी इस जगह को नहीं खोजा था। सांग्ये ने सोचा, ऐसी जगह कैसे अनजानी रह सकती है? क्या यह जगह बुरी आत्माओं से ग्रस्त मानी जाती है?

दावा और सांग्ये चुपचाप इधर-उधर घूमते रहे, पत्थरों के बीच, ऊपर और चारों ओर देखते रहे। ऐसा कोई निशान नहीं दिख रहा था जिससे लगे कि बड़े जंगली याकों के झुंड ने, जो इस रास्ते से गुजरे होंगे, पत्थरों को हिलाया हो। दावा उन बारह बड़े जंगली याकों के किसी निशान की तलाश कर रहा था, जो शायद अनजाने में या अपने भारी-भरकम शरीर के कारण पीछे रह गए हों। पूरा इलाका पथरीला था। चट्टानी भूस्खलन के दोनों ओर रास्ता रुक गया था। चट्टानी फैलाव लगभग तीस मीटर चौड़ा था, जिसने पूरी घाटी को अवरुद्ध कर रखा था, और कम से कम पंद्रह मीटर ऊंचा प्रतीत हो रहा था। वे प्रवेश द्वार को अवरुद्ध करने वाली चट्टान की दीवार के पार नहीं देख पा रहे थे।

“इस दीवार को पार करने का कोई और रास्ता तो होना ही चाहिए,” सांग्ये ने दावा से कहा। “चलो कुछ दूर पीछे चलते हैं और कोई ऊँची जगह ढूंढते हैं। हम इस चट्टानी दीवार के ऊपर से जो कुछ देख सकते हैं, उसे देख सकते हैं। मैं वापस जाकर जो भी संकरा रास्ता मिले, उस पर चढ़ जाऊँगी। येशे और नोरबू जानवरों के साथ ही रहें। तुम यहीं खोजते रहो। जंगली याक को इस दीवार से होकर निकलने की ज़रूरत नहीं पड़ती। यह जानवरों के व्यवहार के हर पहलू के खिलाफ है। रात में हुई भारी बारिश के बारे में सोचो। कोई भी जानवर, चाहे जंगली हो या पालतू, अनजान रास्ते पर जाने का जोखिम नहीं उठाता। इस भूलभुलैया में कोई न कोई रास्ता ज़रूर होगा। हमें वह दिखाई नहीं दे रहा है।”

चट्टान की खड़ी ढलानें और उसके बगल के पहाड़ लगभग पत्थरों से भरे एक बक्से जैसे लग रहे थे। नोर्बू ने सोचा, अजीब बात यह है कि याक, घोड़े और कुत्ते बहुत शांत दिख रहे थे। वे इस जगह पर बिल्कुल भी विचलित नहीं लग रहे थे। क्या वे सही जगह पर आए थे? क्या पता जंगली याकों का झुंड सचमुच इस घाटी में आ गया हो, और इस पत्थर की दीवार पर रुक गया हो, और वास्तव में दिरापुक से होते हुए ल्हाचू घाटी की ओर वापस चला गया हो? इसका मतलब यह होगा कि वे इस अनजान घाटी से कभी बाहर ही नहीं आए। वह सोच रहा था कि क्या उसे अपने संदेह दावा और सांग्ये को बताने चाहिए।

उसने येशे के चेहरे पर उत्साह देखा। उसने सांग्ये को इस खोज को शुरू करने में गर्व महसूस करते हुए देखा था। बूढ़ा दावा बहुत खुश था। वे संतुष्ट दिख रहे थे, भले ही उन्हें कोई रास्ता नहीं मिला था। क्रोध या झुंझलाहट का कोई निशान नहीं था। उसने मन ही मन सोचा, वह बाद में पूछ लेगा।

वी

शेंशे को आश्चर्य हुआ कि क्या उसने सही सुना था। भारत से आया सिख तीर्थयात्री, अपने पवित्र गुरु के बारे में सवालों के जवाब खोजने के लिए, कांग रेनपोचे पर्वत पर जाकर "खोज" करना चाहता था!!! वहाँ कोई नहीं जाता था। वह यह जानता था। उसे पर्वत से जुड़े अंधविश्वासों या पौराणिक कथाओं की ज़्यादा परवाह नहीं थी, लेकिन इस दूरस्थ स्थान पर शांति बनाए रखना और कानून-व्यवस्था को बिगड़ने से रोकना उसका कर्तव्य था। यह तीर्थयात्री सिर्फ इसलिए पर्वत पर जाना चाहता था क्योंकि उसे नींद नहीं आ रही थी?

आज वह दारचेन में अकेला था। वह इस समस्या पर किससे बात करता? शायद उसने उसे ठीक से सुना नहीं था। आखिर, उसे भाषा ठीक से आती नहीं थी। क्या उसने सचमुच कहा था कि वह उस पहाड़ पर चढ़ना चाहता है जिसे ये सभी तीर्थयात्री बहुत पवित्र मानते हैं? क्या उसे उसे रोकना चाहिए? क्या उसे पहाड़ पर न जाने के लिए कहना चाहिए? शेंशे सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। वह जानता था कि ज्यादातर याक चराने वाले और अन्य गाइड एक पुलिसवाले की बात मान लेते हैं। बेहतर यही होगा कि उन्हें डराकर इंतज़ार किया जाए और देखा जाए।

सरदार अमरपाल सिंह शेंशे के बगल में बैठ गए और बड़े ही शांत और प्रसन्न भाव से मुस्कुराए। उनकी मुस्कान और व्यवहार बहुत सुकून देने वाला था। शेंशे के लिए यह बात समझ से परे थी। एक व्यक्ति स्थानीय रीति-रिवाजों को तोड़ना चाहता था और कुछ ऐसा करना चाहता था जो गैरकानूनी हो सकता था, और अब वह एक पुलिसकर्मी के बगल में बैठा मुस्कुरा रहा था। शेंशे ने नालंदा के बौद्ध भिक्षु की ओर देखा और पूछा, “भाई, क्या आपके मित्र ने कहा कि वह कांग रेनपोचे पर्वत पर चलना चाहते हैं? क्या मैंने उन्हें सही सुना? क्या मैं उन्हें सही समझ रहा हूँ?”

नालंदा के भिक्षु ने चीनी पुलिसकर्मी की दुर्दशा पर मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “चिंता मत करो। मेरा सिख भाई सुमेरु पर्वत का भक्त है। वह कुछ भी गलत नहीं करेगा और कोरा की परंपराओं का उल्लंघन नहीं करेगा। उसे पवित्र पर्वत से एक विशेष खिंचाव महसूस हुआ है। वह बरसाती तूफान के दौरान एक अजीब रात थी। हमें नहीं पता कि वहां क्या हो रहा था। हम पर्यटक नहीं हैं। ये तीर्थयात्री जो यहां कोरा करने आते हैं, वे पर्यटक नहीं हैं। हम यहां श्रद्धा से आते हैं। हम उस खिंचाव को महसूस करते हैं। आप केवल एक पर्वत देखते हैं। हम अपनी पहचान देखते हैं।”

“यह उन तिब्बतियों के बारे में नहीं है जो भारत भाग गए। यह उन तिब्बतियों के बारे में भी नहीं है जो अन्य स्थानों से आकर कोरा की परिक्रमा करने के लिए यहाँ आते हैं। यह पवित्र पर्वत कई धर्मों से जुड़ा है। हम जो यहाँ आते हैं, पर्यटक बनकर नहीं आते। हममें से जो तिब्बत के बाहर से आते हैं, उनके लिए यह तीर्थयात्रा जीवन में एक बार का अनुभव है। हम यहाँ अपने धर्म पर संदेह करने नहीं आते। हम, जो तीर्थयात्री बनकर

आते हैं, यहाँ पूजा करने आते हैं," नालंदा के भिक्षु ने कहा। "हम यहाँ अपवित्रता करने नहीं आते। हम पर भरोसा करें।"

सरदार अमरपाल सिंह ने भिक्षु से हिंदी में बात की, जिसका उन्होंने शेंशे में अनुवाद किया और कहा, "मेरे भाई, मेरे सिख भाई, मुझसे कहते हैं कि मैं और आप दोनों गलत हैं। वे कहते हैं कि वे सुमेरु पर्वत, हमारे कांग रेनपोचे के पास जाना चाहते हैं, लेकिन उस पर नहीं चलेंगे। वे कहते हैं कि उन्हें नहीं पता कि वे उस पर चलना चाहेंगे या नहीं। उन्हें नहीं पता कि क्या होगा। उन्होंने पर्वत का खिंचाव महसूस किया। वे कहते हैं कि जब चारों ओर बारिश हो रही थी, तब कांग रेनपोचे की चोटियों पर कुछ देर के लिए बारिश नहीं हुई। उन्होंने चोटी को बहुत स्पष्ट रूप से देखा। उन्हें ऐसा लगा जैसे वहाँ कुछ हुआ हो। वे पास जाना चाहते हैं, लेकिन उन्हें नहीं पता कि पास जाने के बाद उनका मन बदल जाएगा या नहीं।"

सिख फिर मुस्कुराया, और शेनशे पहले से भी ज़्यादा उलझन में पड़ गया। यह आदमी फिर क्यों मुस्कुरा रहा है? उसने अभी-अभी साधु से कहा था कि वह शायद अपवित्रता कर बैठेगा, और फिर यह आदमी मुस्कुरा रहा है। उसने सोचा कि वह क्या कर सकता है। पहाड़ पर चढ़ना ज़ाहिर तौर पर कोई अपराध नहीं था। विभिन्न धर्मों में इस पवित्र पर्वत के प्रति आदर और श्रद्धा के कारण इसे वर्जित किया गया था। अगर कोई जाता, तो व्यापक निंदा होती। वह जानता था कि जो लोग बिना किसी को बताए अकेले जाने की हिम्मत करते हैं, उनके बारे में लोग बातें करते हैं। लेकिन उसने किसी के लौटने के बारे में नहीं सुना था। क्या इस सिख तीर्थयात्री को पता था कि कोई वापस नहीं लौटता?

शेंशे के आग्रह पर साधु ने सरदार अमरपाल सिंह से दोबारा बात की। उन्होंने सिपाही की चिंता और फिक्र को सरदार अमरपाल सिंह तक पहुँचाया। कुछ देर तक बातचीत हुई और साधु ने अनुवाद करते हुए कहा, "मेरा भाई मुझसे कहता है कि वह भविष्य का स्वामी नहीं है। वह यहाँ उस भूमि पर है जिसे पहले कभी किसी ने नहीं समझा। वह यहाँ उत्तरों की खोज में आया है। यही उसका जीवन है। वह और कुछ करना या हासिल करना नहीं चाहता। अगर उसे अपने सवालों के जवाब नहीं मिलते, तो भारत लौटने का कोई मतलब नहीं। वह पवित्र पर्वत के पास जाकर प्रतीक्षा करना पसंद करेगा।"

सिख तीर्थयात्री ने भिक्षु से फिर बात की, जिन्होंने दोहराया, "मेरा भाई तारबोचे या यमद्वार नहीं जाना चाहता। वह कोरा मार्ग पर चलना नहीं चाहता। वह बाद में चलेगा। हमारे साथ आए तीर्थयात्रियों का समूह आगे निकल गया है। मेरा भाई चोकु से आगे नहीं चल सका और उसकी सांस फूलने लगी। हम मठ क्षेत्र से लौट आए और दारचेन वापस आकर उन तीर्थयात्रियों के समूह का इंतजार करने लगे जो कोरा पूरा करने के लिए आगे निकल गए हैं। वह कहता है कि वह आज सिलुंग गोम्पा या ग्येंगेटक गोम्पा तक पैदल जाना चाहता है और रात वहीं ठहरना चाहता है।"

शेंशे ने उत्तर दिया, "जी हाँ। मैं सोच रही थी कि आप दोनों दारचेन में अकेले क्या कर रहे हैं। भारत से आने वाले तीर्थयात्रियों को समूह के बिना घूमने की अनुमति नहीं है। आपके तीर्थयात्री मार्गदर्शक आपके किसी भी ऐसे काम के लिए ज़िम्मेदार होंगे जो निंदनीय हो सकता है। मुझे आपके सिख भाई और उनके सवालों से कोई

आपत्ति नहीं है। मैं धर्म का सम्मान करती हूँ। मेरा काम भी तो है। मुझे लगता है कि आपके लिए ग्येंगतक गोम्पा जाना अच्छा रहेगा। मैं वहाँ के भिक्षुओं को जानती हूँ। मैं वहाँ रह चुकी हूँ। यह पवित्र पर्वत के नज़दीक है।"

शेंशे, सरदार अमरपाल सिंह और नालंदा के भिक्षु तीनों तंबू वाले भोजनालय से बाहर निकले और कांग रेनपोचे की ढलानों की ओर देखने लगे। सिख भिक्षु ने चोटियों की ओर इशारा करते हुए उन्हें अलग-अलग नाम से बताया। शेंशे ने सोचा कि वह इस इलाके को अच्छी तरह जानता है। उन्होंने फिर आदरपूर्वक एक-दूसरे से बात की और भिक्षु ने शेंशे के लिए अनुवाद किया, "मैंने अपने भाई को बताया है कि आपने हमें ग्येंगतक गोम्पा जाने की सलाह दी है और आप वहाँ के भिक्षुओं को जानते हैं। वह यह सुनकर प्रसन्न हुआ। उसने कहा कि यह उसके लिए एक संकेत है कि उसे ऐसे व्यक्ति से निर्देश प्राप्त हुए हैं जो बिना आपकी खोज किए ही वहाँ पहुँच गया है।"

"उनकी एक विनती भी है," भिक्षु ने आगे कहा, "वे आपसे पूछना चाहते हैं कि क्या आप हमारे साथ ग्येंगतक गोम्पा चल सकते हैं? वे ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि आप भिक्षुओं को जानते हैं और वे जानते हैं कि हम अपने तीर्थयात्री समूह के बिना यूँ ही नहीं घूम सकते। पुलिस की कार्रवाई के डर से भिक्षु हमें गोम्पा में ठहरने की अनुमति नहीं दे सकते। यह बात वे कह रहे हैं, मैं नहीं। वे यह भी कह रहे हैं कि यदि आप उनके साथ हों, तो वे देखना चाहते हैं कि जब वे पर्वत पर जाने का निर्णय लें, यदि पर्वत उन्हें बुलाए, तो क्या आप उन्हें रोक पाएंगे। वे देखना चाहते हैं कि जब पर्वत उनके लिए निर्णय ले, तो क्या आप उन्हें रोकने की शक्ति रखते हैं। यह बात वे कह रहे हैं, मैं नहीं।"

शेंशे मुस्कुराए। उन्हें इस तरह की खुली चुनौती पसंद आई। कम से कम यह तीर्थयात्री उनसे झूठ नहीं बोल रहा था या छल नहीं कर रहा था। शेंशे से मदद मांगना उनका सही था, क्योंकि भारत से आए तीर्थयात्रियों के समूहों की मदद कोई नहीं करता। बात सिर्फ एक रात की थी, और उन्होंने सोचा कि एक रात में बारिश से क्या नुकसान हो सकता है जो पहले से ही नहीं हुआ हो। ग्येंगतक गोम्पा दक्षिण से कांग रेनपोचे के सबसे करीब था, और डारचेन और नंदी शिखर के बीच सीधी दृष्टि रेखा में था। यहाँ से कांग रेनपोचे पर्वत शिखर का अद्भुत नजारा दिखता था और सिख तीर्थयात्री शायद इतनी निकटता से संतुष्ट हो जाते।

पुलिसवाले ने नालंदा के भिक्षु से कहा, "ठीक है। मैं आपके साथ चलता हूँ। तीर्थयात्रियों के समूह से दो शेरपा लड़के और एक याक ले लीजिए। हम अपने लिए तीन घोड़े भी ले लेंगे। यही बेहतर होगा। आप लोग पहले हाँफ रहे थे। क्या आप अपने साथ कोई दवाइयाँ नहीं लाए? अपना शरीर और कद-काठी देखिए। आप दोनों इन पहाड़ियों पर चलने के लायक नहीं हैं। भक्ति कोरा (मार्गदर्शन) करने की योग्यता का पैमाना नहीं है। आपने घोड़े क्यों नहीं किराए पर लिए? चलिए चलते हैं। मैं स्थानीय याक चलाने वाले लड़कों और घोड़ों को अपने साथ ले आता हूँ। वे मेरी बात से सहमत होंगे।"

नालंदा के भिक्षु ने सिख तीर्थयात्री से बात करने के लिए मुड़ा। उसने और शेंशे ने एक अजीब दृश्य देखा। सरदार अमरपाल सिंह खुले में बैठे थे, उनकी माला उनके हाथ में थी, वे गहरी ध्यान मुद्रा में थे और किसी

भजन का जाप कर रहे थे। उनका मुख पवित्र पर्वत की ओर था और वे प्रार्थना में लीन थे। इस दृश्य का सबसे विचित्र पहलू सिख नहीं, बल्कि पास में मौजूद खूंखार कुत्ते थे। वे जमीन के बहुत करीब दुबके हुए थे और गुर्रा रहे थे। वे क्रोध या धमकी में नहीं गुर्रा रहे थे, बल्कि बहुत सतर्क लग रहे थे। पास में दो याक स्थिर खड़े थे, उनकी पूंछें सीधी ऊपर उठी हुई थीं, वे सख़्त सतर्क मुद्रा में थे, उनके सिर ऊपर थे और वे अपनी नाक से धुएँ के बड़े-बड़े फव्वारे छोड़ रहे थे। शेंशे यह देखकर कांप गया और चिंतित हो गया। कुछ बहुत ही अलग हो रहा था।

***

मास्टर रिनचेन ने भाई तामेंग का चोकु मठ में लौटने पर अभिवादन किया। स्थानीय सहायक और रात्रिकालीन तीर्थयात्री इधर-उधर घूमने लगे थे, और कुछ तीर्थयात्री दिरापुक की ओर आगे बढ़ने लगे थे। मठ के स्थानीय सहायक और चोकु गोम्पा के पुराने तीर्थयात्री मार्गदर्शक और याक-चालक दल के सदस्य भाई तामेंग को उत्सुकता से देख रहे थे। वे समझ गए थे कि कुछ तो गड़बड़ है। इन मार्गदर्शकों और याक-चालक दल के सदस्यों ने कुछ घुड़सवार दल के सदस्यों के साथ चोकु गोम्पा को अपना शिविर स्थल बना लिया था। वे उन तीर्थयात्रियों का इंतजार कर रहे थे जो दारचेन से बड़े उत्साह से निकले थे और चोकु पहुँचते-पहुँचते हाँफने के कारण थककर चूर हो गए थे।

चोकु में इन तीर्थयात्रियों को याक और घोड़ों की सहायता और समर्थन दिया जाता था और उन्हें द्रोल्मा ला दर्रे से होते हुए आगे दारचेन तक ले जाया जाता था। वे प्रतिदिन हांफते हुए तीर्थयात्रियों से मिलते थे। वे चोकु गोम्पा से भली-भांति परिचित थे, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय यहीं बिताया था और उनके पिता भी उनसे पहले यहीं रह चुके थे। वे सभी प्रार्थना सत्रों में भाग लेते थे और भिक्षुओं द्वारा आयोजित प्रवचनों और उत्सवों में शामिल होते थे। यही उनकी दुनिया थी। वे इसके अलावा किसी और चीज़ से परिचित नहीं थे। यहाँ न तो समाचार पत्र थे, न रेडियो, न टीवी, न इंटरनेट और न ही मोबाइल फोन।

तीर्थयात्रा के हर मौसम में तीर्थयात्री मार्गदर्शकों और सहायकों को केवल एक ही बात पता होती थी। वे हर दिन आते थे और उन्हें अच्छा वेतन मिलता था। वे कठिनाइयों से घबराते नहीं थे और आमतौर पर स्थानीय लोगों के प्रति स्नेही, जिज्ञासु और विचारशील होते थे। उन्हें यह नहीं पता था कि भाई तामेंग रात में बारिश के दौरान बाहर गए थे, लेकिन उनमें से कुछ ने उन्हें बूढ़े दावा के साथ लौटते देखा था। उन्होंने उन्हें दिरापुक क्षेत्र की ओर फिर से भागते हुए देखा था। और अब, भाई तामेंग दावा के बिना लौटे थे। आखिर क्या गड़बड़ थी?

मठ के अंदर, भाई तामेंग सीधे धर्मकाया अमिताभ बुद्ध की प्रतिमा के पास गए और चुपचाप प्रार्थना करने लगे। वे कांप रहे थे, घटित घटनाओं और घटनाक्रमों के अद्भुत मोड़ को देखकर आश्चर्यचकित थे। युवा भिक्षु और गुरु रिनचेन धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें एहसास हो गया था कि बूढ़ा दावा वापस नहीं लौटा है। कुछ तो हुआ होगा। भाई तामेंग ने अपनी प्रार्थना पूरी की और उनसे बात की और उन्हें दिरापुक में घटी

घटनाओं के बारे में बताया। उन्होंने उन्हें नोर्बू, उसके दो याक और उसके मैस्टिफ़ पिल्ले, किन्हाई के महान पुराने घुड़सवार सांग्ये, उसके पोते येशे, उनके भोजनालय और ऊपर के रास्ते के बारे में बताया।

उन्होंने बताया कि कैसे बूढ़े सांग्ये ने जंगली याकों के झुंड के पदचिह्न देखे थे और कैसे उन्हें भी यकीन हो गया था कि वे वाकई बहुत बड़े जानवर थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि झुंड दिरापुक के ऊपर वाली घाटी से नीचे आया था। भाई तामेंग ने गुरु रिनचेन को बताया कि कैसे सांग्ये, दावा, येशे और नोरबू ने आगे बढ़कर उस रहस्यमयी घाटी में प्रवेश करने का फैसला किया। इस घाटी के बारे में किसी को कुछ नहीं पता था। कोई भी इस घाटी में नहीं गया था। उन्हें नहीं पता था कि क्यों। लेकिन उन्होंने कहा कि दल याक, घोड़े और मास्टिफ कुत्ते लेकर अंदर चला गया था।

मास्टर रिनचेन घटी घटनाओं की संख्या देखकर मुस्कुराए। उन्होंने भाई तामेंग से स्नेहपूर्वक कहा, "तुम अपनी उत्सुकता के बावजूद लौट आए? तुम्हारी जिज्ञासा ने ही इन सभी घटनाओं को जन्म दिया। और तुम उनके साथ नहीं गए? क्या तुम्हें उन बारह तीर्थयात्रियों के बारे में कुछ पता नहीं चला जो बारिश और रात भर खुले में कोरा में बैठे थे? तुम बूढ़े दावा के साथ इस रहस्यमयी घाटी में क्यों नहीं गए? तुम किसी को संदेश देकर हमें सूचित करने के लिए भेज सकते थे।"

भाई तामेंग ने गुरु रिनचेन के विश्वास और स्नेह को देखकर प्रसन्नतापूर्वक सिर झुकाया। उन्होंने बूढ़े दावा से कहा था कि घाटी के अंदर जाने के लिए उन्हें गुरु की अनुमति चाहिए। उन्होंने उत्तर दिया, "गुरु, आपकी सराहना के लिए मैं अत्यंत आभारी हूँ। मैं उनके साथ घाटी के अंदर जाना चाहता था और खोजबीन करना चाहता था। लेकिन मैंने उन्हें आगे जाने देने का निर्णय लिया और आपसे बात करके आपकी अनुमति लेना चाहता था। घाटी और उसके बारे में उपलब्ध जानकारी के तरीके ने मुझे सतर्क कर दिया। घाटी के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। दिरापुक के भिक्षुओं को भी इसके बारे में कुछ नहीं पता। विशेषज्ञ तीर्थयात्री मार्गदर्शक, खोजकर्ता और शिकारी भी इस घाटी के बारे में नहीं जानते। वे इसमें प्रवेश नहीं कर पाए हैं। इसी अज्ञात पहलू ने मुझे प्रतीक्षा करने के लिए प्रेरित किया।"

"गुरुजी, मैं जो करने जा रहा हूँ उसके बारे में चिंतित, भयभीत और डरा हुआ हूँ," भाई तामेंग ने धर्मकाया अमिताभ बुद्ध के शांत चेहरे की ओर बार-बार देखते हुए कहा, "जंगली याकों के बारे में कुछ भी पता नहीं है, इन तीर्थयात्रियों के बारे में कुछ भी पता नहीं है, वे कहाँ से आए थे या वे दारचेन लौट गए या दिरापुक की ओर आगे बढ़ गए, और उस घाटी के बारे में भी कुछ पता नहीं है जहाँ बूढ़े सांग्ये ने निशान देखा था, और वह कभी अंदर नहीं गया।"

मुझे डर है कि यह घाटी कांग रेनपोचे क्षेत्र की सभी बेयुल घाटियों में से सबसे पवित्र हो सकती है। मैंने इस घाटी के बारे में नहीं सुना है, लेकिन हम जानते हैं कि इस जगह में कई रहस्य छिपे हैं। दिरापुक में कोई भी इस घाटी में लकड़ी इकट्ठा करने, भेड़-बकरियां चराने, शिकार करने या जाल बिछाने के लिए भी नहीं गया था। पास का इतना बड़ा इलाका अज्ञात या अनछुआ क्यों है? क्या हम इस घाटी के बारे में कुछ जानते हैं? दिरापुक के भिक्षुओं ने भी कहा कि उन्हें इसकी जांच करनी होगी।

गुरु रिनचेन मुस्कुराए और बोले, “भाई, जिस बात का हमें ज्ञान नहीं है, उससे घबराओ मत। अगर हमारे बस में होता, तो हम उसके बारे में जान चुके होते। हम हजार जीवित बुद्धों की भूमि में हैं, हम प्रतिदिन परम पूजनीय अमिताभ बुद्ध की आराधना करते हैं, हम महान शाक्यमुनि के वचन पढ़ते हैं, हम उन भूमियों में विचरण करते हैं जिन्हें स्वयं सर्वोत्कृष्ट अवलोकितेश्वर ने पवित्र किया है। तो फिर हमें अज्ञात से क्यों डरना चाहिए?”

“तुम जाओ और मेरे पुराने दोस्त दावा के पास वापस जाने की योजना बनाओ। उसे उसके हाल पर मत छोड़ो। उसे तुमसे ही ताकत और हिम्मत की ज़रूरत है। हमारे मठ में जितने सालों से मैं उसे जानता हूँ, मैंने उसे इतना खुश कभी नहीं देखा। खुद को व्यवस्थित करो। हमारे पास यहाँ पर्याप्त सामान है, और अभियानों और तीर्थयात्रियों के समूहों द्वारा जमा किया गया सामान भी काफी है। सबके लिए अल्पाइन टेंट, स्लीपिंग बैग और ज़रूरी सामान लेकर वापस जाओ। तुम्हें उस घाटी में लंबे समय तक रुकना पड़ सकता है।”

भाई तामेंग ने कृतज्ञता और आदर से सिर झुकाया और व्यवस्थित होने में जुट गए। गुरु रिनचेन ने युवा भिक्षु की ओर रुख किया और उन्हें चियू और ग्येंगेटक मठों में जाकर यह पता लगाने का निर्देश दिया कि क्या उनके प्रार्थना कक्षों या परिसर में कोरा और आसपास के क्षेत्र में स्थित अज्ञात घाटियों या बेयुल के बारे में कोई जानकारी, उल्लेख या ग्रंथ मौजूद हैं। उन्होंने युवा भिक्षु से अन्य मठों में बात करते समय सावधानी और संयम बरतने को भी कहा। वे किसी भी नए अंधविश्वास या दहशत का कारण नहीं बनना चाहते थे।

मास्टर रिनचेन ने अपने ज्ञान पर विचार किया। पवित्र पर्वत के उत्तर में, उसके निकट एक पवित्र घाटी का उल्लेख था। उन्हें इस बात का पूरा यकीन था, और वे जानते थे कि इसके बारे में बहुत कम ही बात हुई थी। वर्षों से, इसका शायद ही कभी उल्लेख हुआ हो, सिवाय इसके कि इसे स्वर्गदूतों और पवित्र आत्माओं से भरा एक स्वर्ग जैसा क्षेत्र बताया गया था। चूंकि इसका उल्लेख पवित्र पर्वत के बहुत निकट होने के कारण, सैकड़ों वर्षों से इसे कांग रेनपोचे पर्वत की ढलानों के ऊपर स्थित माना जाने लगा था। वे जानते थे कि यह सही नहीं था। इस क्षेत्र में कहीं न कहीं ग्रंथ या अभिलेख अवश्य होंगे। यह कोई रहस्य नहीं था। यह केवल एक भूला हुआ रहस्य था, उन्होंने युवा भिक्षु से कहा।

भाई तामेंग सामान और सामग्री लेकर प्रार्थना कक्ष में लौटे और उन्हें व्यवस्थित करने और अलग-अलग करने लगे। वे दो पुराने तीर्थयात्री मार्गदर्शक, एक घुड़सवार और एक याक चराने वाले लड़के को वापस लाए थे। गुरु रिनचेन ने उस समूह की गिनती की जिसे युवा भिक्षु दिरापुक के ऊपर घाटी में लौटने के लिए इकट्ठा कर रहे थे। दो तीर्थयात्री मार्गदर्शक, जिन्हें स्पष्ट रूप से उनके कुशल मार्ग खोजने और शिकार करने की क्षमता के कारण चुना गया था, क्योंकि वे इन क्षमताओं के लिए प्रसिद्ध थे, तीन घुड़सवार और तीन याक चराने वाले लड़के। गुरु इन लड़कों को जानते थे। वे यात्रा को सहन कर सकते थे और डरेंगे नहीं। वे युवा भिक्षु से भागेंगे नहीं और उन्हें छोड़ेंगे नहीं।

“गुरुजी, मैं आपकी अनुमति और आशीर्वाद चाहता/चाहती हूँ। ये भले लोग मेरे साथ घाटी में आने के लिए तैयार हो गए हैं। मैंने उन्हें बस इतना बताया है कि बूढ़ा दावा बारिश के दौरान निकले जंगली याकों और

भेड़ियों के झुंड की तलाश में है और मैं भी इस साहसिक यात्रा में शामिल होना चाहता/चाहती हूँ," भाई तामेंग ने कहा। "लेकिन मुझे इस बात का डर है कि पत्थरों के घेरे में बैठे और बाद में गायब हो गए वे अजीब तीर्थयात्री विशाल जंगली याकों के झुंड और उनके पीछे आ रहे भेड़ियों के अजीब व्यवहार को देखकर भयभीत नहीं हुए। जंगली याक उनके पास आए और उनके करीब खड़े होकर उन्हें देखने लगे। क्या उन्हें इसकी उम्मीद थी? क्या वे रहस्यमय तीर्थयात्री जंगली याकों से मिलने ही यहाँ आए थे? दिरापुक के ऊपर स्थित उस रहस्यमय घाटी में जंगली याकों के झुंड को देखकर मुझे क्या करना चाहिए?"

***

विजय कुलकर्णी ने अपने दोनों साथियों, हिमांशु और परमिता की ओर देखा और दोहराया, "मैं कैलाश पर्वत क्षेत्र में जाना चाहता हूँ। मैं अपनी योजना बदलकर मानसरोवर झील क्षेत्र का सर्वेक्षण करना चाहता हूँ। क्या तुम मेरे साथ चलना चाहोगे? मुझे ऐसा लगा जैसे वहाँ कुछ है, और वह कुछ या कोई मुझसे बात कर रहा है। आप जानते हैं, मानवीय स्तर पर, हम अस्तित्व में हैं, और अपना काम करते हैं। लेकिन यह वास्तव में कुछ और ही था। मुझे कल रात, तूफ़ान में, ऐसा लगा जैसे वहाँ कुछ और ही है।"
परमिता हँसी, लेकिन विजय के चिढ़े चेहरे को देखकर तुरंत चुप हो गई। वह जानती थी कि विजय कैलाश पर्वत जाने को लेकर गंभीर था। हालाँकि, कुछ और समस्याएँ भी थीं। उसने विजय से गंभीर स्वर में कहा, "विजय महोदय, मैं भी तुरंत कैलाश पर्वत जाना चाहती हूँ। लेकिन आप पूरे समूह को खतरे में डाल देंगे। हम यहाँ पर्यटक बनकर आए हैं, वैज्ञानिक या शोध दल बनकर नहीं। हम इस समूह के साथ इस क्षेत्र का पहला सर्वेक्षण करने आए हैं। हम इस समूह को छोड़कर नहीं जा सकते। हमें मानसरोवर झील के चारों ओर घूमना है, और फिर जब यह समूह उस क्षेत्र में जाएगा, तब कैलाश पर्वत की परिक्रमा के लिए आगे बढ़ना है।"
विजय को कानूनी दांव-पेच का भला पता था। वह इस रहस्यमयी और जादुई पर्वत से इतनी सारी नदियों के उद्गम के कारण का पता लगाने के लिए अन्य समूहों के साथ उस क्षेत्र में लौटने और जलभूवैज्ञानिक सुराग खोजने का मौका गंवाना नहीं चाहता था। आखिर इतनी सारी नदियाँ सिर्फ इसी पर्वत से क्यों निकलती हैं? कहीं और से क्यों नहीं निकल सकती थीं? एशिया का बहुत बड़ा हिस्सा, दक्षिण एशिया के कई देश, तिब्बत भी, कैलाश पर्वत पर निर्भर थे। वह किसी को नाराज़ किए बिना चट्टानों के कुछ नमूने इकट्ठा करना चाहता था। अगर शुरुआती नतीजों से कोई अच्छी जानकारी मिलती, तो वह विस्तृत अध्ययन के लिए वापस आने की अनुमति मांग सकता था।
हिमांशु को पता था कि मानसरोवर झील और कैलाश पर्वत क्षेत्र के इतने करीब होने के कारण अब क्या जोखिम हो सकते हैं। वह एक अनुभवी वैज्ञानिक थे और जानते थे कि क्या किया जा सकता है और क्या जोखिम नहीं लेना चाहिए। उन्होंने हिमांशु की ओर देखा और कहा, "दादा, हमें कुछ करना होगा। तूफान के दौरान जो कुछ हुआ, वह शायद कल न रहे। हम भारत से हैं, और हम दोनों जानते हैं कि हर जगह देवी-देवता

और राक्षस होते हैं। हमारे धर्मों और मान्यताओं में अन्य सभी धर्मों से कहीं अधिक देवी-देवता हैं। और हम यहाँ हैं। कैलाश पर्वत पर। क्या हमें दो दिन और इंतजार करना चाहिए?"

"रुको। तुम्हें रुकना चाहिए। चोटी पर जो कुछ भी हुआ हो, हम और तुम, पूरे समूह को खतरे में नहीं डाल सकते। उनमें से अधिकांश के लिए यह जीवन में एक बार मिलने वाला अवसर है और हम हमेशा लौट सकते हैं, और मुझे विश्वास है कि हम लौटेंगे। इस समूह के बाकी लोगों ने यहाँ आने के लिए अपनी पूरी जीवनभर की बचत, पेंशन, अपनी ताकत और सेहत दांव पर लगा दी है। हम अपनी जिज्ञासा के लिए इसे बर्बाद नहीं कर सकते," हिमांशु ने उत्तर दिया। "ये रहस्य यहाँ हजारों वर्षों से मौजूद हैं। अगर आप इसे आज नहीं खोजते हैं तो कुछ भी नहीं खोएगा। आराम करो।"

परमिता और एक शेरपा लड़के ने टेंट और अन्य सामान समेटना शुरू कर दिया था। टूर ग्रुप के पास तीन बड़े ट्रक और कई लैंड क्रूज़र गाड़ियाँ थीं। विजय ने मन ही मन सोचा, सौभाग्य से उनके पास एक लैंड क्रूज़र थी, क्योंकि बाकी सभी ग्रुप में चार-चार लोग थे। उनके साथ मौजूद शेरपा लड़का उनका अच्छा दोस्त बन गया था, जबकि लैंड क्रूज़र का तिब्बती ड्राइवर अक्सर गुनगुनाता रहता था। उसे अंग्रेज़ी या हिंदी समझ नहीं आती थी और शेरपा लड़का ही निर्देशों या पूछताछ का अनुवाद करता था।

विजय ने सामान पैक करने में मदद की और हिमांशु से लगातार बातें करता रहा, "जानते हो, मुझे सचमुच वहाँ से कुछ महसूस हुआ। ऐसा लगा जैसे कोई व्यक्तिगत ऊर्जा सीधे मुझ पर निर्देशित हो रही हो। मैंने इसे बहुत स्पष्ट रूप से महसूस किया। लेकिन, मैं इसे किसी तार्किक तरीके से समझा नहीं सकता। यह इस बात से भी ज़्यादा परेशान करने वाला है कि हम वहाँ तुरंत नहीं जा रहे हैं। मैं भारत में इससे भी ज़्यादा रहस्यमयी जगहों पर जा चुका हूँ। मैं आमतौर पर झूठ और झूठ में, रहस्यमय और बनावटी में फर्क कर लेता हूँ। यह किसी बाबा, मंदिर, भजन, मंत्र या तंत्र से नहीं आया। मुझे ऊर्जा का अहसास सीधे शिखर से, कैलाश पर्वत से हुआ। हँस लो, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।"

विजय ने चोटी की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसमें वास्तविकता का कुछ आभास था।" सूरज पूरी तरह से निकल आया था और तीनों को नंदी शिखर और कैलाश पर्वत की चोटी दिखाई दे रही थी। यह बेहद शानदार था और पर्वत पर एक अत्यंत सुखद शांति का अनुभव हो रहा था। वे केवल चोटी को देखकर ही एक बेहद संतुष्टिदायक अनुभव कर रहे थे। यह अत्यंत वास्तविक लग रहा था। यह अनुभूति या आभास बस एक शांति का एहसास था और वे चोटी को तब तक देखते रहे जब तक कि शेरपा सहायक लड़के ने उन्हें पुकारकर उनकी तंद्रा भंग नहीं कर दी।

पर्यटन समूह मानसरोवर झील की परिक्रमा करने के लिए तैयार था। यह परिक्रमा लैंड क्रूज़र में की जानी थी, जबकि कैलाश पर्वत की परिक्रमा पैदल करनी थी। हिमांशु मानसरोवर झील के आसपास की मिट्टी और चट्टानों के नमूनों का अध्ययन करना चाहता था और उनकी तुलना राक्षस ताल और कैलाश क्षेत्र से लिए गए नमूनों से करना चाहता था। वे शेरपा लड़के और तिब्बती ड्राइवर के साथ अपनी लैंड क्रूज़र में बैठ गए।

उनका पहला पड़ाव राक्षस ताल और मानसरोवर झील के बीच का इलाका था। वे पारखा से होते हुए मानसरोवर झील के किनारे स्थित चियू गोम्पा पहुँचेंगे। तिब्बती ड्राइवर बार-बार उन्हें भरोसा दिला रहा था कि यह एक शानदार जगह होगी और उन्हें बहुत पसंद आएगी। शेरपा लड़के ने उनके लिए अनुवाद करते हुए कहा, “वह कहता है कि यहाँ आप अपने पाप भी धो सकते हैं। सभी भारतीयों को यहाँ तुरंत आशीर्वाद मिलता है। यहाँ गंगा चू नाम की एक छोटी नदी है। यह राक्षस ताल और मानसरोवर झील को जोड़ने वाली नदी है। यह चियू गोम्पा के नीचे स्थित है।”

उन्होंने व्यंग्यात्मक मज़ाक पर विनम्रता से मुस्कुरा दिया, और विजय ने तिब्बती ड्राइवर के कंधे पर हल्के से थपथपाया। ड्राइवर खुश था कि उसने भारत से आए एक और समूह के साथ यह मज़ाक कर दिया था। वह मानसरोवर कोरा शुरू करने आने वाले हर समूह के साथ ऐसा ही करता था। उसने मन ही मन सोचा, ये भारत से आए तीर्थयात्री बहुत आलसी हैं, भला कोई वाहन पर कोरा कैसे करना चाहेगा। इसे तो सम्मानपूर्वक पैदल ही करना चाहिए, वह हर शेरपा लड़के या अन्य ड्राइवरों से यही दोहराता था।

गाड़ियाँ चियू गोम्पा पर रुकीं और तीर्थयात्री चारों ओर घूमने लगे। विजय, हिमांशु और परमिता मठ की छत पर चढ़ गए और चुपचाप खड़े होकर एक तरफ मानसरोवर झील के विशाल विस्तार और दूसरी तरफ बादलों से रहित कैलाश पर्वत की चोटी के बेहद साफ़ नज़ारे को निहारने लगे। परमिता सैकड़ों तस्वीरें खींचती रहीं, जैसा कि उन्होंने खुद कहा। विजय ने उन्हें जल्दी से आगे बढ़ने के लिए कहा, "चलो, चलो, यहाँ इंतज़ार करने की कोई बात नहीं है। हमें नीचे उतरकर समूह से कुछ दूरी पर चलना है। याद रखना, हमें इस गोम्पा के पास स्थित सेरका खिम क्षेत्र में जाना है और प्राचीन सोने की खान से नमूने लेने हैं।"

वे मठ से बाहर भागे। विजय के अन्य समूहों में भी मित्र थे जो तीर्थयात्रा में शामिल थे। वह जानता था कि वे जितनी हो सके उतनी तस्वीरें खींचेंगे, और उससे भी ज़्यादा। वह इस क्षेत्र की तस्वीरें खींचने में अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहता था। उसने हिमांशु और परमिता से मज़ाक में कहा कि शायद यह सबसे दूरस्थ तीर्थयात्रा क्षेत्र है, और शायद यहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर सबसे ज़्यादा तस्वीरें खींची जा सकती हैं। वे मानसरोवर झील के किनारे चले गए, मानो नज़ारे का आनंद ले रहे हों। शेरपा लड़का उनके साथ गया और बताया कि इस क्षेत्र को नगावा नगोपोडुपुक के नाम से भी जाना जाता है। वह इसका कारण नहीं बता सका, लेकिन विजय को इसके बारे में पता था और वह लड़के से इसके बारे में पूछना नहीं चाहता था।

शेरपा लड़का उनसे ऊब गया था और गोम्पा में तीर्थयात्रियों के समूह के पास वापस भाग गया, यह जानते हुए कि शायद उसे किसी ट्रक से अच्छा खाना मिल जाए। विजय सेरका खिम की ओर मुड़ा और वे झील के किनारे से दूर दलदली भूमि में चले गए। यह दलदली भूमि घास के छोटे-छोटे टीलों के मोज़ेक जैसी लग रही थी, जिनके बीच कीचड़, पत्थर और बंजर ज़मीन बिखरी हुई थी। विजय चुपचाप खड़ा रहा, जबकि हिमांशु और परमिता आगे बढ़ गए। विजय झील के किनारे सेरका खिम और चांगजागंग के बीच के क्षेत्र को देख रहा था। कुछ तो गड़बड़ है, वह खुद से कहता रहा। ऐसा नहीं हो सकता।

वह एक युवक था, शायद सोलह या सत्रह वर्ष का, दलदल के ठीक अंत में बैठा हुआ, मानसरोवर झील की ओर देख रहा था। उसे लगा कि अजीब बात यह थी, क्योंकि वह निश्चित नहीं था, कि लड़के ने कोई कपड़े नहीं पहने थे। उसके सिर पर किसी प्रकार की टोपी या हेलमेट था, जो किसी सैनिक के हेलमेट जैसा लग रहा था। उसकी छाती और पीठ पर किसी प्रकार की धातु की कमीज थी। वह पूरी तरह से निश्चित नहीं था, क्योंकि झील के पानी की तेज चमक के कारण लड़के पर रोशनी पड़ रही थी। वह बहुत शांत दिख रहा था। ऐसा लग रहा था कि उसने अपने दाहिने हाथ में कुछ पकड़ रखा है। क्या वह यहाँ ध्यान कर रहा था? अचानक, लड़के के पास एक प्रभामंडल जैसी हल्की रोशनी फैली और फिर गायब हो गई, और लड़का झील के पास उस स्थान पर नहीं बैठा था।

***

दारचेन से शिकुआनहे की दूरी काफी थी। ये दोनों तीर्थयात्री अपने साथियों को कोरा पर छोड़कर वापस क्यों लौटेंगे? भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए ऐसा करना मना था। स्थानीय पुलिस ने उन पर नज़र रखी होगी और तीर्थयात्री गाइडों ने तुरंत स्थानीय सरकारी अधिकारियों या पुलिस को इसकी सूचना दी होगी। लूओ त्सेरिंग ने सोचा कि तिब्बत के कोने-कोने से आने वाले सैकड़ों तीर्थयात्रियों पर किसी की नज़र नहीं रहती, और आमतौर पर किसी को पता भी नहीं चलता। इन दोनों तीर्थयात्रियों पर बारिश के कारण ध्यान गया था।

भाषाओं का यह इतना बड़ा मिश्रण क्या था? भारत चीन जैसा लग रहा था, उसने सोचा। भारत के एक बहुत छोटे से क्षेत्र के ये लोग कई अलग-अलग भाषाएँ बोलते थे। यह उनके लिए काफी महत्वपूर्ण बात होगी कि वे उन दो तीर्थयात्रियों को लेकर परेशान थे, जबकि वे बाकी सभी तिब्बतियों जैसे दिखते थे। अब जब उन्होंने उन्हें अलग-अलग पहचान लिया, तो लूओ देख सका कि वे तिब्बती नहीं थे। वे गोरे थे, लंबे थे और उनके कपड़े बहुत साफ थे। जैसा कि महाराज ने बताया, "उन कपड़ों को जानबूझकर गंदा दिखाया गया है।"

“अपने घर नवसारी में, हमें पारसियों के मंदिरों में प्रार्थना के दौरान पुजारियों से बात करने का बहुत कम मौका मिलता है। हम उनसे तभी मिलते हैं जब वे हमारे पड़ोस के पोल में, चंदन और अन्य तेल व पूजा-पाठ की सामग्री बेचने वाली दुकान पर बैठे होते हैं,” गुजरात से आए तीर्थयात्रियों के आध्यात्मिक मार्गदर्शक, तीर्थयात्री गाइड ने कहा। “ये तीर्थयात्री उस कठिन बोली को बड़ी सहजता से बोलते हैं। वे भारत के नहीं लगते।”

महाराज ने मामले को अपने हाथ में लेने का फैसला किया और दोनों तीर्थयात्रियों के पास जाकर अपनी टूटी-फूटी तिब्बती-चीनी भाषा में कहा, “नमस्कार, मेरे भाइयों। क्या आपने नाश्ता किया? मैंने देखा कि आपने नाश्ता नहीं किया। रात बहुत खराब थी, और ऐसा लग रहा है कि कुछ ही पलों में फिर से बारिश हो जाएगी। आप शायद आगे यात्रा न कर पाएं। कुछ खाना खा लीजिए, आप जैसे तीर्थयात्रियों के लिए विशेष भोजन, जो देखने में भारत से इतनी दूर यात्रा करके आए लगते हैं।”

महाराज को अपने पास आते देख दोनों तीर्थयात्री चौंककर ऊपर देखने लगे। वे उनकी बात समझ गए थे, क्योंकि उन्होंने सहमति में सिर हिलाया। वे कुछ बोले नहीं, बल्कि गर्म चूल्हे के पास गए और गरमा गरम नाश्ता लेकर चुपचाप बैठ गए और खाने लगे। उन्होंने भोजन वैसे नहीं खाया जैसे गुजरात के नवसारी क्षेत्र का कोई भारतीय खाता है। इन दोनों तीर्थयात्रियों ने हाथ नहीं धोए थे और दोनों हाथों की उंगलियों से खाना कुरेदने लगे थे। महाराज ने सोचा कि कोई भी श्रद्धालु भारतीय, विशेषकर गुजरात का, बाएं हाथ का इस्तेमाल नहीं करेगा, जब तक कि वह बाएं हाथ से लिखने वाला न हो। उन्होंने जैन भिक्षु और तीर्थयात्री मार्गदर्शक से हिंदी में कहा, ये दोनों तो निश्चित रूप से भारत के नहीं हैं।

महाराज और लूओ उन दो रहस्यमय तीर्थयात्रियों के सामने बैठ गए और उन्हें देखने लगे। लूओ ने उनसे तिब्बती भाषा में कहा, “भाइयों, हम जिज्ञासावश नहीं, बल्कि चिंतावश पूछ रहे हैं। आजकल तिब्बत में काफी अशांति है और पुलिसवाले बाद में आकर मुझसे बात करेंगे और हो सकता है कि आने वाले कुछ दिनों तक मुझे यहाँ अपना व्यवसाय चलाने की अनुमति न दें। मुझे आपसे पूछना ज़रूरी है, क्योंकि भारत से आए इन तीर्थयात्रियों को लगता है कि आप अपने समूह के बाकी सदस्यों के बिना ही दारचेन से शिकुआनहे लौट आए हैं।”

दोनों तीर्थयात्री खाना छोड़कर चुपचाप बैठ गए। उन्होंने एक-दूसरे की ओर नहीं देखा। महाराज ने उनकी थालियों में रखे भोजन की ओर इशारा करते हुए कहा कि वे खाना जारी रख सकते हैं। चुपचाप उन्होंने उनकी थालियों में थोड़ा और भोजन डाल दिया, कहीं ऐसा न हो कि वे यह समझ लें कि प्रश्नों का उत्तर दिए बिना उन्हें खाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। महाराज ने सोचा, ऐसा नहीं चलेगा, क्योंकि वे कभी भी किसी को अपने द्वारा परोसे गए भोजन से दूर नहीं कर सकते। उन्होंने फिर से खाना शुरू किया, इस बार धीरे-धीरे।

लू धैर्यपूर्वक बैठा रहा। प्रतीक्षा करता रहा। महाराज पास ही बैठे थे। तीर्थयात्री मार्गदर्शक और जैन भिक्षु कुछ दूरी पर अन्य तीर्थयात्रियों के साथ बैठे थे। दोनों रहस्यमय तीर्थयात्री धीरे-धीरे भोजन कर रहे थे। एक बार, उनमें से एक ने महाराज की ओर विनती भरी दृष्टि से देखा, जिन्होंने तुरंत उन्हें एक और पूरा भोजन परोसा। लू ने फिर पूछा, “भाइयों, कृपया मेरी बात समझें। आप तिब्बती नहीं लगते। भारत से आए भिक्षु, जो अन्य तीर्थयात्रियों के साथ वहाँ बैठे हैं, ने हमें बताया कि आपको दारचेन में बारह अन्य तीर्थयात्रियों के साथ देखा गया था। और आप एक बहुत ही विचित्र भाषा बोलते हैं।”

दोनों में से बड़े ने धाराप्रवाह तिब्बती भाषा में कहा, “मेरे मित्र, आपके आतिथ्य सत्कार के लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं। हमें पता नहीं था कि आप चिंतित हैं और कल दार्चेन में तीर्थयात्री भाइयों ने हमें देखा था। हम उस तीर्थयात्री समूह के साथ आए एक ट्रक में लिफ्ट लेकर आए थे, और तिब्बती चालक ने हमें दार्चेन में अनुमानित बारिश से बचा लिया। मैं आपका और आपके भारतीय रसोइए का धन्यवाद करता हूँ। खाना बहुत स्वादिष्ट था। हमने पहले कभी ऐसा खाना नहीं खाया था।”

“क्या तुमने ये सब कभी नहीं खाया?” महाराज ने पूछा। “लेकिन समूह में मौजूद जैन भिक्षु ने कहा कि उन्हें पूरा यकीन है कि तुम पारसी बोलते हो। असल में उन्होंने कहा कि तुम पुरानी पारसी बोलते हो। तिब्बत में यह

भाषा कौन बोलता है? कोई नहीं। और अब तुम कहते हो कि तुमने कभी भारतीय खाना नहीं खाया? और तुम तो बहुत अच्छी तिब्बती बोलते हो। उन्होंने यह भी कहा कि तुम दारचेन इलाके से अपने समूह के बाकी लोगों के बिना ही चले गए, जो कोरा में घूम रहे थे। उन्होंने देखा कि तुम पहले तारबोचे तक पैदल गए थे।"

बुजुर्ग तीर्थयात्री ने उत्तर दिया, "मेरे मित्र, हमसे डरने की कोई बात नहीं है। हम भी बाकी लोगों जैसे ही हैं। मुझे तो बस इस बात पर आश्चर्य है कि भारत से आए तीर्थयात्री भाई ने हमारी प्राचीन भाषा पहचान ली। हम तिब्बती भाषा धाराप्रवाह बोलते हैं, लेकिन साथ ही अपनी प्राचीन भाषा भी बोलते हैं। हमें खुशी है कि हमारे कुछ भाई भारत में हैं। हमें यह पता नहीं था। हम दारचेन से इसलिए लौटे क्योंकि हमें अपने स्थान पर लौटना था। हमारा समूह बाद में लौटेगा।"

"हम अब तिब्बती हैं। हम तिब्बत में रहते हैं," उन्होंने आगे कहा। "हम तीर्थयात्रा पर आए हैं। हमारा समूह कोरा पूरा करके बाद में लौट जाएगा। हमने पहले भी कोरा किया है। मैंने दो बार किया है। मेरे भाई, जो मेरे साथ यहाँ बैठे हैं, उन्होंने एक बार किया है। हम अपने समूह को कोरा के लिए लाने आए हैं। हमारे बारे में कुछ भी गलत नहीं है और हमारे कार्यों में कुछ भी संदिग्ध नहीं है। हमारे लिए, कांग रेनपोचे पर्वत सबसे पवित्र है। आप सभी के लिए जितना पवित्र है, उससे कहीं अधिक पवित्र।"

जैन भिक्षु और तीर्थयात्री मार्गदर्शक पास आकर बैठ गए और सुनने लगे। महाराज ने उनकी सुविधा के लिए बातचीत का अनुवाद किया और उन्हें समझाया कि क्या कहा जा रहा था। जैन भिक्षु मुस्कुराए और बोले, "अरे, यह सही नहीं है। मैं जैन हूँ, और हमारे लिए यह अष्टपद पर्वत का स्थान है। इस पर्वत की कथा सबसे पुरानी है, शिव और बौद्ध धर्म की अन्य कथाओं से भी पुरानी। फिर भी, यहाँ सभी धर्म शांति से सह-अस्तित्व में हैं। हम सभी धर्मों में, यह पर्वत और यह क्षेत्र सबसे पवित्र है। आप कैसे कह सकते हैं कि यह अधिक पवित्र है?"

बुजुर्ग तीर्थयात्री मुस्कुराए और बोले, "हे गुरु, आपको शांति मिले। हम आपको और अष्टपदा पर्वत की कथा को प्रणाम करते हैं। हम सभी धर्मों से शांति में हैं। हम एक बहुत प्राचीन धर्म और बहुत प्राचीन जनमानस से हैं। आप हमारे धर्म और हमारी जीवनशैली को नहीं समझ पाएंगे। हम नगारी कस्बे के पश्चिम में स्थित उन गांवों से आए हैं, जो पहाड़ों की गहराई में बसे हैं, जहां आज तक न तो पर्यटक, न वैज्ञानिक, न सरकार और न ही सेना पहुंची है। हम वहां शांति से रहते हैं। लेकिन हमारे लिए, यह क्षेत्र हमारे सबसे प्राचीन देवताओं का निवास स्थान है। पहाड़ हमारे देवताओं का घर हैं और हम उनसे मिलने आते हैं।"

महाराज द्वारा दी गई मसालेदार मीठी चाय के गर्म प्याले दोनों तीर्थयात्रियों ने ग्रहण कर लिए। बड़े तीर्थयात्री ने आगे कहा, "हमें इस बात की अधिक जिज्ञासा है कि हमारी प्राचीन भाषा आज भी दुनिया के अन्य हिस्सों में बोली जाती है। हम पश्चिम की एक प्राचीन आध्यात्मिक भूमि से तिब्बत आए हैं और एकांत में रहते हैं। हम अपने रीति-रिवाजों का पालन करते हैं और अपनी छोटी सी दुनिया में रहते हैं। हर तीन साल में, हममें से कुछ, हमारे पुजारी और भिक्षुओं को इस पवित्र भूमि की यात्रा के लिए चुना जाता है। हम इस स्थान पर जाते हैं

और लौट आते हैं। बस इतना ही। हम यहां के सभी तीर्थयात्रियों की तरह हैं। हमने पहले कोरा किया है और हम लौट रहे हैं।"
जैन भिक्षु ने कहा, "नगारी और तिब्बत के पश्चिम में स्थित एक भूमि? और आप प्राचीन फारसी भाषा बोलते हैं। आप भी अन्य पारसियों की तरह ईरान से आए होंगे। क्या आप भी पारसी हैं? आप तो तिब्बतियों से कहीं अधिक सुंदर हैं। यह तो अत्यंत आश्चर्यजनक है। मुझे नवसारी में अपने मित्रों को इसके बारे में बताना चाहिए। वे बहुत प्रसन्न होंगे। लेकिन मुझे यह समझ नहीं आया कि ये पर्वत आपके लिए दूसरों की तुलना में अधिक पवित्र हैं।" वृद्ध तीर्थयात्री ने उत्तर दिया, "गुरुजी, यहाँ आपके ज्ञान और आपके द्वारा सुनी गई बातों से कहीं अधिक रहस्य छिपे हैं। इस क्षेत्र में पर्वतों से संबंधित कहानियों और मिथकों से कहीं अधिक रहस्य हैं। आप केवल पवित्र आत्माओं, देवताओं और राक्षसों के बारे में जानते हैं। हमारे लिए, ये पर्वत, लोग, जानवर और जल कहानियों से कहीं अधिक रहस्य समेटे हुए हैं।"

***

शाम की धुंधली परछाइयों का कांग रेनपोचे पर्वत की चोटियों पर चढ़ना उसे स्तब्ध कर रहा था। पिछले महीनों की तुलना में आज अंधेरा बहुत जल्दी छा गया था। दिरापुक गोम्पा में मौजूद युवा भिक्षु ने सोचा कि यह क्षेत्र में बचे हुए तूफानी बादलों के कारण ही होगा। बारिश के बाद का दिन अजीब था। वह येशे के माता-पिता द्वारा चलाए जा रहे भोजनालय से लौटा था और उस समूह के बारे में सोच रहा था जो उस रहस्यमयी घाटी में गया था जो एक बेयुल, एक पवित्र और गुप्त क्षेत्र हो सकता था।
वह घटनाक्रम पर आश्चर्यचकित था। अन्य भिक्षुओं ने घटनाक्रम पर चर्चा की थी और उसके पास बैठे थे। वे मठ की खिड़कियों से बाहर पहाड़ों को देख रहे थे। युवा भिक्षु ने उन्हें चोकु के भाई तामेंग के उत्साह, बूढ़े दावा की ऊर्जा, नोर्बू और येशे के युवा साहस और किन्हाई के महान घुड़सवार सांग्ये की वफादारी के बारे में बताया। ये कोरा के विभिन्न लोग थे, साथ ही येशे के माता-पिता, याक चराने वाले लड़के, घोड़े चराने वाले लड़के, विभिन्न भोजनालयों में काम करने वाली महिलाएँ और दारचेन, शिकुआनहे और अन्य स्थानों से आए लड़के, जो हर साल यहाँ विभिन्न देशों से आने वाले तीर्थयात्रियों की सहायता के लिए आते थे।
क्या कैलाश कोरा, कांग रेनपोचे की पर्वत चोटियों और मानसरोवर और राक्षस झीलों तक फैले इस क्षेत्र में मौजूद आयामों की अद्भुत विविधता के कई रहस्यों और जादुई कहानियों के बारे में वास्तव में कोई जानता था? दिरापुक के वरिष्ठ भिक्षु पास ही स्थित, लेकिन पूरी तरह से अज्ञात इस रहस्यमयी घाटी के स्थान और खोज को लेकर चिंतित थे। क्या यह कोई बेयुल घाटी हो सकती है? विशाल जंगली याकों के झुंड के बारे में क्या सोचना चाहिए?
युवा भिक्षुओं में से एक ने नेपाल में काम किया था और विज्ञान, विशेष रूप से जीव विज्ञान की कई पुस्तकें पढ़ी थीं, इससे पहले कि उन्हें यह एहसास हुआ कि शुद्ध ज्ञान की खोज अधिक संतोषजनक और सर्वोच्च है।

उन्होंने नेपाल में विज्ञान के क्षेत्र में अपना अच्छा करियर छोड़ दिया था और दिरापुक के वरिष्ठ गुरुओं और उनके नेपाल स्थित द्रुकपा केंद्र में उनका स्वागत किया गया था। भूटान में पाँच वर्ष बिताने के बाद वे दिरापुक आए थे। वैज्ञानिक से भिक्षु बने इस भिक्षु ने संक्षेप में कहा, "गुरुओं और भाइयों, विशाल जंगली याकों के झुंड में कुछ भी असामान्य नहीं है। यह संभव है कि जंगली याकों का एक पूरा समूह सदियों से इन ऊँची घाटियों में फंसा रहा हो। वे निश्चित रूप से अन्य जंगली याकों से बहुत अलग हो गए होंगे।"

वरिष्ठ भिक्षु ने पूछा, "युवक, क्या यह सचमुच संभव है? कि अलग-थलग पड़े पशु समूह, दूसरे पशु समूहों से न मिल पाने पर, भिन्न हो जाएँ? यह कैसे संभव है? क्या मनुष्यों के साथ भी ऐसा होता है? यह तो वाकई विचित्र है। अस्तित्व के नियम जादुई हैं। अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है। क्या यह सच हो सकता है? क्या इतने रहस्यमय प्रश्न का इतना सरल उत्तर संभव है?"

युवा भिक्षु, जिसने भाई तामेंग से जंगली याक, भेड़ियों और बारह तीर्थयात्रियों को देखे जाने के बारे में चर्चा की थी, ने कहा, "ऐसा हो सकता है। जंगली याक दूसरे जंगली याकों से अलग हो गए होंगे। लेकिन वे बारिश के दौरान क्यों चल रहे थे? क्या ऐसे समूह के लिए अपने क्षेत्र में छिपना अधिक समझदारी भरा नहीं होता? और भाई तामेंग ने कहा कि यह बिल्कुल स्पष्ट था कि विशाल जंगली याकों का पूरा झुंड नर था, बहुत बड़ा था और लगभग एक ही आकार का था। हमने जंगली याकों का ऐसा झुंड पहले कभी नहीं देखा जिसमें सभी नर हों और आकार में बराबर हों? यह बहुत ही अजीब है।"

"और, यह भी एक रहस्य है कि विशाल जंगली याकों का झुंड बारिश में भीगते हुए बारह तीर्थयात्रियों के सामने आकर रुक गया। उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्या भाई तामेंग ने सचमुच वही देखा जो उन्होंने देखा? पहले तो मुझे लगा कि शायद उन्हें भ्रम हो गया हो। लेकिन उनके साथ बूढ़ा दावा था। वह इस क्षेत्र को जानता है, तीर्थयात्रियों को जानता है और पहाड़ों के जंगली जानवरों को भी जानता है। वह ऐसी गलती नहीं कर सकता," युवा भिक्षु ने कहा, "और भेड़ियों का क्या? वे विशाल जंगली याकों के झुंड के साथ क्यों चल रहे थे या उनके पास क्यों खड़े थे? वे दूर से उनका पीछा कर रहे थे और एक समय में केवल एक या दो ही होते थे। भाई तामेंग ने कहा कि उन्होंने लगभग उतने ही भेड़िये देखे जितने विशाल जंगली याक थे। और तीर्थयात्रियों का समूह जंगली याकों और भेड़ियों से क्यों नहीं डरा?"

वहाँ मौजूद भिक्षुओं ने सहमति में सिर हिलाया। उन्होंने पहाड़ों से जुड़ी अजीबोगरीब कहानियाँ तो सुनी थीं, लेकिन इतनी रहस्यमयी कहानी पहले कभी नहीं सुनी थी। वरिष्ठ भिक्षु ने सोचा, यह कोई कहानी नहीं थी। यह सचमुच घटित हुई थी, और वह भी पिछले चौबीस घंटों के भीतर। वे चुपचाप घटनाओं के बारे में सोचते रहे, पहाड़ों की चोटियों की बदलती छायाओं को देखते रहे। कभी ऐसा लगता था मानो कोई विशाल बंदर चाँद को पकड़ने वाला हो, तो कभी ऐसा लगता था मानो किसी अजगर को पहाड़ों ने एक ही झटके में निगल लिया हो। पहाड़ों पर छायाएँ हर आकार में फैल रही थीं।

उन्होंने एक निर्णय लिया और कहा, "भाइयों, हमने अपने भाई की कही बातें सुन ली हैं। मैं भाई तामेंग और गुरु रिनचेन को जानता हूँ। वे पागल नहीं हैं और न ही वे ऐसे लोग हैं जिनका मन अचानक पहाड़ों की इतनी

लंबी यात्रा पर निकल पड़ता है। ऐसे लोग भी हैं जिनका मन चार-पाँच शताब्दियों से भी अधिक पीछे चला गया है, और ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं कि जब वे कोरा पर ध्यान करते हैं, तो उन्हें ऐसा महसूस होता है कि पाँच-छह आत्माएँ भी उनके साथ प्रार्थना में बैठी हैं और एक-दूसरे को शक्ति प्रदान कर रही हैं।"

"हम आज रात घाटी पर नज़र रखेंगे। मैं चाहता हूँ कि दो भाई घाटी में अलग-अलग जगहों पर तैनात हो जाएँ। कुछ अच्छे तीर्थयात्री गाइड या शेरपाओं को साथ ले लें ताकि वे रात भर निडर होकर पहरा दे सकें। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि कुछ भी हो सकता है। अपनी प्रार्थना की माला ले लें और अगर चाहें तो ढोल भी। जो तंबू पहले से लगे हैं, उन्हीं का इस्तेमाल करें। कोई दूसरा तंबू न बनाएँ और न ही उधार लें। सोएँ नहीं। बस घाटी पर नज़र रखें। इससे हमें बहुत मदद मिलेगी और हम यह तय कर पाएँगे कि कल आधी रात को जो हुआ था, क्या वह आज रात भी दोहराया जाएगा।"

"मैं बेयुल घाटी पर ध्यान केंद्रित करूँगा। इसका ज़िक्र कहीं न कहीं तो होना ही चाहिए। इतनी नज़दीक होकर भी यह मिथकों या धर्म में अनछुआ कैसे रह सकता है? यह घाटी इतने सदियों तक कैसे छिपी रही, खासकर तब जब घाटी का मुहाना नगारी प्रांत के सबसे घनी आबादी वाले इलाके में खुलता है? क्या आप जानते हैं कि भारत या नेपाल में ऐसे छोटे शहर हैं जिनकी आबादी पूरे नगारी प्रांत से ज़्यादा है? और फिर भी, यह घाटी सबसे घनी आबादी वाली है। तूफ़ानी रात में विशाल जंगली याकों का झुंड एक साथ इस घाटी से नीचे क्यों आया?"

युवा भिक्षु ने उत्तर दिया, "गुरुजी, जैसा कि चोकु के भाई तामेंग ने बताया, गुरु रिनचेन ने एक बात पर ध्यान दिया था। वह यह थी कि पत्थरों के घेरे में बैठे बारह तीर्थयात्री भयभीत नहीं हुए। ऐसा लग रहा था मानो वे उस स्थान पर जंगली याकों के आने की उम्मीद कर रहे थे। क्या यह अजीब है? हमारे यहाँ तो इतने सारे पालतू याक कोरा से सामान और वस्तुएँ ले जाते हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि तीर्थयात्रियों ने सोचा हो कि झुंड में बड़े पालतू याक हैं? अँधेरा था और तेज़ बारिश हो रही थी। क्या वे गलत हो सकते थे?"

वरिष्ठ भिक्षु ने टिप्पणी की, "मैं सहमत हूँ। अगर ऐसा था, तो हमने उन्हें दिन के उजाले में क्यों नहीं देखा? वे बारह तीर्थयात्री कहाँ गए? क्या उन्होंने मूर्खतापूर्ण ढंग से भीतरी कोरा पर चढ़ने का प्रयास किया या कांग रेनपोचे पर्वत पर चढ़ने की कोशिश की? नहीं। इसका इतना सरल स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। यदि कोई अज्ञात शिखर पर चढ़ने का प्रयास करेगा, तो वह दिन के उजाले में ही करेगा। वे रात में, बारिश के दौरान ऐसा क्यों करेंगे?"

घाटी में रात बिताने के लिए चुने गए दो भिक्षुओं ने वरिष्ठ भिक्षु से मठ परिसर छोड़कर रात भर बाहर रहने की अनुमति मांगी। युवा भिक्षु, जिसने भाई तामेंग से मित्रता की थी, मठ की खिड़कियों तक गया और कांग रेनपोचे पर्वत शिखर को देखने लगा। वहाँ क्या था? लोगों को पर्वत पर चढ़ने की अनुमति क्यों नहीं थी? क्या ऐसा हो सकता है कि बारह तीर्थयात्री कोरा के लिए यहाँ आए थे और कहीं तूफानी रात का इंतजार कर रहे थे? वे ऐसा क्यों करेंगे? क्या इन तीर्थयात्रियों ने मूर्खतापूर्ण ढंग से पर्वत पर चढ़ने का प्रयास किया है?

युवा भिक्षु अपने विचारों में खोया रहा। वे बारह तीर्थयात्री जानते थे कि उन्होंने पत्थरों के घेरे में बैठकर समय क्यों व्यतीत किया। वे जानते थे कि उन्हें बारिश में भीगना पड़ेगा। जंगली याक उन्हें डरा नहीं रहे थे। क्या कांग रेनपोचे पर्वत की ढलानों पर कुछ रहस्यमय था? क्या जंगली याक, भेड़िये और तीर्थयात्री पर्वत पर चढ़कर गायब हो गए? या वे मानसरोवर झील की ओर नीचे उतर गए और दारचेन और अन्य झीलों पर पर्यटकों और तीर्थयात्रियों से दूर चले गए? कहा जाता है कि पर्वत अपने रहस्यों को बड़ी कुशलता से छिपाकर रखते हैं। यदि आप उन्हें जानना चाहते हैं, तो आपको उनसे विनम्रतापूर्वक या प्रार्थना के माध्यम से पूछना होगा।